नेतरहाट आवासीय विद्यालय

सर्जना

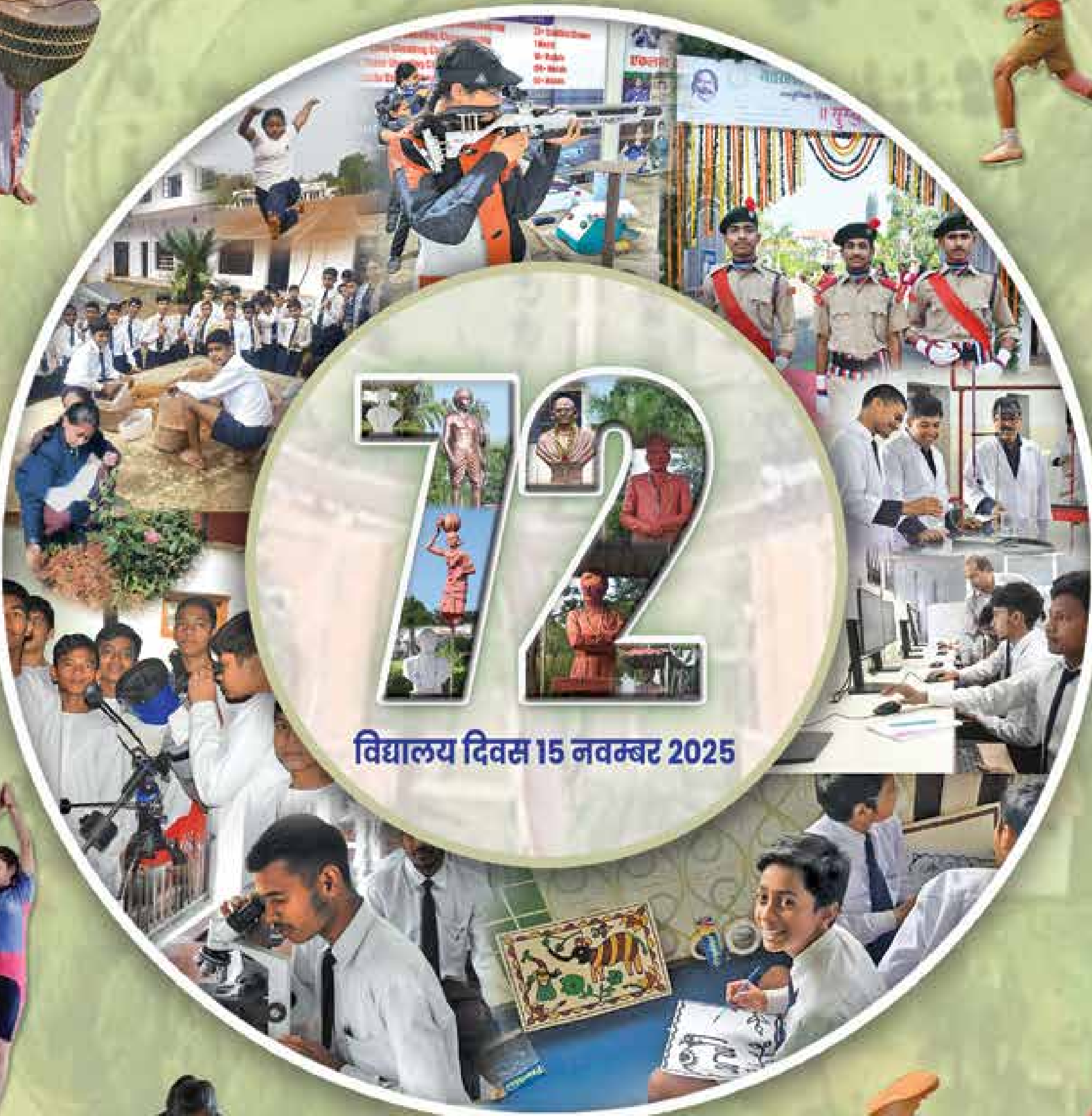

अत्तदीपा विहरथ

विद्यालय गान

वन्दे! वन्दे हे सुन्दर मम सखा नेतरहाट सदा,
वन्दे हे सुन्दर मम सखा नेतरहाट।
धन्य महाप्रांगण यह विंध्य प्रकृति क्रीड़ा का;
वन मे वन पशुओं का विचरण स्वच्छन्द यहाँ,
विहगों से कंठ मिला गाते नवगान सदा,
वन्दे! वन्दे हे सुन्दर मम सखा नेतरहाट सदा।

उषा के साथ जगें, प्रतिदिन मंगलमय होः
कार्य पूर्ण प्रतिपल हो, ज्ञान वृद्धि जन हित हो,
अंतरतर का मधुमय गायें संगीत सदा
वन्दे! वन्दे हे सुन्दर मम सखा नेतरहाट सदा।

तन मन जन प्राण मिला, नवयुग से नवगति ले,
संग पवन मेघ गगन, संग सूर्य चाँद संगः
तारे ग्रह चरण मिला, चलते नवचाल सदा,
वन्दे! वन्दे हे सुन्दर मम सखा नेतरहाट सदा।

साधक हैं समता के, सत्य न्याय करुणा के,
हिन्द प्रेम सम्बल है, विश्व प्रेम साध्य बना,
जन-जन मे ज्योति जगे, सत चित् आनन्द सदा,
वन्दे ! वन्दे हे सुन्दर मम सखा नेतरहाट सदा।

पायें वरदान कि हों अंकुर तरु में परिणत,
रस ले फल-फूलों से, स्वस्थ बने मानवता, '
शिव' हो कल्याण सखा, गूंजे जयकार सदा,
वन्दे ! वन्दे हे सुन्दर मम सखा नेतरहाट सदा।
वन्दे हे सुन्दर मम सखा नेतरहाट।

-स्व. महेश नारायण सक्सेना

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री संतोष कुमार

प्रधान संपादक

डॉ निशी हेमरोम

सह संपादक

डॉ सेवंती तिर्की

सर्जना सज्जा मण्डल

सुश्री प्रीति सिंह एवं सुश्री कुमारी स्मिता खाखा

शिक्षक संपादक मण्डल

श्री रवि प्रसाद, श्री केशव कुणाल शर्मा, श्री अनंत कुमार मिश्रा

छात्र संपादक मण्डल

अभिषेक कुमार (20006), देवांशु पांडे (22082), शिवम कुमार मंडल (22007), अनिकेत कुमार (22028), मनजीत कुमार (20076), भास्कर (22009), अभिषेक कुमार (22008), निखिल भगत (22053), अंकित कुमार (22022), शशिकांत कुमार (22020), भारत कुमार मेहता (22024)

जोहार

संतोष कुमार गंगवार
राज्यपाल, झारखण्ड

राज भवन, राँची-834001
झारखण्ड
दूरभाष: 0651-2283465

सत्यमेव जयते

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि 1954 में प्रकृति की गोद में स्थापित नेतरहाट आवासीय विद्यालय, नेतरहाट 15 नवम्बर 2025 को अपना 72वाँ स्थापना दिवस मना रहा है। यह संस्थान न केवल उत्कृष्ट शिक्षा का केंद्र रहा है, बल्कि अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए भी निरंतर समर्पित रहा है।

नेतरहाट आवासीय विद्यालय ने अपनी स्थापना के बाद से ही अनुशासन, श्रमशीलता और सहयोग जैसे मूल्यों को अपने विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण का आधार बनाया है। यहाँ के पूर्ववर्ती छात्रों ने प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा, न्यायपालिका, चिकित्सा, अभियंत्रण, विज्ञान, साहित्य जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा और निष्ठा से राष्ट्र का गौरव बढ़ाया है।

विद्यालय से अपेक्षा है कि शिक्षा के क्षेत्र में अपनी गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए वह पुनः उसी उत्कृष्टता और अनुशासन की भावना को सुदृढ़ करे, जिसके कारण यह देशभर में आदर्श शिक्षण संस्थान के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। बेहतर संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद छात्रों का दसवीं में अनुतीर्ण होना अत्यन्त गंभीर एवं आत्मचिंतन का विषय है। मुझे विश्वास है कि विद्यालय के गुरुजन और छात्रगण उत्कृष्टता की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहेंगे तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रनिर्माण में अपनी सार्थक भूमिका निभाएँगे।

आशा है कि विद्यालय-पत्रिका 'सर्जना' का यह विशेषांक विद्यार्थियों की रचनात्मकता, उपलब्धियों और विद्यालय की प्रेरक यात्रा का सजीव प्रतिबिंब प्रस्तुत करेगा तथा विद्यालय की निरंतर प्रगति से अवगत कराएगा।

मैं नेतरहाट आवासीय विद्यालय, नेतरहाट के समस्त शिक्षकों, छात्रों, पूर्व छात्रों तथा अभिभावकों को स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और इस संस्थान की निरंतर उन्नति की कामना करता हूँ।

(संतोष कुमार गंगवार)

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
Minister of Education
Government of India

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि **नेतरहाट आवासीय विद्यालय, नेतरहाट, झारखंड** अपना 72वाँ स्थापना दिवस मनाने जा रहा है और इस ऐतिहासिक अवसर पर विद्यालय पत्रिका 'सर्जना' का विशेषांक भी प्रकाशित किया जा रहा है।

नेतरहाट आवासीय विद्यालय ने अपने स्थापना काल से अनुशासन, समर्पण, नैतिकता और उत्कृष्ट शिक्षण पद्धति के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में एक विशिष्ट मानक स्थापित किया और राष्ट्र को अनेक प्रतिभाशाली, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक प्रदान किए हैं। यह केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता का ही नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों, चरित्र-निर्माण और संस्कारों का भी केंद्र रहा है। मुझे विश्वास है कि विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा, विचारों और अभिव्यक्ति का जीवंत मंच विद्यालय पत्रिका 'सर्जना' का यह विशेषांक निश्चय ही शिक्षा, संस्कृति और मूल्याधारित जीवन की दिशा में प्रेरणास्रोत सिद्ध होगा।

मैं इस अवसर पर विद्यालय परिवार के सभी पूर्व व वर्तमान विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों को संस्थान की 72 साल की गौरवशाली यात्रा के दौरान इसकी विरासत के उन्नयन में उनके बहुमूल्य योगदान के लिए बधाई देता हूँ और 'सर्जना' के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

MOE-Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone: 91-11-23782387, Fax: 91-11-23382365
E-mail: minister.sm@gov.in

श्री हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि नेतरहाट आवासीय विद्यालय अपने 72वें स्थापना दिवस पर अपनी वार्षिक पत्रिका "सर्जना" का विशेष अंक प्रकाशित कर रहा है।

शैक्षिक जगत् में सुन्दर संकल्प संपृक्त स्थापत्य का मूर्तिमन्त विग्रह नेतरहाट आवासीय विद्यालय, अपनी अनन्त उपलब्धियों के कारण एक स्थापित पहचान है। जिन उद्देश्यों को केन्द्र में रखकर इस प्रयोग को प्राणवंत किया गया था, उसके प्रमाण आज सर्वत्र सार्वजनिक दायित्वों के निर्वहन में तल्लीन इस विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र हैं। प्रयोगधर्मा शिक्षाविदों की अक्लान्तधर्मिणी मेधा एवं नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा के प्रतिदर्श के रूप में ऐसे शैक्षिक संस्थान निश्चय ही "शिक्षा का सार्वभौमिक उद्देश्य संवेदनशील मानव का सृजन एवं सामाजिक सरोकारों की पहचान तथा उसका क्रियान्वयन" अन्य के लिए अनुकरणीय है।

बालमन के अन्तर में निहित कल्पनाशील सृजन को नवीन आयाम प्रदान करने हेतु "सर्जना" अध्ययनरत छात्रों की अनुसंधित्सा को उभारने में उपयोगिनी सिद्ध होगी। झारखण्ड के मुख्यमंत्री के रूप में मेरा यह निरंतर प्रयास है कि झारखण्ड राज्य के अन्य विद्यालय भी ऐसे सृजनधर्मी प्रयास का अनुकरण करेंगे।

मैं अपनी ओर से विद्यालय के प्राचार्य, समिति के सभापति, समिति के सदस्यगण, शिक्षकगण, प्रशासनिक पदाधिकारी, कर्मचारीगण एवं समस्त छात्रों को अपनी असीम शुभकामनाएँ -देता हूँ।

जोहार !

(हेमन्त सोरेन)

कांके रोड, रांची 834008 (झारखंड)
दूरभाष : 0651-2280886, 2280996, 2400233 फैक्स: 2280717, 2400232
ई-मेल: chiefminister.jharkhand19@gmail.com

रबीन्द्र नाथ महतो
अध्यक्ष
झारखण्ड विधान सभा
राँची

सत्यमेव जयते

RABINDRA NATH MAHATO
SPEAKER
JHARKHAND LEGISLATIVE ASSEMBLY
RANCHI

संदेश

"गुरू नित्यम् अधीयीत शिष्याच्चैव विनीततः ।"

अर्थात- गुरू को सदा अध्ययनशील रहना चाहिए और शिष्य को विनम्रता के साथ गुरू से ज्ञान ग्रहण करना चाहिए।

प्रकृति की गोद में अवस्थित नेतरहाट आवासीय विद्यालय न केवल झारखण्ड की अस्मिता का प्रतीक है, बल्कि यह गुरू-शिष्य परंपरा की उस महान भारतीय विरासत को साकार करता है, जिसने ज्ञान, अनुशासन और चरित्र के समन्वय से असंख्य मेधावी मस्तिष्कों को राष्ट्र निर्माण की दिशा दी है।

1954 में अपनी स्थापना के पश्चात से यह विद्यालय सतत उत्कृष्टता का पर्याय रहा है। यहाँ के विद्यार्थियों ने शिक्षा, सादगी और सेवा के संस्कारों के माध्यम से समाज में विशिष्ट पहचान बनाई है। "सर्जना" पत्रिका विद्यालय की इस परंपरा का सजीव दस्तावेज है, जो शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ-साथ रचनात्मक चेतना और संस्कारों का भी संवाहक है।

मैं इस अवसर पर समस्त गुरुजनों, विद्यार्थियों और पूर्व छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि नेतरहाट विद्यालय ज्ञान, संस्कृति और चरित्र निर्माण के क्षेत्र में सदा अग्रणी बना रहे।

(रबीन्द्र नाथ महतो)

अध्यक्षीय कार्यालय दूरभाष 0651-2440400, फैक्स: 0651-2441712, मोबाईल 9431370329, 8002513007
आवासीय कार्यालय दूरभाष 0651-2281884, फैक्स: 0651-2284046
email: speaker.jla@gov.in

राधाकृष्ण किशोर
मंत्री
वित्त, योजना एवं विकास,
वाणिज्य-कर तथा संसदीय कार्य विभाग
झारखण्ड सरकार

मोबाइल नं० : +91 9431135292
ई-मेल : jh.financeminister@gmail.com

शुभकामना-संदेश

बिरसा की तपोभूमि झारखण्ड के नेतरहाट, जंगलों, पहाड़ों, झरनों और हरी-भरी वादियां, प्रकृति का अनुपम उपहार है। बिहार राज्य में एक गौरवशाली शिक्षण संस्थान की स्थापना हो, इसी उद्देश्य के साथ प्रकृति की गोद में 15 नवंबर 1954 को बिहार सरकार द्वारा नेतरहाट आवासीय विद्यालय की स्थापना की गई।

गौर करने योग्य बात यह है कि आजादी के 40 वर्षों के बाद 80-90 के दशक में देश भर में राजनैतिक स्तर पर "सामाजिक न्याय व्यवस्था" की आवाज उठाई जाने लगी। जबकि बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री "श्रीबाबू" के द्वारा नेतरहाट आवासीय विद्यालय के रूप में 15 नवंबर 1954 को ही "सामाजिक न्याय व्यवस्था" की बीज बिहार में रोपी गई थी। नेतरहाट आवासीय विद्यालय में जाति और धर्म से दूर गरीब तबके के मेधावी छात्रों को भी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। नेतरहाट आवासीय विद्यालय में सभी छात्रों को समान भोजन, समान पोशाक और समान रहन-सहन की व्यवस्था आज भी है। वहां के विद्यार्थियों में कोई भेदभाव नहीं रहता है, यहां तक कि चक्रवार किसी न किसी छात्र को बाथरूम, शौचालय, बर्तन, आश्रम के कमरों की सफाई करनी पड़ती है।

नेतरहाट आवासीय विद्यालय में स्वावलंबन की विशेषता रही है। तीन वर्षों तक काष्ठकला, धातुकला, वास्तुकला, कृषि, संगीत और फाइन आर्ट्स की पढ़ाई करना अनिवार्य है।

तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीबाबू, तत्कालीन मुख्य सचिव श्री एल. पी. सिंह, एफ. जी. पियर्स, जगदीश चंद्र माथुर आदि का सामाजिक न्याय की सोच का ही परिणाम है कि नेतरहाट आवासीय विद्यालय के छात्र आज भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर अपने देश की गरिमा बढ़ा रहे हैं।

झारखण्ड राज्य निर्माण के उपरांत शैक्षणिक वातावरण में अत्यधिक बदलाव आया है। कई निजी संस्थान आधुनिक शिक्षा की ओर अग्रसर हो चुके हैं। ऐसी परिस्थिति में नेतरहाट आवासीय विद्यालय के प्रबंधन को चाहिए कि विद्यालय प्रबंधन के अधिकारी/शिक्षक आपसी मतभेदों को दूर कर पूर्व की तरह शैक्षणिक माहौल को बनाये रखते हुए छात्रों को आधुनिक शिक्षा उपलब्ध करायें।

चार्ल्स नेपियर, जीवन नाथ दर, डॉ रामदेव त्रिपाठी, सत्यनारायण सिंह जैसे प्राचार्यों ने नेतरहाट आवासीय विद्यालय को राष्ट्रीय स्तर पर गौरवपूर्ण पहचान दिलाया है। मेरी कामना है कि नेतरहाट आवासीय विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक और छात्र मिलकर नेतरहाट आवासीय विद्यालय की गरिमामयी पहचान को अक्षुण्ण बनाये रखेंगे।

(राधाकृष्ण किशोर)

Dr. Mahua Maji

Member of Parliament
(Rajya Sabha)
Member - Standing Committee for the Ministry of Coal, Mines & Steel
Member - Consultative Committee for the Ministry of Culture & Tourism

सत्यमेव जयते

Permanent Address:-
18-C, Radha Govind Street, Tharpakhna,
Ranchi - 834001, Jharkhand
Delhi Address:-
Flat No. B-9 (Tower No. A-2),
Central Government Type 7 Residential Complex, Deen Dayal Upadhyay Marg,
New Delhi - 110002
Mob: + 91-9835337471, +91-9835157222,
+ 91-9835193111
E-mail : mahua.maji@sansad.nic.in

शुभकामना-संदेश

नेतरहाट विद्यालय शिक्षा का एक उत्कृष्ट केंद्र है, जो दशकों से अनुशासन, ज्ञान और चरित्र निर्माण की परंपरा को सहेजता आया है। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि यह प्रतिष्ठित संस्थान अपना 72वाँ स्थापना दिवस मना रहा है तथा इस अवसर पर विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'सर्जना' का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

झारखंड की सुरम्य लातेहार की पहाड़ियों के बीच स्थित नेतरहाट विद्यालय केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि एक सजीव संस्कार-पीठ है, जहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं, बल्कि जिम्मेदार, संवेदनशील और नैतिक मूल्यों से संपन्न नागरिक बनाना है।

1954 में स्थापित यह विद्यालय अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुशासन और सर्वांगीण विकास के लिए देश-विदेश में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यहाँ की प्राकृतिक सौंदर्यता और शिक्षकों का समर्पण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करता है।

नेतरहाट विद्यालय के पूर्व छात्र आज देश और दुनिया के विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं, जो इस संस्था की गौरवशाली परंपरा और मूल्यों का प्रमाण है।

विद्यालय का आदर्श वाक्य "सेवा, सत्य और श्रम" आज भी अपने प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में प्रेरणा बनकर प्रकाश फैलाता है।

मैं नेतरहाट विद्यालय परिवार को स्थापना दिवस एवं 'सर्जना' पत्रिका के प्रकाशन के इस शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

कामना है कि यह विद्यालय यूँ ही शिक्षा और संस्कार की ज्योति जलाकर आने वाली पीढ़ियों को उज्ज्वल भविष्य की राह दिखाता रहे और झारखंड राज्य तथा इस देश का नाम रोशन करता रहे।

महुआ माजी
सांसद, राज्यसभा

दीपिका पाण्डेय सिंह
मंत्री
ग्रामीण विकास विभाग, ग्रामीण कार्य
विभाग तथा पंचायती राज विभाग
झारखण्ड सरकार

कार्यालयः
प्रोजेक्ट भयन, कमरा संख्या 218,
धुर्वा, राँची-834004
दूरभाष: 0651-2400237,
2400238 (का०) आवासीय का०:
ई-223/2, सेक्टर-2, धुर्वा, राँची
दूरभाष: 0651-2440063 (आ०)

शुभकामना-संदेश

मैं नेतरहाट विद्यालय परिवार के सभी शिक्षकगण, छात्र-छात्राओं एवं पूर्व छात्रों को 72वें स्थापना दिवस पर हृदय से बधाई देती हूँ। नेतरहाट विद्यालय का एक प्रतिष्ठित आवासीय विद्यालय के रूप में गौरवशाली इतिहास रहा है, जो गुरूकुल परंपरा का पालन करता है और जिसने हजारों प्रशासको, वैज्ञानिकों और नेताओं को जन्म दिया है। 1954 में स्थापित नेतरहाट विद्यालय ने शिक्षा के क्षेत्र में जो मानक स्थापित किए है, वह झारखण्ड ही नही, पूरे देश के लिए गौरव का विषय है।

पिछले 72 वर्षों में इस संस्थान ने असंख्य प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को न केवल शिक्षा दी, बल्कि उनमें संस्कार, अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना भी जगाई है।

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका "सर्जना" विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है। यह प्रयास विद्यालय की उस परंपरा को और समद्ध करता है, जहाँ शिक्षा केवल परीक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और समाज निर्माण का साधन बनती है। "सर्जना" पत्रिका निरंतर नई पीढ़ी में विचार, मूल्य और सृजनशीलता को प्रेरणा देती रहे-यही मेरी शुभकामना है।

Deepika Pandey Singh

(दीपिका पाण्डेय सिंह)

रामचन्द्र सिंह

सभापति, सदाचार समिति, झा०वि०स०

-सह-

विधायक, मनिका विधानसभा क्षेत्र-73

पता : आवास सं0-E169, सेक्टर-2,
धुर्वा, राँची (झारखण्ड),
मो० नं0-8709712097, 7033414799
Email: mlaramchandrasingh@gmail.com

शुभकामना-संदेश

नेतरहाट आवासीय विद्यालय के 72वें स्थापना दिवस के इस ऐतिहासिक एवं गौरवमयी अवसर पर मैं विद्यालय परिवार, शिक्षकों, विद्यार्थियों, पूर्व छात्रों तथा सभी संबंधितजनों को हृदय से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

नेतरहाट आवासीय विद्यालय न केवल झारखंड राज्य बल्कि पूरे देश के शैक्षिक जगत की अमूल्य धरोहर है। अपनी स्थापना के बाद से इस विद्यालय ने शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता, अनुशासन, नैतिकता और चरित्र निर्माण की परंपरा को निरंतर सशक्त किया है। इस संस्थान ने सदा ही "निष्काम कर्म, सादगी, ईमानदारी और उत्कृष्टता' के मूल्यों को अपने कार्यकलापों में आत्मसात किया है। यही कारण है कि यहाँ से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र आज देश और विदेश के विविध क्षेत्रों में अपने कार्य, व्यवहार और नेतृत्व से समाज को दिशा प्रदान कर रहे हैं।

नेतरहाट की विशेषता केवल उसके शिक्षण पद्धति में नहीं, बल्कि उस जीवनशैली में है जिसे यह विद्यालय अपने छात्रों को प्रदान करता है। यहाँ का वातावरण विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, सामूहिकता और सृजनशीलता का भाव विकसित करता है। विद्यालय का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि ऐसे संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है जो समाज की बेहतरी के लिए समर्पित रहें।

इस अवसर पर विद्यालय की वार्षिक पत्रिका "सर्जना" का नवीन विशेष अंक प्रकाशित हो रहा है, जो विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति, चिंतन और रचनात्मकता का सशक्त माध्यम है। "सर्जना" केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि नेतरहाट परिवार की आत्मा की झलक है जो यह दर्शाती है कि विद्यार्थी किस तरह साहित्य, कला, विज्ञान, समाज और संस्कृति के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण रखते हैं। इस पत्रिका के माध्यम से युवा मन अपनी कल्पनाओं को शब्दों का रूप देते हैं और अपने विचारों को साझा करते हैं। यह मंच उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है और भविष्य के लेखक, विचारक एवं शोधार्थियों को जन्म देता है।

मैं इस अवसर पर विद्यालय प्रशासन, प्राचार्य, शिक्षकगण तथा उन सभी विद्यार्थियों को विशेष बधाई देता हूँ जिनके परिश्रम से यह पत्रिका प्रकाशित हो रही है। "सर्जना" के प्रत्येक अंक में नेतरहाट की आत्मा की झंकार सुनाई देती है वह आत्मा जो सत्य, श्रम और साधना में विश्वास रखती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि नेतरहाट आवासीय विद्यालय आने वाले वर्षों में भी अपने आदर्शों, अनुशासन और गुणवत्ता को बनाए रखते हुए शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करेगा। यह विद्यालय न केवल विद्यार्थियों के जीवन को प्रकाशमान कर रहा है, बल्कि राज्य और राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की नींव भी मजबूत कर रहा है।

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि नेतरहाट आवासीय विद्यालय का यह यात्रा-पथ सदा सफलता, सृजन और प्रेरणा से आलोकित रहे। विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ और उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित !

(रामचन्द्र सिंह)

Uma Shankar Singh, I.A.S.
Secretary
उमा शंकर सिंह, भा. प्र. से.
सचिव

School Education & Literacy Department
Government of Jharkhand
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग
झारखण्ड सरकार

संदेश

प्रकृति की गोद और निश्च्छल भोले-भाले वनवासियों के प्रेम से अभिसिंचित नेतरहाट आवासीय विद्यालय की स्थापना भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिन 15 नवम्बर के अवसर पर 1954 ई० में हुई थी। अपने स्थापनाकाल से ही विद्यालय छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयत्नशील यह विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में एक विशिष्ट सृजन सिद्ध हुआ है। अपने छात्रों को सत्य, प्रेम, करुणा, स्वाध्याय, श्रमशीलता, सहभागिता एवं समता का साधक बनाकर इस विद्यालय ने राष्ट्रीय चरित्र के विकास में योगदान देकर अपनी सार्थकता सिद्ध की है। यहाँ बिना किसी भेदभाव के छात्रों को व्यक्तित्व-निर्माण का अवसर मिलता है जिससे नेतरहाट विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र विद्यालय के आदर्शों का संबल लेकर अपनी प्रतिभा, क्षमता एवं समर्पणशीलता से समाज एवं राष्ट्र का गौरव बढ़ा रहे हैं। शैक्षणिक-जगत में कई दशकों से शिक्षा का अलख जगाने वाला, ज्ञान का दीप प्रज्वलित करने वाला भारत एवं झारखण्ड का गौरव नेतरहाट आवासीय विद्यालय अपने बच्चों में पढ़ाई के साथ-साथ, सुसंस्कार, नैतिकता का बीजारोपण करता है एवं उन्हें सुयोग्य एवं जिम्मेदार नागरिक बनाता है।

अपनी परंपरा का स्मरण कर भविष्य की यात्रा को लक्ष्यबद्ध करने के उद्देश्य से नेतरहाट आवासीय विद्यालय द्वारा अपने स्थापना दिवस पर अन्यान्य गतिविधियों के अतिरिक्त विद्यालय-पत्रिका के विशेषांक का प्रकाशन किया जाता रहा है। अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि अपनी परंपरानुसार नेतरहाट विद्यालय "सर्जना" पत्रिका के विशेषांक के माध्यम से विद्यालय के वार्षिक क्रिया-कलापों, उपलब्धियों, संकल्पों एवं छात्रों की रचनाधर्मिता को पुनः प्रस्तुत करने जा रहा है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित !

15/10/25

(उमा शंकर सिंह)

Ground Floor, MDI Building, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand-834004
Email-edu jharkhand@gov.in, hrdjharkhand@gmail.com
Ph-0651-2400797 (0)

डॉ0 कुमार ताराचन्द, भा0प्र0 से0.
उपायुक्त, लोहरदगा

संदेश

नेतरहाट आवासीय विद्यालय अपने स्थापना के 72 गौरवपूर्ण वर्ष पूर्ण कर रहा है। इस ऐतिहासिक अवसर पर विद्यालय के सभी छात्रों, शिक्षकों, कर्मचारियों और पूर्व विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

15 नवंबर 1954 को स्थापित यह संस्थान अपने संस्थापकों के दूरदर्शी सपनों एवं श्रेष्ठता की परंपरा का प्रतीक रहा है। शांत वनों की गोद में स्थित नेतरहाट विद्यालय शिक्षा, अनुशासन व चरित्र निर्माण का अद्वितीय केंद्र रहा है। यहाँ से शिक्षा प्राप्त करनेवाले विद्यार्थी प्रशासन, विज्ञान, चिकित्सा, जनप्रतिनिधि एवं शिक्षा तथा समाज के विविध क्षेत्रों में देश-विदेश में अपनी विशिष्ट पहचान बनाते आए हैं।

विद्यालय का वातावरण, गुरुकुल परंपरा और आधुनिक शिक्षा के संगम के साथ, छात्रों में सेवा, समर्पण एवं नेतृत्व का भाव विकसित करता है।

72 वर्षों की यात्रा केवल समय का विस्तार नहीं, बल्कि एक प्रेरणा है, उस शिक्षा, संस्कार और उपलब्धियों की जो 'नेतरहाट' शब्द को गौरव और सम्मान से भर देती है। आने वाले वर्षों में विद्यालय निरंतर प्रगति करे, यही शुभकामना है।

नेतरहाट परिवार को इस गौरवशाली उपलब्धि पर हार्दिक बधाई और भविष्य के लिए श्रेष्ठ सफलताओं की शुभकामनाएँ।

(डॉ० कुमार ताराचन्द)

नेतरहाट विद्यालय समिति

(एम.डी.आई भवन परिसर, एच.ईसी., धुर्वा, राँची-834004)

(स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग)

संदेश

नमस्कार/ जोहार

प्रिय बच्चों, आदरणीय शिक्षकगण एवं समस्त विद्यालय परिवार।

गुरुकुल की परम्परा में हम सब एक परिवार की तरह हैं-जहाँ ज्ञान का दीपक जलता है, हम अनुशासित रहते हैं वहाँ संस्कारों की नींव मजबूत होती है, और भविष्य की राहें प्रशस्त होती हैं।

प्यारे बच्चों, आप सभी इस विद्यालय में अपने भविष्य को तराशने आए हैं। अपने बहुमूल्य समय का सदुपयोग करें, हर विषय में जिज्ञासा रखें, प्रश्न पूछें और उसका हल खोजें। खेल, कला, विज्ञान या साहित्य-जो भी रुचिकर हो, उसमें मेहनत करें और अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर रहें। नेतरहाट की वादियों में प्रकृति के साथ जुड़कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लें। अपनी प्रतिभा और क्षमताओं को पहचानें और उन्हें निखारने का प्रयास करें।

शिक्षकों से अनुरोध है कि ज्ञान के साथ-साथ जीवन कौशल भी साझा करें, ताकि छात्र अपने जीवन को साकार रूप दे सकें। छात्रों की प्रतिभा को पहचानें, उनकी कमियों को सहानुभूति व निष्ठा पूर्वक दूर करें। विद्यालय के मूल्यों और परम्पराओं को जीवंत रखें, ताकि हर बच्चा आत्मविश्वास से आगे बढ़ सके। नए विचारों और तकनीकों को अपनाकर शिक्षा को रोचक बनाएं। सकारात्मक और प्रेरणा दायक वातावरण का निर्माण करें।

हम सभी मिलकर सर्जना को और भी दिव्य स्वरूप दें-जहाँ अनुशासन, नवाचार, रचनात्मकता, सकारात्मकता और समर्पण का संगम हो। अपने कर्तव्यों का पालन करें और इस विद्यालय की गुरुकुल परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए सच्ची पहचान दिलाएं।

जय हिंद, जय झारखंड!!

शुभकामनाओं के साथ,

(संतोष उराँव)
सभापति,
कार्यकारिणी समिति, नेतरहाट विद्यालय समिति।

प्रोफेसर कामिनी कुमार

पूर्व कुलपति (प्रभारी)
राँची विश्वविद्यालय, राँची प्रतिकुलपति
राँची विश्वविद्यालय, राँची प्रतिकुलपति
कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा

शुभकामना-संदेश

प्रकृति के आँचल में स्थित नेतरहाट विद्यालय के 72वें स्थापना दिवस (15 नवम्बर 2025) के शुभ अवसर पर मैं नेतरहाट विद्यालय महापरिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ।

नेतरहाट आवासीय विद्यालय का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है जहाँ गुरूकुल परंपरा और शिष्य संबंध का निर्वहन करते हुए अनेकों विद्यार्थी निकले, जिन्होंने देश-विदेश में अपनी अलग पहचान बनाई और विद्यालय का नाम रौशन किया है। आज मैं उन सभी गुरू, गुरुमाताओं को सादर नमन करती हूँ जिन्होंने निःस्वार्थ विद्या दान की और जो इस दुनिया में अब नहीं हैं। आज मैं उन सभी विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्रों को याद कर नमन करती हूँ जिन्होंने अपनी योग्यता और प्रतिभा के बल पर अलग-अलग क्षत्रों में शीर्ष स्थान प्राप्त किया और विद्यालय का नाम रौशन किया है तथा नेतरहाट विद्यालय को विश्व का एक श्रेष्ठ विद्यालय बनाने का अवसर प्रदान किया है।

यह विद्यालय शिक्षा और संस्कार की एक अनूठी मिसाल है। यह ऐतिहासिक क्षण विद्यालय की शैक्षणिक उत्कृष्टता और छात्रों के सर्वांगीण विकास का प्रमाण है। आज आप सभी विद्ववान शिक्षक व सभी छात्र हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। आप अपने आचरण से, अपने व्यवहार और अपनी प्रतिभा से विद्यालय का नाम रौशन करेंगे एवं आने वाली पीढ़ी के लिए एक स्वस्थ परंपरा का उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। विद्यालय के सभी शिक्षकों के प्रति पूर्ण सम्मान की भावना के साथ कहना चाहूँगी कि वे अपनी ओर से अपना उत्तम ज्ञान विद्यार्थियों को प्रदान करें और एक स्वस्थ परंपरा के साथ विद्यालय को आगे ले जाने के दायित्व का निर्वहन करें। आज के दिन हम सबके लिए एक अहम चुनौती है, जब प्राचार्य, सभी विद्ववान शिक्षकवृंद, पूर्ववर्ती छात्र, वर्तमान विद्यार्थी, कर्मचारी, सामान्य निकाय व कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यगण मिलकर विद्यालय को नयी ऊँचाईयों तक ले जाएँ।

इस शुभ अवसर पर विद्यालय के द्वारा 'सर्जना' पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है इसके लिए संपादक मंडल के सभी सदस्यों को मेरी ओर से अनेकों शुभ कामनाएँ। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि विद्यालय का यह गौरवशाली सफर यूँ ही जारी रहे और अनगिनत छात्रों को जीवन की राह दिखाएँ। इस महत्वपूर्ण अवसर पर मैं पूर्ववर्ती छात्रों, वर्तमान छात्रों और शिक्षकों को बधाई देती हूँ और भविष्य में विद्यालय को और अधिक सफलता मिले इसकी कामना करती हूँ।

कामिनी कुमार

प्रो. कामिनी कुमार
(शिक्षाविद) सदस्य, कार्यकारिणी समिति,
नेतरहाट विद्यालय समिति, नेतरहाट

Dr. Ashish Alok

Member, General Body

Netarhat Vidyalaya Samiti

Message

Happy 72nd Foundation Day!!!

On this auspicious occasion of the 72nd Foundation Day of Netarhat Residential School, we celebrate not merely the passage of time, but the timeless pursuit of knowledge that defines this institution. The geneses of knowledge lies in man himself—an ever-restless being, driven to explore, invent, and understand the mysteries of existence. Man and knowledge are, therefore, inseparable—each fulfilling and completing the other.

This profound idea was at the heart of the vision of Dr. Shri Krishna Sinha, the first Chief Minister of Bihar, whose dream was to create a school that blended intellectual discipline with moral strength, and modern education with the eternal spirit of inquiry. His vision gave birth to Netarhat—an abode of learning amidst nature's calm, meant to nurture bright minds and noble souls who would serve the nation with wisdom, humility, and integrity.

Over the decades, this vision has flourished. Netarhat has stood as a symbol of excellence where education transcends textbooks and examinations, becoming a living dialogue between man, nature, and knowledge. Every learner here is inspired to question, to reason, to explore, and to evolve—carrying forward the eternal flame of enlightenment kindled by our founders.

As we commemorate seventy-two glorious years, let us reaffirm our faith in the ideals of curiosity, creativity, and compassion that define the Netarhat spirit. May this institution continue to shine as a beacon of holistic education—where learning refines the intellect, ennobles the heart, and awakens the soul.

Ashish Alok

(Dr. Ashish Alok)

NETARHAT AWASIYA VIDYALAYA, NETARHAT

(An Autonomous Institute under School Education and Literacy Department, Govt. of Jharkhand)
P.O. Netarhat, Via-Gumla, Dist. - Latehar, Pin - 835218, E-mail : principal.netarhat@gmail.com
Website : www.netarhatvidyalaya.com

From Principal's Pen...

Dear Students, Teachers, Parents and Alumni

I extend my warmest greetings to all of you on the occasion of the publication of the annual magazine Sarjana of Netarhat Awasiya Vidyalaya. Today, we are going to celebrate the 72nd Vidyalaya Foundation Day.

Netarhat Awasiya Vidyalaya was established in 1954 by the then State Government under the patronage of educationist F. G. Pearce, founded on the principles of holistic development and self-reliance.

Our motto, "Attadīpa Viharatha", means "Become your own light." It inspires us to pursue excellence and attain self-sufficiency in every sphere of life.

Beyond mainstream academics, the Vidyalaya imparts training in agriculture, horticulture, metalwork, woodwork, etc., empowering students to be independent and contribute meaningfully to society.

I congratulate all students, teachers, and staff for their relentless efforts and dedication that have brought enduring glory to Netarhat. Let us reaffirm our commitment to elevate our beloved Vidyalaya to even greater heights and strive relentlessly towards our dreams.

"Your passion and perseverance will light the path to success."

Jai Jharkhand, Jai Netarhat!

Santosh Kumar
Principal, Netarhat Awasiya Vidyalaya

Editorial

Dear Readers,

While turning the pages of this year's school magazine, we silently admire the old saying that- 'Every ending opens a door of new opportunities and talent waiting for their turn to spark and bloom'. Great philosophers and thinkers often say that ultimate learning comes from stepping outside our comfort zone and from daring to try, fail, and try again and again. Here in Netarhat Residential School, we are actually living it. The model of 'Learning Beyond Books' for more than half a century, have left behind countless glorious milestones in this auspicious journey.

The method of NETARHATIAN learning-teaching curriculum is a sincere effort to prepare students to excel in life instead of simply preparing students for exams. Here, as a teacher or more correctly to say a GURU, we ignite love for learning, encourage critical thinking and empower values that go far beyond the classroom boundaries. The very purpose behind each thoughtful lesson, word of encouragement, and moment of patience is to build the foundation for a brighter and prosperous future for the students.

Our source of inspiration lies on the belief system that was engraved by the founding members of Netarhat school, our honourable senior teachers, and not the least the students who have marked their vibrant success in all most each profession worldwide. Education is more than the transfer of knowledge. It is the art of igniting curiosity, shaping values and character as well as nurturing potential. At the heart of this noble pursuit stands the teacher — a guide, a mentor, and often the quiet force that accelerates every student's remarkable success. The very thought of Netarhatian education methods also resembles the idea of education of Swami Vivekananda:

"Education is the manifestation of perfection already in man."

I, as an editor of this edition, extend my heartfelt gratitude to all contributors — the editorial members, students, teachers, and staff — who have made this publication possible. Your words and efforts are the heartbeat of this magazine. I would also take this opportunity to convey my special thanks to Anita Yadav (Mausi), State Vice-President, RJD (Jharkhand), who has helped coordinating with various dignitaries in order to collect their greeting messages for the magazine.

Each Story, Poem, Article, and Piece of writing you'll find here reflects not only creativity and talent but also the spirit of perseverance that defines our school's ever-growing community in a true sense. As you read, may you find encouragement and inspiration to embrace change, achieve excellence, and pursue the beautiful journey of learning. Through 'Sarjana 2025' I wish you all happy 72nd Netarhat Residential School Foundation Day.

(Dr. Nishi Hemrom)
Editor in-charge, Sarjana

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

Tribute

Late Shri Shibu Soren

Born on 11 January 1944- Passed away on 04 August 2025

(Our beloved GURUJI)

The Ever-Resonating Voice of the Adivasi Spirit

Shri Shibu Soren, affectionately known as "Dishom Guru," stands as one of the most enduring symbols of resilience, sacrifice and unwavering dedication to the rights of the tribal people and the underprivileged of Jharkhand and entire country. One of the most enduring and influential figures in India's political and social landscape, his life and legacy are a living tale of struggle and aspirations of the tribal and downtrodden communities of Jharkhand.

Born on January 11, 1944, at Nemra village in Jharkhand, Shibu Soren belongs from a humble tribal family who later on become a symbol of tribal empowerment, uprising and leadership in the region. Deeply affected by the pain of -displacement, exploitation and neglect faced by his people —he decided to dedicate his life to fight for their rights, identity, and dignity (JAL, JUNGAL, AND JAMIN).

From 1970s, onwards Sibu Soren led the Jharkhand Movement, which demanded a separate state for the tribal-dominated regions of southern Bihar. His calibrated leadership transformed the movement from once a scattered demand into a powerful socio-political voice of the reason that eventually culminated in the creation of separate Jharkhand state in 2000. The incident was not just a political achievement but a realization of a long-cherished dream and aspiration and Guruji emerged as the central figure.

As a leader of the JMM, Guruji compassionately advocated for land rights of tribals, preservation of tribal culture and constitutional rights of tribals. His tenure as Chief Minister of Jharkhand—and his role as a Union Minister-reflected his commitment to the principles of social justice and concern for empowerment for marginalized communities including tribals.

Beyond politics, Guruji's life is a testament of the spirit of perseverance. He remained on a mission to uplift the poor, the farmers, and the Adivasis. His extraordinary simplicity, connect to grassroot, and ability to hold communication with the common man, made him a beloved figure across generations.

Today, as Jharkhand continues to evolve, the imprint of Shibu Soren's dream and vision remains indelible. His dream of a dignified tribal society continues to inspire leaders and citizens across political boundaries.

Guruji's legacy reminds us that, the true leadership emerge not from power, but from a sincere commitment to the people one serves. We the daughters and sons of Jharkhand will always remain highly indebted to his love, sacrifice and service for our Jharkhand.

Dr. Nishi Hemrom
(H.O.D English)
Netarhat Residential School

Tribute

Late Shri Ram Das Soren

Born on 1 January 1963- Passed away on 15 August 2025

With deep respect and heartfelt gratitude, we the members of Netarhat Residential School family pay tribute to Late Shri Ram Das Soren, Honourable Ex- Minister for School Education & Literacy, in the Government of Jharkhand.

List of the Governing Body, Netarhat Vidyalaya Samiti

Sl. No.	Member Name	Position
01	Honourable Minister, School Education and literacy department, Jharkhand Ranchi	Chairmen
02	Development Commissioner, Jharkhand Ranchi	Vice-Chairmen
03	Secretary, School Education and literacy department, Jharkhand, Ranchi	Member
04	Commissioner, Palamu	Member
05	DC, Latehar	Member
06	DC, Lohardaga	Member
07	Representative for Finance Department (Nominated by Finance Secretary)	Member
08	Sri Dharmraj Singh (Renowned Educationist)	Member
09	Dr. Girindra Prasad (Ex- Teacher, Netarhat Awasiya Vidyalaya)	Member
10	Sri Murlidhar Kotwar (Ex- Teacher, Netarhat Awasiya Vidyalaya)	Member
11	Sri Ashish Aalok (Ex-Student, Netarhat Awasiya Vidyalay)	Member
12	Prof. Baidyanath Labh (Ex-Student, Netarhat Awasiya Vidyalaya)	Member
13	Principal, Netarhat Awasiya Vidyalaya	Member Secretary

List of the Executive Committee, Netarhat Vidyalaya Samiti

Sl. No.	Member Name	Position
01	Sri Santosh Oraon (Ex-Student, Netarhat Awasiya Vidyalaya)	Chairmen
02	Director, Secondary Education, School Education and literacy department, Jharkhand Ranchi	Member
03	Representative for Finance Department (Nominated by Finance Secretary, GOJ)	Member
04	Dr. Kamini Kumar (Renowned Educationist)	Member
05	Principal, Netarhat Awasiya Vidyalaya	Member Secretary

Netarhat Vidyalaya Samiti Members

OUR TEACHING FACULTY MEMBERS AND INSTRUCTORS, 2025

PERMANENT TEACHER

Sl. No.	Name	Subject/ Incharge
1.	Shri Ravi Ranjan	Computer (H.O.D)
2.	Dr. Abhishek Mishra	Maths (H.O.D)
3.	Shri Maruti Pratap Singh	Physics (H.O.D)
4.	Smti. Radha Kumari	Biology (H.O.D)
5.	Shri Uday Kumar Marandi	Biology
6.	Shri Ravi Prakash Singh	Chemistry (H.O.D)
7.	Shri Binod Toppo	Geography (H.O.D)
8.	Dr. Narendra Kumar Mandal	Hindi (H.O.D)
9.	Dr. Shishir Saurabh	Music (H.O.D)
10.	Shri Mukesh Kumar	Pol. Science (H.O.D)
11.	Dr. Nishi Hemrom	English (H.O.D)
12.	Dr. Sawanti Tirkey	Hindi
13.	Dr. Rakesh Kumar	Maths
14.	Shri Silvester Murmu	Computer
15.	Shri Om Prakash Tiu	Chemistry
16.	Shri Tarkeshwar Paswan	Maths
17.	Shri Ravish Kumar	Chemistry

PERMANENT TEACHER

Sl. No.	Name	Subject/ Incharge
18.	Shri Atul Ranjan Ekka	Art (H.O.D)
19.	Dr. Rajesh Chandra Gupta	Physics
20.	Shri Shisupal Mahto	Maths

GUEST FACULTY

21.	Shri Anshuman Chatterjee	Co-ordinator

CONTRACTUAL TEACHER

22.	Shri Ravi Prasad	English
23.	Shri Keshaw Kunal Sharma	Hindi
24.	Smti. Smriti Singh	Pol.Science
25.	Shri Anant Mishra	Sanskrit
26.	Shri Pawan Kujur	Economics
27.	Miss Preeti Singh	English
28.	Miss Kumari Smita Xaxa	English

INSTRUCTOR

29.	Shri Ram Pratap Prasad	Metal work
30.	Shri Basant Tirkey	P.T.I
31.	Smti. Mamta Kumari	Agriculture

अतिरिक्त प्रभार

क्र० सं०	प्रभार	प्रभारी	सह–प्रभारी
1.	**काउंसलिंग सह–अनुशासन**	श्री रवि प्रकाश सिंह	1. श्री विनोद टोप्पो 2. डॉ० शिशिर सौरभ 3. डॉ० श्रीमती निशी हेमरोम 4. डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता
2.	**शैक्षणिक गतिविधि (समस्त प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं का अनुदेशन एवं पर्यवेक्षण**	डॉ० अभिषेक मिश्रा	इंटर 2 – श्री उदय कुमार मरांडी इंटर 1 – श्री रवि प्रकाश सिंह पंचम वर्ष – श्री विनोद टोप्पो चतुर्थ वर्ष – श्री मुकेश कुमार तृतीय वर्ष – डॉ० राकेश कुमार द्वितीय वर्ष – श्री ओम प्रकाश तियु प्रथम वर्ष – श्री रवीश कुमार
3.	**खेल–कूद**	श्री विनोद टोप्पो	श्री मुकेश कुमार, डॉ० निशी हेमरोम, श्री शिशुपाल महतो, श्री रवि प्रसाद, श्री केशव कुणाल शर्मा
4.	**पी० टी०**	श्री रवि रंजन	श्री मुकेश कुमार, डॉ० सेवन्ती तिर्की, डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता, श्री अनंत मिश्र, श्री बसंत तिर्की
5.	**सम्मेलन**	श्री रवि प्रकाश सिंह	डॉ० शिशिर सौरभ, श्री मुकेश कुमार, डॉ० निशी हेमरोम, डॉ० सेवन्ती तिर्की, श्री रवीश कुमार
6	**चिकित्सालय**	श्री तारकेश्वर पासवान	श्री अतुल रंजन एक्का
7.	**पुस्तकालय**	डॉ० नरेन्द्र कुमार मंडल	डॉ० सेवन्ती तिर्की, श्री शिशुपाल महतो, श्री पवन कुजूर

क्र० सं०	प्रभार	प्रभारी	सह–प्रभारी
8.	**पुस्तक भंडार**	श्री रवीश कुमार	श्री अतुल रंजन एक्का, श्री शिशुपाल महतो
9.	**कृषि**	डॉ० सेवन्ती तिर्की	डॉ० राकेश कुमार, श्री ओम प्रकाश तियु
10.	**आंतरिक परीक्षा विभाग**	श्री उदय कुमार मरांडी	श्री मुकेश कुमार, डॉ० निशी हेमरोम, डॉ० राकेश कुमार, श्री अतुल रंजन एक्का, डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता, श्री शिशुपाल महतो
11.	**बाह्य परीक्षा विभाग**	श्री मारूति प्रताप सिंह	श्री उदय कुमार मरांडी, श्री रवि प्रकाश सिंह, डॉ० सेवन्ती तिर्की, डॉ० राकेश कुमार, श्री तारकेश्वर पासवान, डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता
12.	**सांस्कृतिक विभाग**	डॉ० शिशिर सौरभ	डॉ० निशी हेमरोम, डॉ० सेवन्ती तिर्की, श्री अतुल रंजन एक्का, श्री राम प्रताप प्रसाद
13.	**निर्माणशाला**	श्री मुकेश कुमार	डॉ० राकेश कुमार, श्री राम प्रताप
14	**शैक्षणिक भ्रमण**	डॉ० अभिषेक मिश्रा	श्री मारूति प्रताप सिंह, डॉ० सेवन्ती तिर्की, डॉ० राकेश कुमार, श्री तारकेश्वर पासवान, श्री अतुल रंजन एक्का, डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता, श्री शिशुपाल महतो
15.	**इको क्लब**	श्रीमती राधा कुमारी	श्री उदय कुमार मरांडी, श्री विनोद टोप्पो, श्री ओम प्रकाश तियु, डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता, श्री शिशुपाल महतो, श्रीमती ममता कुमारी
16.	**सामान्य ज्ञान तथा विज्ञान क्विज प्रतियोगिता परीक्षाएँ**	श्री विनोद टोप्पो	श्री मुकेश कुमार, डॉ० राकेश कुमार, डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता, श्री शिशुपाल महतो, श्रीमती स्मृति सिंह, श्री पवन कुजूर
17.	**दिनचर्या**	डॉ० अभिषेक मिश्रा	श्री उदय कुमार मरांडी, श्री ओम प्रकाश तियु, डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता
18.	**ओलंपियाड (सभी प्रकार के विषयों के लिए)**	श्री मारूति प्रताप सिंह	श्री उदय कुमार मरांडी, डॉ० राकेश कुमार, श्री ओम प्रकाश तियु, श्री रवीश कुमार, डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता
19.	**फोटोग्राफी एवं सजावट**	श्री अतुल रंजन एक्का	श्री शिशुपाल महतो, श्री रवि प्रसाद, श्री केशव कुणाल शर्मा, श्रीमती ममता कुमारी
20.	**शिक्षक सदन**	डॉ० नरेन्द्र कुमार मंडल	श्री तारकेश्वर पासवान, श्री अनंत मिश्रा
21.	**विद्यालय प्रत्रिका प्रकाशन**	डॉ० निशी हेमरोम	डॉ० सेवन्ती तिर्की (सह–संपादक), श्री रवि प्रसाद, श्री केशव कुणाल शर्मा, श्री अनंत शर्मा, सुश्री प्रीति सिंह, सुश्री कुमारी स्मिता खाखा
22.	**विद्यालय क्रिया–कलापों का प्रसारण (प्राचार्य की अनुमति से)**	श्री सिलवेस्टर मुर्मू	श्री ओम प्रकाश तियु, श्री अतुल रंजन एक्का
23.	**विभिन्न कार्यक्रमों के लिए स्वागत संकाय**	डॉ० निशी हेमरोम	डॉ० सेवन्ती तिर्की, श्री सिलवेस्टर मुर्मू , श्रीमती स्मृति सिंह, सुश्री प्रीति सिंह, सुश्री कुमारी स्मिता खाखा, श्रीमती ममता कुमारी
24.	**सी०बी०एस०ई० समन्वयक**	डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता	श्री शिशुपाल महतो, श्री रवि प्रसाद, श्रीमती स्मृति सिंह
25	**कंप्यूटर एवं इंटरनेट, विद्यालय वेबसाईट, आई०टी० सेल (विद्यालय के ERP संबंधी कार्यो के लिए)**	श्री मारूति प्रताप सिंह	श्री सिलवेस्टर मुर्मू, डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता (यह समिति ERP संचालन का अनुश्रवण करेगी एवं उत्पन्न गतिरोधों के निदान हेतु सुझाव देगी।
26.	**NCC एवं परेड**	डॉ० अभिषेक मिश्रा	श्री रवीश कुमार, श्री बसंत तिर्की
27.	**स्काउट एण्ड गाईड**	श्रीमती राधा कुमारी	डॉ० निशी हेमरोम, श्री ओम प्रकाश तियु, डॉ० राजेश चन्द्र गुप्ता, श्री शिशुपाल महतो, श्री रवि प्रसाद, श्री पवन कुजूर

हमारे प्राचार्य, शिक्षक, एवं प्रशिक्षक

प्रधान माता के साथ आश्रम माताएँ

विद्यालय प्रभारी छात्र

नाम	क्रमांक
कक्षा 12वीं	
अभिषेक कुमार	20006
मनजीत कुमार	20076
कक्षा 10वीं	
नैंसी कुमारी	22102
शशिकांत कुमार	22020
देवांशु पांडे	22082
अनिकेत कुमार	22028
शिवम कुमार मंडल	22007
अभिषेक कुमार	22008
भास्कर	22009
पंकज कुमार प्रजापति	22031
निखिल भगत	22053

आश्रम प्रभारी छात्र

आश्रम	नाम	क्रमांक
प्राथम आश्रम वर्ग		
शांति आश्रम	सचित कुमार	22013
गौतम आश्रम	प्रतीक कुमार	22006
अरुण आश्रम	हृदय उरांव	22062
द्वितीय आश्रम वर्ग		
आनंद अश्रम	अभिजीत आनंद	22014
प्रेम आश्रम	अंकित कुमार	22022
अर्जुन अश्रम	मुकेश कुमार राणा	22049
तृतीय आश्रम वर्ग		
साकेत अश्रम	अर्पित कुमार बड़ाईक	22001
अशोक आश्रम	अंकुश राज	22057
किशोर आश्रम	अभिषेक कुमार	22008
चतुर्थ आश्रम वर्ग		
तक्षशिला आश्रम	अमन खलखो	22093
विक्रम आश्रम	रौशन उरांव	22100
नालंदा आश्रम	अनूप उरांव	22044
पंचम आश्रम वर्ग		
भाभा आश्रम	अंकित कुमार वर्मा	22026
रमण आश्रम	निशांत कुमार यादव	22010
बोस आश्रम	प्रणव कौशल	22040
षष्ठ आश्रम वर्ग		
अरविन्द आश्रम	आलोक प्रकाश	22018
प्रदीप आश्रम	अनीश उरांव	22081
रामकृष्ण आश्रम	अभिषेक कुमार	22032
सप्तम आश्रम वर्ग		
कण्व आश्रम	एलेक उरांव	22012
कणाद आश्रम	यश भगत	22038
कपिल आश्रम	भरत कुमार मेहता	22024

प्राचार्य के साथ विद्यालय प्रभारी छात्र

प्राचार्य के साथ आश्रम प्रभारी छात्र

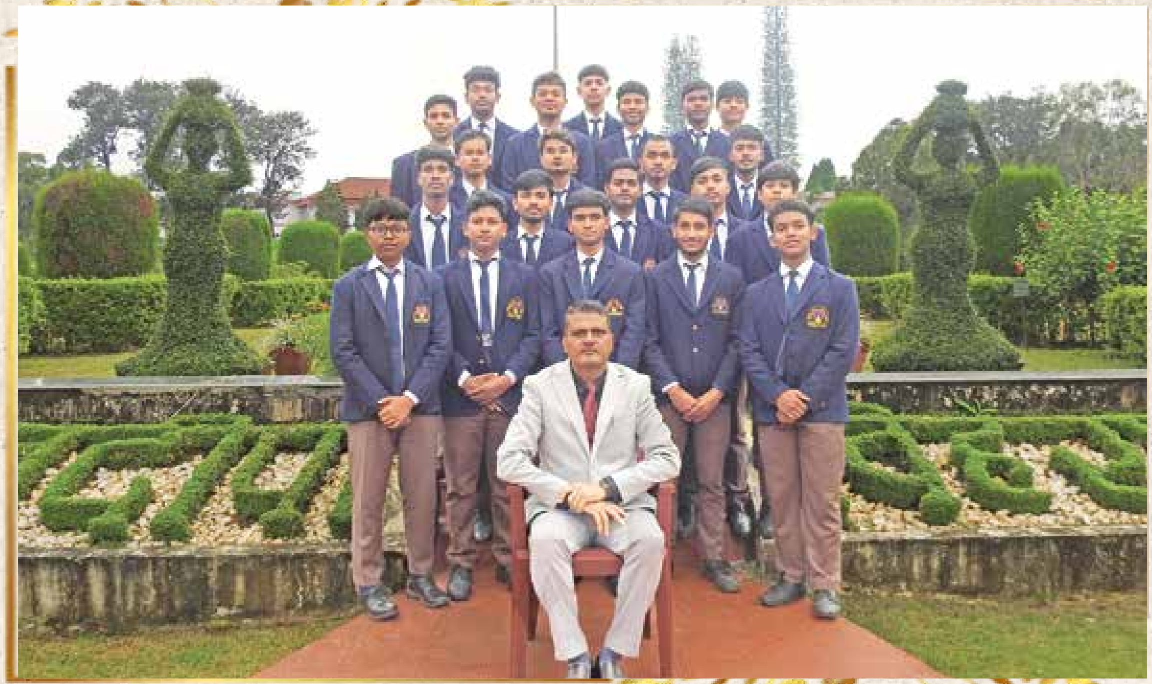

हमारे अंतेवासी

प्रथम आश्रम वर्ग

अरुण आश्रम

शांति आश्रम

गौतम आश्रम

द्वितीय आश्रम वर्ग

प्रेम आश्रम

आन्नद आश्रम

अर्जुन आश्रम

हमारे अंतेवासी

तृतीय आश्रम वर्ग

साकेत आश्रम

अशोक आश्रम

किशोर आश्रम

चतुर्थ आश्रम वर्ग

विक्रम आश्रम

तक्षशिला आश्रम

नालन्दा आश्रम

हमारे अंतेवासी

पंचम आश्रम वर्ग

रमण आश्रम

भाभा आश्रम

बोस आश्रम

षष्ठ आश्रम वर्ग

प्रदीप आश्रम

अरविन्द आश्रम

रामकृष्ण आश्रम

हमारे अंतेवासी

सप्तम
आश्रम वर्ग

कणाद आश्रम

कपिल आश्रम

कण्व आश्रम

दिवा छात्राएँ

OUR ADMINISTRATIVE STAFFS, 2025

Sl.No.	Name	Designation
1.	Shri Roshan Kumar Baxi	Administrative Officer
2.	Shri Rajesh Raman	Clerk
3.	Shri Kapil Choudhary	Bursar (In-charge)
4.	Shri Jagannath Rajak	Typist
5.	Shri Ram Bachan Rajak	Head Storekeeper
6.	Shri Benjamin Kerketta	Clerk, Exam Department
7.	Shri Sanjay Kumar	Establishment
8.	Shri Karamdeo Kisan	Storekeeper
9.	Shri Niranjan Tirkey	Clerk (P.A to Principal)
10.	Shri Nawal Kishore Panna	General Storekeeper
11.	Shri Baidyanath Hembrom	Accountant
12.	Shri Shashi Bhushan Tiwari	Food Storekeeper
13.	Shrimati Anjana Minj	Establishment
14.	Shri Amit Kumar	Storekeeper (Che./Phy. Lab.)
15.	Shri Shailesh Bhagat	Driver
16.	Shri Dinesh Kr. Kushwaha	Driver
17.	Shri Chandrika Pandit	Contractual Staff
18.	Shri Atul Rohit Minj	Contractual Typist
19.	Shri Sinod Kisan	Contractual Typist
20.	Shri Dilip Paswan	Contractual Driver
21.	Shri Ashok Kisan	Contractual Cashier
22.	Shrimati Richa Rani	Contractual Storekeeper
23.	Shri Anam Brijiya	Contractual Clerk

OUR MEDICAL STAFFS, 2025

26.	Dr. Deepak Manjhi	Medical Officer
27.	Shrimati Soniya Kujur	Nurse
28.	Shri Bimlendu P. Mahto	Compounder
29.	Shri Mukesh Kumar	Dresser
30.	Shri Manidev Baraik	Dresser

प्राचार्य के साथ
कार्यालय कर्मी

प्राचार्य के साथ
चिकित्सालय कर्मी

प्राचार्य के साथ
चतुर्थवर्गीय कर्मी

CLASSROOM ACTIVITIES

Morning Assembly

Maths Lab

Chemistry Lab

Physics Lab

Biology Lab

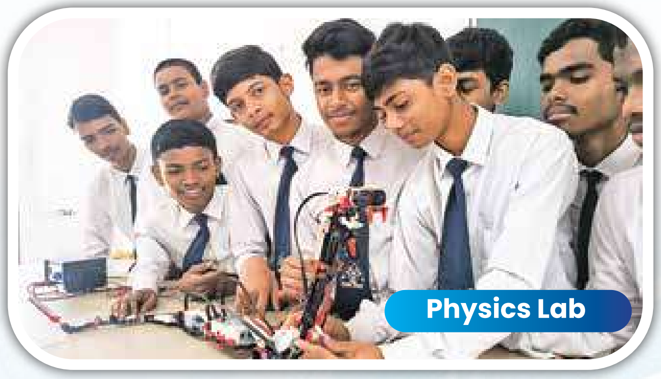
Physics Lab

Science Classroom Arrangement

Other Subjects Classroom Arrangement

CLASSROOM ACTIVITIES

Computer Lab

Music Classroom

Agriculture

Art Classroom

Library

Metal Workshop

Newspaper Corner

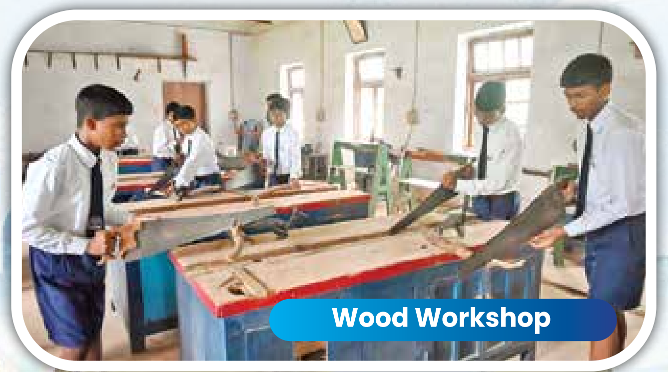

Wood Workshop

ASHRAM ACTIVITIES

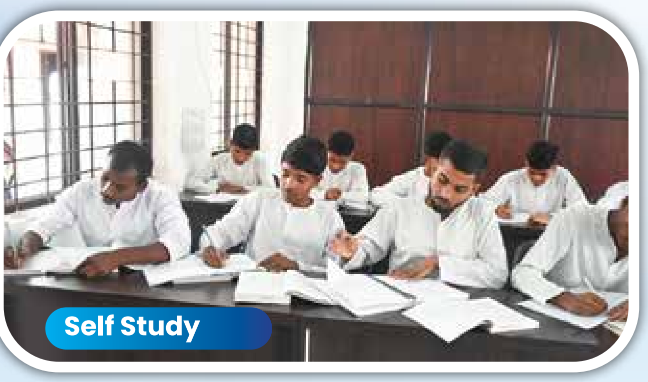

Self Study

Serving & Dining

Star Gazing

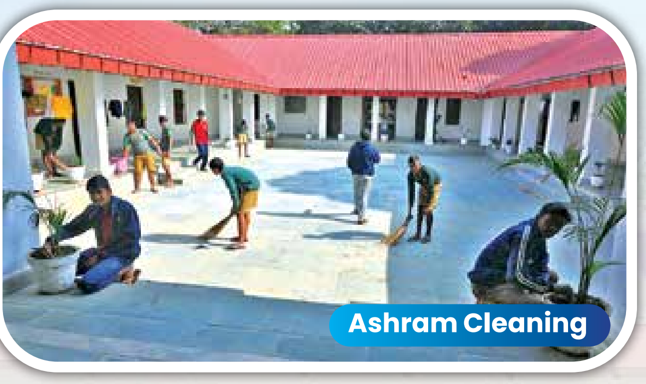

Ashram Cleaning

Ashram Gardening

Ashram Sahbhoj

Picnic with Day Scholars

Ashram Picnic

CO-CURRICULAR ACTIVITIES

Pariksha Pe Charcha by PM

English Dept. Extempore Competition

English Dept. Spelling Competition

Political Science Dept. (Constitution Day)

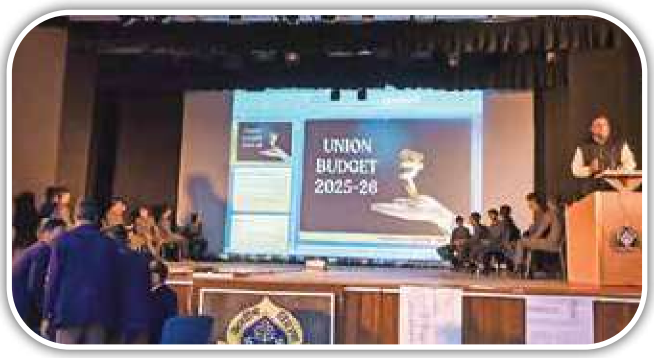

Economics Dept. Seminar & Quiz

Geography Dept. (INCA National Map Quiz contest)

Geography Dept. (Excursion)

CO-CURRICULAR ACTIVITIES

Science Dept. (CV Raman Jayanti, National Science Day, Quiz contest)

Cultural Dept. (Karma and Sarhul)

Diwali Celebration and Rangoli Competition

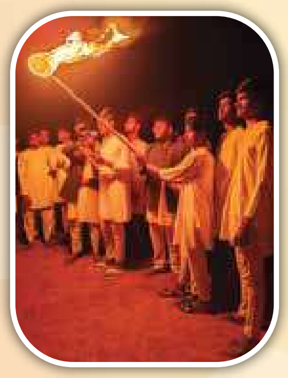

Holika Dahan and Holi celebration

CO-CURRICULAR ACTIVITIES

Music Dept. (Cultural Event)

Cultural Dept. (Drama Competition)

Social Welfare Programme

Skit Presentation on Children's Day

Demonstration of Aero Modeling

NCC

FIT India Programme

CO-CURRICULAR ACTIVITIES

P.T. Competition

Yoga Competition

Tree Plantation and Prabhat Pheri on Environment Day

Sports Tour

Saraswati Puja

Agriculture Dept. (Field Training)

CO-CURRICULAR ACTIVITIES

Teacher's Day Celebration

Mahatma Gandhi & Dr. B.R. Ambedkar Jayanti

Hindi Dept. (Poem Antyaaksharee Competition)

Maths Dept. (Seminar on Vashishtha Narayan Singh)

Annual Sports Day

Annual Sports Day

WORKSHOP & SEMIANR

Maths Dept. (Seminar by Prf. Roel Vertegaal on Thermodynamics & A.I.)

Hindi Dept. (Seminar on Krishan Sobti Jayanti by Prof. Dr. Prakash Shukla)

Bamboo Craft

Sohrai Art

Embroidery

Lac Bangle Making

Motivational Speech and workshop by Dr. Manukul

GUEST VISIT

नेतरहाट आवासीय विद्यालय, नेतरहाट
पौधरोपण
न्यायमूर्ति श्री तरलोक सिंह चौहान
माननीय मुख्य न्यायाधीश, झारखण्ड उच्च न्यायालय

GUEST VISIT

FOUNDATION DAY

एक श्रेष्ठ शिक्षक कौन कहलाते हैं?

एक श्रेष्ठ शिक्षक, हमे पढ़ना लिखना सिखाते हैं
मस्ती की पाठशाला बनाते हैं।
शिक्षा को सरल बनाते हैं,
अलग-अलग विषयों की रहस्य सुलझाते हैं,

कई विषयों से प्यार करना सिखाते हैं
शिक्षा को जीवन का हिस्सा बनाते हैं
विद्या का अनुभव कराते हैं।
भविष्य, बनाने के लिए नैतिक शास्त्र पढ़ाते हैं,

हमारे चरित्र को मजबूत बनाते हैं।
जिज्ञासा के बीज बोते हैं और सपनों को
साकार करना सिखाते हैं।
नए तरीके से ज्ञान पाने का सहज वातावरण बनाते हैं!

खेल और योग से, तन-मन स्वस्थ बनाते हैं
जीवन को प्रकृति से जोड़कर
प्रकृति और जीवन का महत्व समझाते हैं।
बाल मजदूरी से बचा कर बच्चों को शिक्षा की ओर बढ़ाते हैं।

एक श्रेष्ठ शिक्षक ज्ञान का प्रकाश देकर
असफलता की मार से बचाते हैं,
जो कठिन समय को जीना सिखाते हैं
ऐसे ही नहीं कहलाते हैं, श्रेष्ठ शिक्षक!
जो बच्चों को उनके लक्ष्य तक पहुँचाते हैं।

श्रीमती स्मृति सिंह
(राजनीति विज्ञान, शिक्षिका)

डोर

आकाश को पाना है तों
बाँध लो धरती की डोर,
किताबों को पाना है तो
बाँध लो कलम की डोर,

इच्छाओं को पाना है तो
बाँध लो मेहनत की डोर
चाँद को पाना है तो
बाँध लो मेहनत की डोर

सपनों को पाना है तो
बाँध लो किस्मत की डोर
गिनती को पाना है तो
बाँध लो अंको की डोर

पेड़ों को पाना है तो
बाँध लो बीजों की डोर
सपने जब पूरे होंगे तो
सारी खुशियाँ लो बटोर ।।

शिवम शर्मा
क्रमांक - 24010
कक्षा - 8

हमारे प्रिय मित्र

मेरा प्यारा स्कूटर

'देखे चौंक कर इधर-उधर,
मम्मी का दुलारा स्कूटर,
आँखें इसकी मोटी-मोटी,
खाए चाव से दूध-रोटी
खेले जमीन पर लोट-लोट कर,
पापा का लाडला स्कूटर,
भौंके जोरों से बार-बार,
पीछा करे हमारी कार।
उछल-उछल दो टांगों पर,
मेरा प्यारा सा स्कूटर,
प्यार जताए पूँछ हिला,
किस्मत से ऐसा दोस्त मिला।

श्रीजा सिंह
क्रमांक - 24102
कक्षा - 8

मेरा प्यारा संतरू

संतरे रंग का मेरा संतरू,
खूब तुझे मैं प्यार करूँ,
देख मुझे दौड़ा आए,
म्याऊँ म्याऊँ चिल्लाए ।
छोटा सा, बड़ा नटखट,
छत पर चढ़ जाए झटपट,
मेरा संतरू, मेरी जान,
मेरा संतरू, मेरी शान ।
दूध मलाई चट कर कर,
गुर्राए आँखे मूंद कर
मस्ती में रहता है मगन,
वो है एक अनमोल रतन ।

सौम्या समृद्धि
क्रमांक - 24110
कक्षा - 8

मेरा प्यारा ओम

मेरा तोता, ओम निराला,
बोले मीठा, है दिलवाला,
हरे पंख में छुपा उजाला,
देखो इसका रूप निराला।
कभी बोले "हाय", कभी "राम"
इससे महके मेरा धाम,
कभी उड़ जाए खिड़की पार,
फिर लौटे जैसे हो त्योहार ।
माँ है इसकी आन-बान,
ध्यान लगा सूने बाबा की तान,
मस्ती में गाए गाना अक्सर,
ईश्वर दे इसको लंबी उमर ।

साक्षी पाण्डेय
क्रमांक - 24112
कक्षा - 8

मेरा प्यारा चीकू

आज हमारे घर,
पापा लाए छोटा बंदर,
नाम रखा इसका चीकू,
हरदम बोले ये कूं कूं ।

याद दिलाए सबको नानी,
करता रहता है शैतानी,
उछल, कूद, चिल्ला-चिल्ला कर,
खाए मूँगफली चटर-पटर।
खेले मेरे सभी खिलौनों के साथ,
सबको करता प्रणाम, जोड़ अपना हाथ,
बैठा रहता टी. वी. के पास,
मेरा प्यारा चीकू बदमाश ।

वैष्णवी प्रिया
क्रमांक - 24103
कक्षा - 8

बारिश

धरती का ये है खून
आसमान की ये अमानत
सबको सींचे, सबको पाले
सबकी प्यास बुझाये रे
आसमान को चीरके, धरती पे बारिश आए रे।

हरियाली का सूत्रधार,
भोजन की दुनिया है आधार
सबका श्रोता, सबका दाता
सबकी प्यास बुझाए रे
आसमान को चीरके, धरती पे बारिश आए रे।

समय को बदले, खुशियाँ लाए
प्यार बरसाए, अहसास जगाए
सबकी प्यास बुझाए रे
आसमान को चीरके, धरती पे बारिश आए रे।

पानी का चक्र चलता है
समय का पहिया चले है।जैसे
यादों को दोहराए रे
सबकी प्यास बुझाए रे
आसमान को चीरके, धरती पे बारिश आए रे।

धरती की ये है जान
आसमान की ये अमानत ।
सबको सींचे, सभी को पाले
सबकी प्याए बुझाए रे
आसमान को चीरके, धरती पे बारिश आए रे।

आदर्श राज
क्रमांक - 24025
कक्षा - 8

सवेरा

ओस की धवल मोती
सी बूँद, धरा के आगोश
में है समाहित,
सूर्यदेव की स्वर्णिम किरणें
फूलों की पंखुड़ियों को
खोलने को है, आतुर
पंक्षियों का मधुर कलरव
सुबह की नीरता को
चीरते हुए
वायु के शीतल मंद
झोकों के बयार में
अविचलित, अविरल
इठलाती हुई नदियाँ
के तीव्र प्रवाह में
वृक्षों के घने कतार में
शान्ति दूत की तरह
मखमली घास पर
आसन बिछाए कर रही है,
हम सभी की प्रतीक्षा
जागो ! और कर लो
जीवन में नव संचार
और, नव- स्फूर्ति का
सुखद अहसास।

प्रतिक प्रकाश
क्रमांक - 23036
कक्षा - 9

प्रकृति की राह

पहाड़ की
मोटी काई-चढ़ी चट्टान की दरार में
डोलती है, एक बरछी घास की
करती संतुलित
एक सफेद फूल के सिरे का

नहीं जानती
क्या कह कर पुकारूँ
इस कोमल ग्रीवावाले लजीले को

जरूर होगी करोड़ों वर्ष पुरानी
स्याह चट्टान से चिपकी
यह अनाम वनस्पति

अचानक एक आवाज कोयल की
लेती है होड़
दिव्य सुरीलेपन में
हवा की आवाज में

क्योंकि जानती हैं, वह
जाना पीछे-पीछे
प्रकृति की राह में है।

कुमार साहिल
क्रमांक - 25020
कक्षा - 7

मेरे जीवन के दो पहले शिक्षक

मेरे जीवन के दो पहले शिक्षक
जिन्होंने मुझको जीवन का पाठ पढ़ाया,
जीवन की हर परिस्थिति में
मुझको अडिग रहना सिखलाया ।।

वो है दो महान ज्ञानी और विद्वान
जिन्होंने मुझको दिया जीवन का ज्ञान ;
वो दो शिक्षक मेरे माता-पिता हैं,
जिनका ईश्वर से भी ऊँचा है स्थान।

चिंतक पिता ने मुझको पर्वत-सा मजबूत बनाया
जीवन की हर परिस्थिति से, लड़ना मुझको सिखलाया।
मां ने मेरा हौसला बुलंद बनाया और
हर मुसीबतों का डटकर सामाधान करना सिखलाया।

ये दो मेरे शिक्षक हैं महान
जिन्होंने बढ़ाई मेरी शान
इसीलिए करता हूँ मैं उनका सम्मान
लगाकर अपने तन-मन और प्राण।

रिशु कुजूर
क्रमांक - 25056
कक्षा - 7

राह एक काँटा

राहों की एक लकीर पड़ी हैं
कानन से भी निकल पड़ी हैं
सरितों से भी यह बड़ी है
उसी के ऊपर लेटी पड़ी है

मैदानों में इसका सुदृश्य देख
लगता फनों की झुण्ड गड़ी हैं
भूधर पर धाक जमाए जैसे
समय की यह घड़ी हैं

काट-काट कर तरुओं को भी
प्रदूषण बढ़ानी पड़ी है
आखिर राह को जाने के लिए
उनकी भी राह बनानी पड़ी है

क्या इसमें भी रहस्य गड़ी है
मंजिल दिखानी नहीं हम यह
भटकती रहती हमारी चाह
मेरी लक्ष्य में डाल देती डाह

इसी में बीत जाती सारी माह
कोई नहीं पर इसका गवाह
क्योंकि राह की खुद है एक राह
मंजिल की इसको नहीं है चाह

फिर हमें क्यों देगी लक्ष्य के लिए छाह
बोलती, तू जहाँ चाह वहीं राह

भरत मेहता
क्रमांक - 22024
कक्षा - 10

सपना

मैं कुछ बड़ा हुआ तो
देखा एक अनोखा सपना।
मेरी उम्र छोटी थी पर
मन को बना लिया था अपना।

यह मेरा सपना था या अपना
मन में बार-बार मैं लाता।
और अपने-आपको खुश
करने के लिए मन बहलाता।

मैं बचपन से हूँ तेज
पढ़ने में मन खुब लगता ।
अपने मेहनत का फल
मुझे अवश्य मिल जाता।

मेरा सपना है कि
मैं कुछ बड़ा कर पाऊँ
पापा-माँ की इच्छा पूरी कर पाऊँ
और मैं सोते हुए लोगों को जगाऊँ

उनको सही रास्ते पर चलना सिखाऊँ
यही है मेरा अरमान
अभी तो उम्र छोटी है
पर बहुत है मेरा काम

बड़े होकर करूँगा
सच्चे दिल से सारे काम

भरत मेहता
क्रमांक - 22024
कक्षा - 10

होस्टल की यादें

बीता था दिन, बीस जून उन्नीस का,
छोटे से मन में डर था गहरा-सा
छोड़ कर घर, माँ-बाबा का आँगन,
आया था होस्टल

पहली रात आँसू से भीगी थी चादर,
सोचता था - काश भाग जाऊँ बाहर।
कमरा बड़ा पर दिल था अकेला,
सपनों में ही देखता था अपना मेला।

धीरे-धीरे दिन सालों में बदलते गए,
खुशियाँ, दोस्ती के रंग के खिलते गए
खेल के मैदान, पढ़ाई के पल,
हँसी के संग कटे अनगिनत कल।

चार साल बाद जब विदा का क्षण आया,
दिल ने पुराने दर्द को फिर दोहराया
दस्तक दी यादों ने, आँसू छलक पड़े,
“दोस्तों, अलविदा!” शब्द भी अटक पड़े।

अब वो हॉस्टल, वो कमरे, और दोस्त,
सपनों में आते, बन जाते संसार
छोटी सी उम्र में सिखी ये बात
यादें ही होती है दिल की सौगात

देवनन्दन मुर्मू
क्रमांक - 22073
कक्षा - 10

आज के स्टुडेंट

आज के स्टूडेंट
मुँह में लगाते हैं क्रीम पर्मनेंट
छिड़कते हैं सेंट
पहनते हैं सर्ट और पैंट

आज के स्टुडेंट
क्लास में रहते हैं एब्सेंट
परीक्षा में लाते हैं 0 परसेंट
नहीं कर पाते हैं डेवलपमेंट

आज के स्टुडेंट
लड़ाई में है टैलेंट
रोज करते हैं एक्सिडेंट
बन जाते हैं हॉस्पिटल के पेसेंट

आज के स्टूडेंट
कॉलेज नहीं, जाते हैं रेस्टोरेंट
जहाँ लगाते हैं 440 का केस
वहाँ भी करते हैं एंटरटेनमेंट

आज के स्टूडेंट
अपने को समझते है इन्टेलिजेंट
बनना चाहते हैं प्रेसिडेंट
पर बन जाते है कहीं के सर्वेंट
आज के स्टुडेंट।

सुरज कुमार
क्रमांक - 22011
कक्षा - 10

श्री कपिल चौधरी
कोषपाल

नेतरहाट आवासीय विद्यालय
72वाँ स्थापना दिवस–2025
की हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री रामवचन रजक
प्रधान भण्डारी

प्रकृति

पेड़ हरे-भरे हैं, जैसे कुछ कह रहे हैं।
पेड़ बड़े-बड़े है, बहुत सुन्दर लग रहे हैं।
छाँवदे रहे हैं, मदद कर रहे हैं
चिड़ियों का घर है, इनके बड़े-बड़े जड़ हैं।

फल हमें देते हैं, बड़े स्वादिष्ट लगते हैं।
मत काटो इन्हें, ये साँस भी लेते हैं
लंबे-लंबे भी हैं, छोटे-छोटे भी हैं
घर में कुछ लगे हैं, कुछ बाहर भी लगे हैं

ठंडी हवा चलने लगी, ये इधर-उधर हिलने लगे।
देखने में ऐसा लगा, पेड़ जैसे नाच रहे हैं।
चिड़ियाँ भी गाने लगी, पेड़ भी नाचने लगे।
दोनो जब मिल गए, बहुत सुन्दर लगने लगे।

इसी में जब बारिश हो, छोटे-छोटे बंद गिरे।
फूल भी खिलने लगे, पेड़ भी हँसने लगे।
आकाश में बादल हो, नीचे हरे-हरे घास
चिड़ियों की आवाज सुन, तब दिल को मिले आराम।

नीचे छोटे-छोटे फूल, पेड़ों पर हैं फल लगे ।
उपर है चिड़ियाँ, और बारिश के बूँद गिरे

इसी में जब धूप छाए, आसमान में इंद्रधनुष आए
चमक जाए मौसम, तो हम भी खुश हो जाए।

हरे-हरे पत्तों को देखो, कितने प्यारे लगते हैं।
इन पत्तों को छूकर देखो, कितने मुलायम लगते हैं।
इसी में जब ठंड आए, शाम का समय हो जाए।
चिड़िया अपने घर को आए, सबकुछ शांत सा हो जाए।

जैसे-जैसे रात आए, सबकुछ चुप-चुप सा हो जाए।
पेड़ भी सोने को जाए, धीरे-धीरे सब सो जाए।
धीरे-धीरे नींद आए, इकदम से सन्नाटा छाए।
धीरे-धीरे चांद आए, फिर जल्दी से सुबह हो जाए।

सारे, पेड़-पौधे जागे, आपस में कुछ बात की।
ऊपर देखा सूरज था, तो लग गए अपने काम में।
ऐसे थे कुछ पेड़ हमारे, , बहुत मेहनत करते हैं।
प्रकृति बहुत सुंदर है, ये बात तो बिलकुल सच्ची हैं।

सौम्या समृधि
क्रमांक - 24110
कक्षा - 8

माता-पिता है ये

माँ की ममता, पापा का प्यार
ये दोनों हैं मेरे जीवन का सार
इनसे ही मिलता लाड़-दुलार
इनमें ही बसता मेरा संसार

हमारे नखरे उठाते हैं ये ।
हमें लोरी सुनाते हैं ये।
हमें चलना सिखाते हैं ये ।
हमें संसार दिखाते हैं ये ।

ममत्व की धारा है ये।
ख्वाहिशों को पूरा करने वाला
टूटता हुआ तारा है ये।
मेरे जीवन का अनमोल सितारा है ये।

दोनों मिलकर
सही राह दिखाते हैं।
अपने पैरों पर
चलना सिखाते हैं।

करुणा की धारा है, जहाँ
जीवन का सार है वहाँ
माता-पिता ऐसी है मूरत
जिनके चरण है खूबसूरत

धिक्कार हैं उन पर जो कहते
माता-पिता भगवान नहीं।
उनलोगों को कौन बताए
इनके बिना संसार नहीं।

बनना है श्रवण बनो!
न कि दिखावा का पात्र
श्रवण जैसे कुछ ही है
इस संसार में मात्र!

संत कुमार शर्मा
क्रमांक - 24002
कक्षा - 8

कलयुग का अंधकार

कलयुग का अंधकार छाया है
सत्य की अनुपस्थिति में जीवन माया है
हृदय की पीड़ा कौन समझेगा ?
आत्मा की पुकार कौन सुनेगा ?

प्रकाश की तलाश में भटकता मन, कलयुग
के अंधकार में।
आशा की किरणें ढूँढता हूँ, कलयुग
के अंधकार में।

अंधकार में जीवन की गति रुक -सी गई है,
रोशनी की किरणें धुँधली सी हो गई है,
अंधकार की पहुँच हर दिल तक है,
जिसे किरणें अब भी जगा सकती है।

कृतिका कुमारी
क्रमांक - 22106
कक्षा - 10

बेरोजगारी कैसे बनी महामारी

सरकारी नौकरियों की कई पद खाली है
छात्रों ने भी फॉर्म भर डाली है।
परीक्षा के लिए खुद को कर रहे है तैयार,
बेसब्री से है उन्हें परीक्षा का इंतजार,
परंतु स्थगित हो रही है परीक्षा बार-बार,
जब परीक्षार्थियों ने इस पर विरोध जताया,
तब बड़ी मुश्किल से परीक्षा की बारी आई।
परीक्षा ने लोगों की धूमिल उम्मीदें पुन: जगाई।
परीक्षा समय से हुई नहीं जिससे
एक सीट के लिए परीक्षार्थी हुए कई हजार,
शेष छात्र रह गए बेरोजगार
उन्होंनें पुन: खुद को परीक्षा के लिए किया तैयार
अगली वैकेंसी का वे कर रहे थे इंतजार
हार मिली उन्हें सिस्टम के खिलाफ बार-बार
इतने में योग्यता की उम्र हो गयी पार
इससे युवक हुए निराश
क्योंकि टूट चुकी थी उनकी नौकरी की आश
किसी तरह मन बनाया मजदूरी का
सभी ने उड़ाया उसका मजाक
हुआ नहीं मजाक उससे बर्दाश्त
हार कर वह दुनिया से
हो गया वह मानसिक रूप से बीमार
सरकार एवं समाज संयुक्त रूप से हैं इसका जिम्मेदार
महामारी बन गई बेरोजगारी कुछ इस प्रकार ।।

मंजीत कुमार
क्रमांक - 20076
कक्षा - 12

स्टॉक मार्केट

कैंडल तो देखी है सबने
दिवाली दिन घर में अपने।
मैं दूसरे कैंडल के बारे बताता हूँ
स्टॉक मार्केट का राज समझाता है।

कभी लाल कभी हरा
इस कैंडल का राज हैं बड़ा
समझ सको तो खेल लो और
हो जाओ मार्केट पर खड़ा ||

स्टॉकों में देख उछाल
लोगों में हो गया बवाल।
गिराव की दशा देख
ट्रेडर बोले जल्दी बेच ॥

उछाल गिराव का यह सिलसिला
रहता है जारी।
कायदे और नुकसान की
होती रहती है तैयारी।।

मार्केट की ऐसी है माया
जो किसी को न भाया।
मुझे किसी ने यह बतलाया
इसे कोई समझ न पाया ॥

ओम शंकर
क्रमांक - 23040
कक्षा - 9

पैसा

कागज का वो छोटा टुकड़ा
जिसे लेते कोई न मुकरा।
न जाने क्या है इसमें
जो किसी को भी कर ले वश में

मुझे तो ये पता चला
मोटा कागज जैसा होगा।
न जाने ये कैसा होगा ?
टुकड़ा यह पैसा होगा।

पैसा न तो उठाता है
न यह गिराता है
सबको रुतबा दिलाता है
क्योंकि पैसा यह कहलाता है

पैसा न होने पर
सब कहे भईया - भईया।
इसे देखकर तो
रिश्तेदार भी बदले अपना रवैया।

रिश्वत हो या भीख
लोगों को कब मिलेगी ये सीख
पैसा ही न होता सबकुछ
जिसे देखकर लोग बन जाते हैं दूसरों की पूँछ।

बच्चे के कपड़े से लेकर
मुर्दा के कफ़न तक
होता है इसका उपयोग
इसलिए कहा जाता है न करो इसका दुरुपयोग।

ओम शंकर
क्रमांक - 23040
कक्षा - 9

पिता है, तो

पिता है, तो सारे सपने हैं
पिता है, तो दुकान के सारे खिलौने अपने हैं।
पिता है, तो माँ का सुहाग है,
पिता है, तो जीवन में राग है।

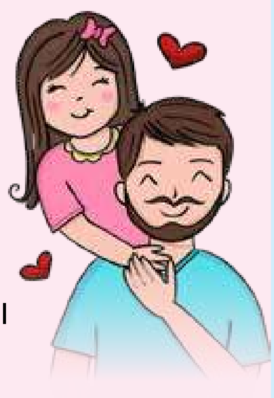

पिता है, तो मकान है,
पिता है, तो शान है।
पिता है, तो पूरी दुनिया है
पिता है, तो दुनिया की सारी खुशियाँ हैं।

पिता है, तो हर सपना पूरा है,
पिता न हो, तो, जीवन भी अधूरा है।
पिता खुद नहीं खातें, लेकिन बच्चों को खिलाते हैं,
खुद के सपनों का त्याग, बच्चों के सपने सजाते हैं।

पिता भले ही शाम को थके घर आते हैं
चेहरे के दुःख को छुपाते हैं, बच्चों के देख मुस्कुराते हैं।
पिता धूप में तपते हैं, बच्चों का भविष्य बनाते हैं
जब बच्चे आवाज लगाते हैं, तो भागे चले आते हैं।

पिता है, तो भाषण है, अनुशासन है,
पिता से घर का राशन है।
पिता है, तो आँखो में अरमान है
पिता है, तो जीवन में उड़ान है
पिता है तो उम्मीद है, विश्वास है,

मो. कमरान असलम
क्रमांक - 25013
कक्षा - 7

मैं सोच रही हूँ

सोच रही हूँ कि भूल
जाऊँ बीती बातों को या
याद रखूँ बीती बातों कों
सोच कर जिसे कभी-कभी,
फुट-फुट कर रोती हूँ
मैं याद रखूँ उन बीती बातों को,
या याद रखूँ उस पूल को,
जो दे जाता है आँखों में आँसू
और होठों में मुस्कान
मैं सोच रही हूँ कि क्यों भूला
नहीं जाता मुझसे अब तक
उन यादों को जिसे सोचती रहती हूँ
और मैं भूल जाती हूँ आज को
बीती बातें होठों में मुस्कान कम
और आँखों में आँसू ज्यादा लाती
हैं। मैं जानती हूँ, कल को भूल
कर आगे बढ़ना जरुरी है
मैं सोच रही हूँ कि भूल
जाऊँ बीती बातों को या
याद रखूँ बीती बातों को!

कंचन कुमारी
क्रमांक - 22103
कक्षा - 10

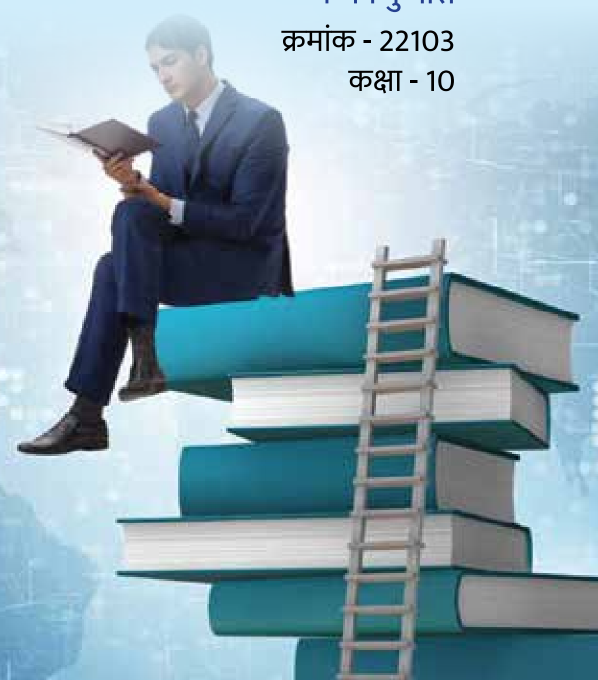

बचपन की यादें

याद आते हैं वो दिन जब हम नन्हें-मुन्हें बच्चे थे
मन से बड़े ही अच्छे थे पर अक्ल के थोड़े कच्चे थे
वही वो दिन थे जब बचकानी हरकतों से सबका दिल जीत लिया करते थे,

कदों से थोड़े छोटे थे पर शरारतें बड़ी-बड़ी करते थे
आज भी याद आते हैं वो दिन जब हम नन्हें-मुन्हें बच्चे थे
वही छोटे से गाँव में वही पेंड़ की छाँव में हम झूला, झूला करते थे,

बेसब्री से इंतजार करते थे उस दिन का जब हमारी छुट्टियाँ हुआ करती थी,
सुबह की मनमोहक किरणों में हम कँचे खेला करते थे,
नदी की ठंडी लहरों में हम डुबकियाँ लगाया करते थे
वही वो प्यारे दिन थे जब हम नन्हें-मुन्हें बच्चे थे।

गौरव हँस
क्रमांक -25033
कक्षा -7

हमारी दिनचर्या

घंटी बज गई उठ गए हम,
भागे-भागे ओवल को आए
फिर दो चक्कर दौड़ लगाए हम।
पी.टी. से आने के बाद
नाश्ते की आई याद।
नाश्ता करके निकले सम्मेलन की ओर
रास्ते में देखा इतनी हरियाली,
मन में छा गई खुशहाली।
सम्मेलन में गीत गाकर,
शिक्षक का आशीर्वाद पाकर।
चले गए विद्यालय, कर ली कक्षा पूरी,
दिन है अभी अधूरी
लगी घंटी भागे हम,
जल्दी-जल्दी आश्रम।
दोपहर का खाना खाकर

करे स्वाध्याय ध्यान लगाकर।
शाम की घंटी सुनकर मैदान पहुँचे हम,
आज की सुबह हुई खत्म
रात है होने का आई
सीनियर ने घंटी बजाई।
हम स्वाध्याय को बैठ गए,
हाथ जोड़कर ध्यान लगाए।
पाकशाला की घंटी सुनकर,
मन में खाने की आई बात,
हो चुकी है बहुत रात।

मो. कमरान असलम
क्रमांक - 25013
कक्षा - 7

माँ की ममता

जब आँख खुली तो अम्मा की
गोदी का एक सहारा था,
उसका नन्हा-सा आँचल मुझको
भू-मंडल से भी प्यारा था।

मेरी मेहनत कैसे रंग लाती
अगर तेरी दुआ असर न दिखाती
तुझसे कभी मैं कुछ कहता नहीं
पर अकेला होने से डरता हूँ।

मैं उसका राजा बेटा था
वो आँखों का तारा कहती थी
ऊँगली पकड़ के चलाई थी
पढ़ने विद्यालय भेजी थी

आज मेरी सांस का हर कण
जिसका ऋणी है
वो ! मेरी माँ है, मेरी माँ है।
तुझसे कभी मैंने कुछ कहता नहीं
पर अकेला होने से डरता हूँ
हर घर में माँ की पूजा हो
ऐसी आवाज उठाता हूँ
मैं भारत की हर माँ के
चरणों में शीश झुकाता हूँ

आज भले ही हवा में उड़ता हूँ
पर पाँव जमीन पर रखता हूँ
मुझे अच्छे-बुरे का फर्क
इसका श्रेय माँ !
बस तुझे ही जाता है।

मेरी मेहनत किस कदर रंग लाती,
अगर तेरी दुआ असर न दिखाती
तुझसे कभी मैं कुछ कहता नहीं
पर अकेला होने से डरता हूँ।

गौरव कुमार वर्मा
क्रमांक - 25042
कक्षा : 7

कौन होता है पिता?

कंधे पर बैठाकर
मेला बाज़ार घुमाने वाला,
अँगुली पकड़कर अपने बच्चे को
चलना सिखाने वाला होता है पिता।
अपने बच्चे की खुशी के लिए
चाँद तारे तोड़ लानेवाला,
अपने बच्चे को पढ़ाने के लिए,
दिन रात एक कर देनेवाला होता है पिता।
अपने बच्चे के लिए,
कोल्हू का बैल बन जाने वाला,
अपने बच्चे को खाना खिलाकर.
खुद न खाना खाने वाला होता है पिता।
अपने बच्चे को पालने के लिए,
खून-पसीना एक कर देनेवाला,
अपनी जान से ज्यादा
अपने बच्चे की परवाह करने वाला होता है पिता।

नयनदीप साहु
क्रमांक - 25015
कक्षा - 7

कविता क्या लिखूँ मैं ?

जमाने बीत गये
कविता निकली ही नहीं अंदर से
आज आकर कुछ लिखने बैठा हूँ
लिखने बैठा हूँ पर लिखूँ क्या ?

किसे याद करूँ मैं
किस पर कविता लिखूँ मैं
हे मेरे मित्र तुम पर या
प्रकृति पर लिख डालूँ मैं?

मैं बहुत ऋणी हूँ 'माँ' का,
उस पर कविता लिखूँ मैं
लेकिन नेतरहाट मेरा जीवन है,
उसे कैसे भूल जाऊँ मैं?

मुझे कुछ समझ नहीं आता,
मैं क्या लिखूँ ?
सोचते - सोचते सो जाता हूँ
दूसरी दुनिया में खो जाता हूँ

अब भी मुझे समझ नहीं आता,
आखिर मैं लिखूँ क्या ?
लेकिन आज समझ में आया
मैंने लिखी एक कविता।

हरि सरदार बिरुवा
क्रमांक - 24098
कक्षा -8

बापू

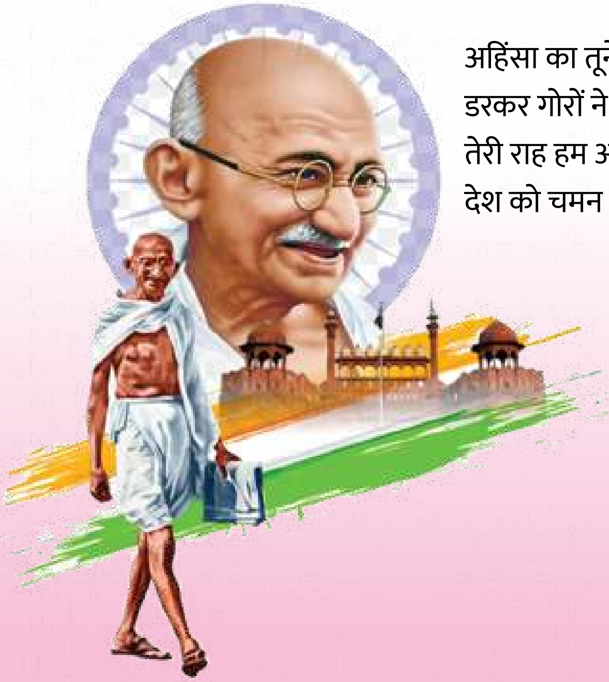

बापू तेरे कितने उपकार
हम नहीं सकते उन्हें उतार,
देश को तूने किया था एक
मानव था तू बड़ा ही नेक

हमारी खातिर जेल गया तू
पीड़ा सारी झेल गया तू,
सत्य अहिंसा की ज्योति जलाई
सबसे अच्छी राह दिखलाई।

अहिंसा का तूने तीर जो छोड़ा
डरकर गोरों ने भारत छोड़ा,
तेरी राह हम अपनाएँगे
देश को चमन हम बनायेंगे।

सोहम कुमार
क्रमांक - 25060
कक्षा - 7

कविता - मन की भावनाएँ

मन का विश्वास ये कहता है,
साहस जिसमें भी रहता है।
जीवन पथ पर वो थकता नहीं,
मंजिल से पहले रुकता नहीं।

न जुल्म किसी पर करता है
न जुल्म किसी का सहता है
न झूठ से रिश्ता रखता है
बस सच्ची बात ये कहता है।

रिश्तों की डोरों पर चलने वाला,
ममता के प्यार में बहने वाला।
जीत की चाह को रखने वाला,
वीर है वो या कोई मतवाला।

प्रयाग कुमार तिवारी
क्रमांक - 25011
कक्षा -7

माता-पिता का प्यार

जगमग हो गया सारा संसार
जब पाया माता-पिता का प्यार
जब होता था मुझे बुखार,
माँ सहलाती बार-बार ।

पिताजी का स्नेह-सत्कार,
भाता मुझको बार-बार।
माता-पिता का दिया संस्कार,
मान बढ़ाता मेरा अपार

सिर पर हो जब बोझ सवार,
तब माँ करती मुझे दुलार
माँ के आँसू की कीमत अपार,
रोने से उजड़ा संसार ।

सचमुच जगमग करता यार,
माता-पिता का सच्चा प्यार ।
जगमग हो गया सारा संसार,
जब पाया माता-पिता का प्यार ।

भुपेश कुमार महतो
क्रमांक - 25053
कक्षा - 7

कलयुग की अच्छाई

समय का पहिया यूँ ही, चलता जाएगा
कहीं अंधेरा, कहीं उजाला मन को भाएगा
पर बनना न तुम बुराई का साया
आज भी दुनिया में अच्छाई है समाया ।

भले ही भीड़ में गुम हो रहा है इंसान
पर आज भी कोई बढ़ा रहा है सम्मान
गलियों में देखो, कही मंदिर-मस्जिद में देखो
नेक दिल इंसान, बसा है सबके दिल में ।

कोई भूखे को रोटी खिलाता
कोई प्यासे को पानी पिलाता
बचपन में माँ की, वो कहानी याद है,
एक दूजे का साथ ही, सबसे बड़ी फ़रियाद है

मत सोच कि, तू अकेला है यहाँ,
मदद का हाथ, तू ही बढ़ा।
एक दीया जलाएगा, तो और जलेंगें,
अच्छाई की लौ से, सब खिल उठेंगें

अँधेरों से डर मत, तू रोशनी बन जा,
हर राह पर तू खुद को ढूंढ़ता जा
सच्चाई और मदद का, बन जा तू प्रतीक,
कलयुग में भी, तू इंसानियत का सबसे बड़ा साथी बन जा ।

नैन्सी कुमारी
क्रमांक - 22102
कक्षा - 10

बुढ़ापा

बीत गये दिन जवानी के
मेहनत और कुर्बानी के
जब तक था स्वार्थ
तब तक रहे साथ

अब बेटा नहीं कहता पापा,
जब से आया है बुढ़ापा ।
दिल में था एक अरमान,
बेटे पर था अभिमान

सोचा था बुढ़ापा में,
बनेगा मेरा सहारा ।
पर मेरी किस्मत को
था नहीं ये स्वीकार ।

बेटे ने साथ छोड़ा
सभी ने मुझसे मुँह मोड़ा
क्या है मेरी गलती, कोई मुझे बताएँ
बूढ़े माँ-बाप को बेटा क्यों सताए
तू भी एक दिन बूढ़ा होगा।

जो जैसा करता है
वह वैसा ही फल पाता है
अजीब हो गई है ये दुनिया
अब बेटा नहीं कहता पापा
जब से आया है बुढ़ापा।

आदित्य कुमार
क्रमांक - 23013
कक्षा -9

बचपन के वो दिन

बचपन के वो दिन, जिसे भूल नहीं सकते।
बचपन की वो यादें जिसे भुला नहीं सकते!
आती हैं याद वो दिन जब माँ की गोद में खेलते थे।
पापा के बाहर जाने पर, आँसू से कटोरे भरते थे।

कुछ लाते थे पापा तो दौड़ के खाने जाते थे।
अच्छे थे वो दिन जो बचपन कहलाते थे।
माँ कुछ बनाती थी तो चुपके से खा जाते थे।
खिलौनों के लिए झगड़ा हमेशा हुआ करते थे।

नींद आ जाने पर हम सपनों में खो जाते थे।
अच्छे थे वो दिन जो बचपन कहलाते थे।
दौड़ते-दौड़ते हम कहीं भी गिर जाते थे।
पापा के कंधो पर बैठकर आसमान छू जाते थे।

भूत- भूत सुनकर हमेशा डर जाते थे।
अच्छे थे वो दिन जो बचपन कहलाते थे।
मामा-चाचा का फर्क समझ नहीं आता था।
भैया की कॉपी फाड़ने में मज़ा बहुत आता था।

पढ़ने के नाम दूर भाग जाते थे
अच्छे थे वो दिन जो बचपन कहलाते थे!
अच्छे थे वो दिन जो बचपन कहलाते थे!

शिवम कुमार
क्रमांक - 25070
कक्षा - 7

सपनों की उड़ान

मत रुकना तू हार के डर से,
मत झुकना तू दुनिया की नज़र से
जिसने ठानी जीत का ठान,
उसके सपनों को मिलता आसमान।

कठिनाइयाँ तो आएँगी राह में
आँधिया भी टकराएँगी चाह में।
जो थक गया, वही हार मानता
जो डटा रहा, वही जीत जानता।

छोटी सी चिंगारी भी जला देती है ज्योति
विश्वास से बड़ा नहीं कोई संयोग
कदम बढ़ा, हिम्मत से काम ले
तेरे भीतर छिपा तूफान पहचान ले।

सपनों को सच करने का नाम है जीवन,
संघर्ष है असली साधन ।
मंजिल मिलेगी ये तेरा विश्वास है,
राह कठिन सही पर तू खास है।

सोभित कुमार
क्रमांक - 23102
कक्षा - 9

हमारे महान शिक्षक

आगे जाने का द्वार दिखा देते हैं,
जो हमें अच्छी आदतों को सिखाते हैं,
हमें हर समय अच्छे बुरे का फर्क बताते हैं,
वो हमारे महान शिक्षक कहलाते हैं।

हर पल हमारे बारे में सोचते हैं
सफलता की राह दिखलाते हैं
हमारा हमेशा ख्याल रखते हैं
वो हमारे महान शिक्षक कहलाते हैं ।

हमें मंजिलों तक पहुँचाते हैं,
जीवन की दिशा दिखाते हैं;
हरपल हमें बेटे के समान रखते हैं
वो हमारे महान शिक्षक कहलाते हैं ।

हमें उनके बातों पर चलना होगा,
हमें उनके आदेश का पालन करना होगा,
हम सभी उन्हें, माता जी या
श्रीमान् जी कहकर पुकारतें हैं
वो हमारे महान शिक्षक कहलाते हैं।

सोहम कुमार
क्रमांक - 25060
कक्षा - 9

प्रिय दोस्त

दोस्ती कोई सौदा नहीं
जो वक्त और हालात से टूट जाए
ये तो वो रिश्ता है
जो बिना कहे भी बहुत कुछ कह जाए।
सच्ची दोस्ती वो है
जो हँसी में तालियाँ बजाएँ
जब राह अंधेरी हो
तो दीपक बनकर रोशन कर दे
और जब मंजिले दूर हो
तो हौसला बनकर साथ चल दे।
सच्चा दोस्त आईना होता है
सच बताता है, झूठ नहीं
गलती पर टोक देता है
पर दिल से कभी रूठता नहीं
दुनिया के मेले मे
जब हर कोई साथ छोड़ दे
तब वही दोस्त है,
जो हाथ पकड़कर कह दे
'डर मत, मैं यहाँ हूँ'
दोस्ती का मतलब बस यही है
फायदा - नुकसान से परे
दिल से से दिल का बंधन
जो उम्रभर साथ चले ।

अमर उराँव
क्रमांक- 23092
कक्षा - 9

मित्र

जिसका बना नहीं पाता मैं चित्र
क्योंकि देखने में लगता है विचित्र
पसंद उसका मुझे है चरित्र
पर वह खुद को मानता है पवित्र
कैसी है वह एक हया
जिसपर आता है सबको दया
काम तो उसका है अनोखा
नही देता है किसी को धोखा
खाना में प्रतिदिन खाता है चोखा
लड़ने का नहीं मिलता उसे मौका
ज्ञान तो उसमें है भरा
पर देखकर लगता है बेसहारा
खाना तो वह कम खाता है
पर देर तक चबाता हैं
लगा कर अपना ज्ञान
पढ़ाता है मुझको विज्ञान
सबका करता है सम्मान
ऐसा है उसका चरित्र महान।

आयुष कुमार
क्रमांक- 25095
कक्षा - 7

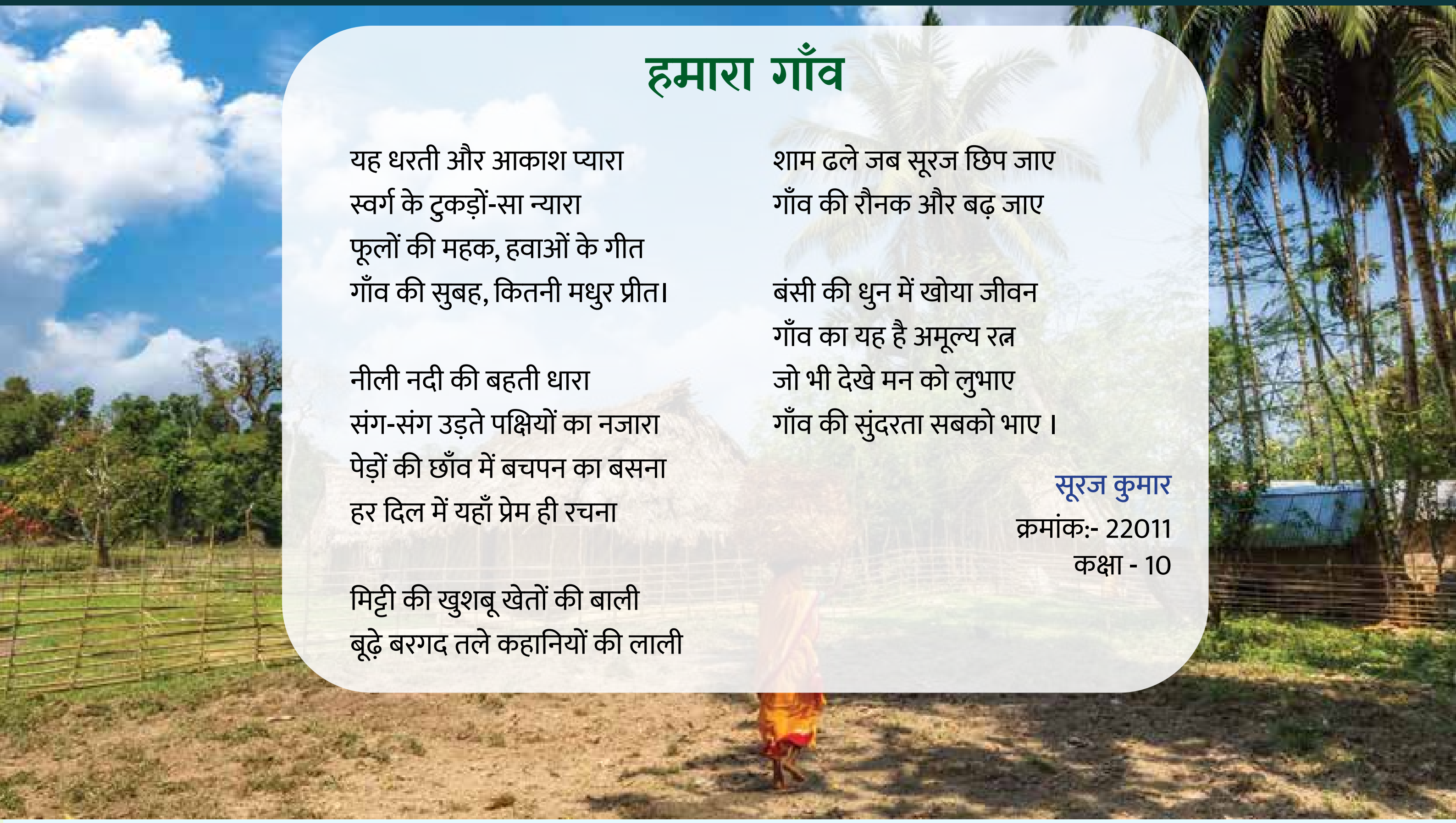

हमारा गाँव

यह धरती और आकाश प्यारा
स्वर्ग के टुकड़ों-सा न्यारा
फूलों की महक, हवाओं के गीत
गाँव की सुबह, कितनी मधुर प्रीत।

नीली नदी की बहती धारा
संग-संग उड़ते पक्षियों का नजारा
पेड़ों की छाँव में बचपन का बसना
हर दिल में यहाँ प्रेम ही रचना

मिट्टी की खुशबू खेतों की बाली
बूढ़े बरगद तले कहानियों की लाली
शाम ढले जब सूरज छिप जाए
गाँव की रौनक और बढ़ जाए

बंसी की धुन में खोया जीवन
गाँव का यह है अमूल्य रत्न
जो भी देखे मन को लुभाए
गाँव की सुंदरता सबको भाए।

सूरज कुमार
क्रमांकः- 22011
कक्षा - 10

मैं और मेरी विश्रृंखलता

मैं पास हूँ, लेकिन किसी के साथ नहीं,
मैं हूँ, पर किसी का खास नहीं,
मैं हूँ, जिसका किसी को एहसास नहीं,
मेरी भी किस्मत है, जिस में मुझ जैसी अच्छी कोई बात नहीं;
मैं हूँ हरेक के साथ, पर नयी ये कोई बात नहीं
मेरे भी दोस्त हैं कई, पर उनको मेरी दोस्ती पर विश्वास नहीं।
इस जग में सब रावण हैं, राम का मिलना आसान नहीं,
इस जग में बुरे लोगों से ज्यादा अच्छे लोगो पर विश्वास नहीं,
यहाँ सब सफलता चाहते हैं, पर मेहनत सबके बस की बात नहीं,
यहाँ कुछ व्यक्ति बुरे है जरूर, पर हरेक का चरित्र खराब नहीं,
यहाँ सब व्यक्ति अच्छे हैं, ऐसी तो कोई बात नहीं,
आज सभी दिखावा करते हैं, क्योंकि उन्हें खुद पर विश्वास नहीं
जानता हूँ कि मैं अच्छा इंसान नहीं, पर किसी का गुनहगार नहीं,
मैं जिंदगी को साधारण रखना चाहता हूँ, पर ये इतना आसान नहीं,
ये जिंदगी आसान है, जब तक नई जिंदगी की शुरुआत नहीं,
जिंदगी एक प्रश्नपत्र है, जब तक इसके हल का नामोनिशान नहीं,
मैं सोचता हूँ मेरी जिंदगी कठिन है, लेकिन ये सच बात नहीं,
मैं कह तो दूँ नई कविता, पर इसमें पुरानी वाली बात नहीं।

मंजीत कुमार
क्रमांक - 20076
कक्षा - 12

बिका हुआ आदमी

एक बिका हुआ आदमी,
सबसे पहले अपना ज़मीर बेचता है,
और अपनी आत्मा के मोल पर -
अपने परिवार और समाज को भी बेच देता है।
जब सारी दुनियाँ,
अतीत में -
उस बिके हुए आदमी के वजूद पर भरोसा करती थी;
लेकिन अब उसे चन्द सिक्कों के लिए,
अपने और अपने समाज का मोल लगाने का मूल्य मिलता है;
इंसानियत और ईमानदारी गिरवी रखने वाले -
उस तथाकथित आदमी के-
केवल निजी जीवन मूल्यों के बोल ही लगाते हैं?
बल्कि, मिल-बाँटकर खाने की कीमत पर—
अपने वर्त्तमान के समस्त शागिर्दों का मोल भी लगा देता है-
आज उसी अतीत के आईने में हम भी झांके-
क्या हम उस गुनाह के साक्षी होकर भी चुप रहें?
जब चुप रहने की कीमत पर-
सभी हमारे वर्त्तमान की बलि चढ़ा देते हैं।
निजी स्वार्थ वश चुप रहने की कीमत -
याद दिलाता है कि
अन्याय करनेवाले से ज्यादा दोषी अन्याय सहने वाला होता है।

राजेश रमण,
लिपिक,नेतरहाट आवासीय विद्यालय (पुस्तकालय)
[नोट-काव्य संग्रह 'दर्द-ए-वतन' (Blog-rajeshraman451.blogspot.com से साभार]

निवेदन

छोड़ दिया था घर दशहरा दिवाली पर जाना
भूल गया था अब त्योहार मनाना
लोगों का एक सवाल था बहुत चुभता
"क्यों बेटा क्या कर रहे हो आज कल"
जवाब नहीं था इसका मेरे पास
खुद को निरुत्तर पाकर होता था बुरा एहसास।।
मैं भी चाहता था कामयाब होना
फिर प्रण किया खुद से एक दिन
कामयाब होकर है घर जाना ।
आसान नहीं था सफर उतना भी
जितना अक्सर लोग समझते हैं
उन्हें क्या पता जो सिर्फ बाहर से झाँका करते हैं
खोई नींद, खोया चैन और सभी किल्लत को किया बर्दाश्त मैं
तब जाकर बना हूँ आज कुछ खास मैं
क्या पता उन्हें कि मैंने क्या-क्या तकलीफें उठाई हैं.
पर उन्हें इन सब बातों से मतलब कहाँ
उन्होंने तो सिर्फ तानें सुनाई है
जिसने मुझे बार-बार खामोश किया
पर कहीं न कहीं उनके तानों ने ही मुझे प्रेरणा दी
अंततः मैंने उन्हें सफलता पाकर खामोश किया
कुछ ने कहा यह तो तय था होना
कुछ ने कहा वो तो किस्मत ने साथ दिया
पर हाँ किस्मत को भी तो मैंने ही बाध्य किया
मेरी मेहनत के आगे किस्मत ने भी मानी हार
और थककर सफलता को मेरी किया स्वीकार
यहीं नहीं रुके वो लोग, कुछ ने कहा ये भी कोई सफलता है।
पता नहीं क्यों आज उन्हें यह खलता है
शिखर पर चढ़ते वक्त लोग कई बार फिसलते हैं
निवेदन है यह मेरा आपसे
कभी न किसी का मजाक बनाना न ही किसी को ताने सुनाना
वरना मुश्किल न हो जाए कहीं चेहरा छिपाना।

मंजीत कुमार
क्रमांक - 20076
कक्षा - 12

यह जीवन ही अहंकारी है

एक मानव जब चलता जाता
देखा दुनिया प्यारी है
पर एक वृक्ष पर ध्यान दिया
लगता है उस पर दुख सारी है

रोते हुए उस तरु ने कहा
जो संकट उसमें भारी है
दुख में सब कह ही दिया
यह जीवन ही अहंकारी है

हमने तुमको क्या न दिया
पूरी जरूरत है
पर तुमने हमको दुखी किया
यह जीवन ही अहंकारी है

काट-काट कर खत्म किया
यह काम आज भी जारी है,
यह गलती भी तुम्हारी है
यह जीवन ही अहंकारी है

हमारी साँसें को छीनकर
बनते सब अत्याचारी है
मत भूलों यह बात जरा भी
अगली बारी है तुम्हारी

यह सुन मानव के बदन में
कंपन अभी भी जारी है
पर कुकर्म करने को इनको
न जाने क्या बीमारी है

मानव का काँप उठा बदन
सुनकर तरू की यह गर्जन
करुणामय में कहा मानव ने
कैसा है हमारा मन पापी

हमने यह न सोचा कि
यह धरती कितनी न्यारी है
हमने ही नर्क बनाया
सारी गलती हमारी है

देख अपना जीवन वह
यह कितना ही भयकारी है
पता चला यह बात उसे
यह जीवन ही अहंकारी है।

श्रीकांत भगत
क्रमांक- 23082
कक्षा - 9

उजाला

निकला सूरज हुआ सवेरा
छिपी चाँदनी हुआ अँधेरा
रोशन, रोशन हुआ बसेरा
हटा अँधेरा दिखा सवेरा ।

चाँद ने की छुट्टी
सूरज को दे दी ड्यूटी
बादलों ने घेरा आकाश सारा
तारों ने नभ को सँवारा

उजाले ने बसाया डेरा
अँधेरा को भगाया सवेरा
किरणों से गरमाहट आई
जल में नरमाहट आई

चिड़ियों ने मिठी बोली बोली
लोगों ने घर की खिड़की खोली
मम्मी ने नाश्ता बनाया
पापा ने बच्चों को जगाया

सबने किया नाश्ता साथ में
लेके चम्मच अपने हाथ में
क्योंकि आज का दिन था रविवार
सब खुश थे जैसे हो कोई त्योहार ।

सूरज कुमार
क्रमांक - 22011
कक्षा - 10

श्रम की पूजा

श्रम की पूजा करने वाले,
आगे बढ़ते जाते हैं।
मेहनत से घबराने वाले
मंजिल कभी न पाते हैं।
श्रम से पर्वत शीश झुकाते,
तूफान भी रुक जाते हैं
श्रम का धन ही सच्चा धन है
सभी यही सिखलाते हैं।
कभी परिश्रम व्यर्थ न जाता
दुनिया में सम्मान दिलाता।
जो श्रम से कतराते हैं
वे जीवन भर पछताते हैं

वेदान्त तिवारी
क्रमांक - 25019
कक्षा - 7

स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई

स्वतंत्रता संग्राम की पहली लड़ाई
मंगल पांडे ने विद्रोह फैलाई
विद्रोही सैनिकों को इकट्ठा किया।
ब्रिटिश ने बंगाल का विभाजन किया
इस पर भारतीयों ने उनसे बदला लिया
जब गाँधी जी का चम्पारण सत्याग्रह हुआ
जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ।
उन्होंने ब्रिटिश से बदला लिया
फिर चौरी-चौरा कांड किया
गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन अस्थगित किया
तब स्वराज पार्टी की स्थापना हुई।
साइमन कमिशन के विरोध में जुलूस हुई
जुलूस के दौरान लाला लाजपत राय की मृत्यु हुई
तब केन्द्रीय विधानसभा में बम फेंका गया
भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव को फाँसी दिया गया।
सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ
गाँधी जी ने करो या मरो का नारा दिया
जब आजाद हिन्द फौज की स्थापना हुई
सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु हुई।
तब नौसैनिकों के द्वारा विद्रोह किया गया
कैबिनेट मिशन भारत लाया गया
सीधी कार्यवाही दिवस मनाई गई
अन्तिम सरकार की विधिवत गठन बुलाई
तब हमारा देश आजाद हुआ।

ज्ञानदीप उराँव
क्रमांक - 25072
कक्षा -7

पढ़ लो बेटा, हो जाओगे पास

शिक्षक कहते हैं, कि
पढ़ लो बेटा, हो जाओगे पास
लेकिन छात्र तो समझते हैं कि
पढ़ना लिखना तो है, बकवास
अगर अभी नहीं समझ पाए,
कितना जरूरी होता है,
होना परीक्षा में पास
तो बाद में नहीं बचेगा,
समय तुम्हारे पास
लेने का भी आगे की जिंदगी में साँस
इसलिए कहते हैं, कि
पढ़ लो बेटा हो जाओगे पास।
अगर परीक्षा में हो गए पास,
तो सभी कहेंगें बेटा शाबाश
और अगर परीक्षा में ना हो पाए पास
तो सभी कहेगें ये तो है बकवास
साथ ही तुम भी रहोगे निराश
इसलिए पढ़ लो बेटा
हो जाओगे पास।

प्रवीण कुमार वर्मा
क्रमांक - 25008
कक्षा - 7

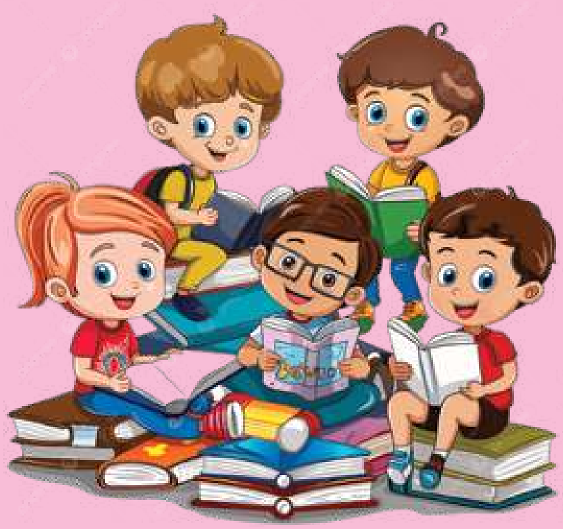

मेरी माँ

कहाँ मुझे तुम छोड़ गई माँ
बिन बताए बिन समझाए
तेरी ममता की खातिर
मैं तड़पता रहा माँ,
न दिन नजर आता
न रात दिखाई देती
जहाँ देखता हूँ बस तू ही नजर आती है।
हर चेहरे में तुझे देखता हूँ
हर तारे में तुम्हें पाता हूँ
तुम्हारा चाँद सा रोशन मुखड़ा
कभी भूल नहीं पाता हूँ
जल्दी लौट के जाओ माँ
देख तेरे जिगर का टुकड़ा रो रहा है
तेरी बिखरी यादों को बटोर रहा है।
अब मुझे सिर्फ तेरा ही गम खल रहा है।
आँखों से आँसुओं की नदियाँ बह रही है।
आँचल में छिपकर लोरी सुनना चाहता हूँ माँ
कहाँ मुझे तुम छोड़ गई माँ
बिन बताए बिन समझाए।

संजय महतो
क्रमांक - 25025
कक्षा - 7

माँ...

जो डाँट कर मजबूत बनाती है,
तो कभी प्यार करके हिम्मत बढ़ाती है।
घर चलाना आसान नहीं होता
पर पेट काटकर घर चलाती है
वही तो माँ कहलाती है।

कभी हाथ उठाकर क्रोध दिखाती है,
कभी आँचल में छिपाकर क्रोध से बचाती है।
यूँ हाथ जलाना गवारा नहीं होता
पर जो खून पसीना एक कर भी भूख मिटाती है,
वही तो माँ कहलाती है।

जो दीवार बनके अंगार से बचाती है
तो कभी अंगार बनके दीवार बनाती है।
कोई भूखा रहकर चैन की नींद नहीं सोता
पर वह भुखी रहकर भी मुस्कुराती है,
वही तो माँ कहलाती है।

सुशांत कुमार
क्रमांक - 24061
कक्षा - 8

माँ

माँ ही धरती है, माँ ही आसमान
माँ ही सबकुछ है, माँ ही भगवान।
जब भी खाना खाता हूँ,
बस आती याद तेरी है।
न जाने क्यों मुझको,
माँ ही सिर्फ भाती है ।
याद आते हैं वो दिन,
जब माँ अपनी हाथों से खिलाती थी
जब रो पड़ते थे पापा के डाँट में,
माँ ही चुप कराती थी।

कहीं चोट लग जाती थी अगर,
माँ पास बुलाती थी।
थोड़ी सी डाँटती फिर
मरहम लगाकर सहलाती थी
माँ ही धरती है, माँ ही आसमान
माँ ही सबकुछ है, माँ ही भगवान।

प्रियतम कुमार
क्रमांक - 25067
कक्षा-7

जो तुम सोच लो तो

जो तुम सोच लो तो सुई का नोक
कोबरा के डसने जैसा चोट दे सकता है,
सोच लो तो शरीर में दौड़ रहे
खून में भी जहर घोल सकता है
जो सोच लो तो बाँस की झोपड़ी
भी ताजमहल में बदल सकता है
सोच लो तो एफिल टावर से ऊँचा
कोई अजूबा बुर्ज खलिफा खड़ा हो सकता है।
जो तुम सोच लो तो एक छोटा-सा कलम
कइयों के विचार बदलवा सकती है
कोई वजाए तलवार की जगह वही
कलम इंसान को मौत भी दिलवा सकती है।
जो सोच लो तो कोई बच्चा एवरेस्ट
शिखर को भी फाँद सकता है
छोटा सा दीमक बरगद के मोटे
पेड़ को भी खोखला कर सकता है।
जो तुम सोच लो तो कोई लम्हा भी
कई दिनों की खुशियाँ दिला सकती है
नहीं तो कई सालों का प्रयास भी
किसी क्षण में पाँव तले जमीन हिला सकती है।
जो तुम सोच लो तो गाय भी
गौमाता का स्वरूप लगने लगती है
वरना साक्षात् प्रस्तुत ईश्वर भी
दैत्य के भेजे दूत लगने लगते है।
जो तुम मान लो तो हार है
जो ठान लो तो जीत है
मगर जो सोच लो तो
हर असंभव भी संभव है

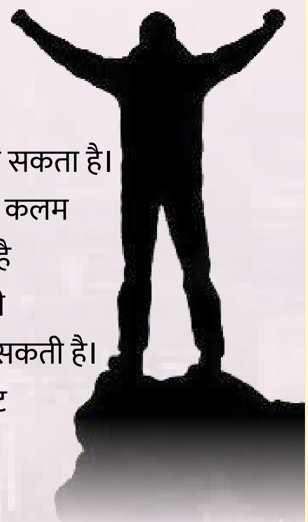

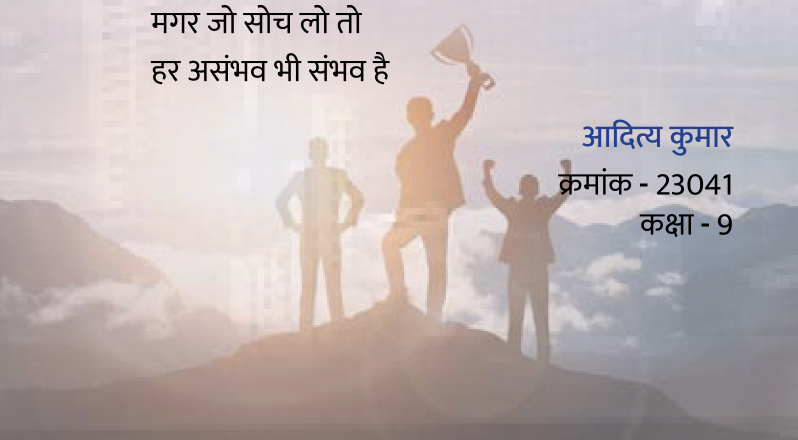

आदित्य कुमार
क्रमांक - 23041
कक्षा - 9

ये वातावरण

हरियाली भरी ये वातावरण
चहकता हुआ वो चिड़ियों का पंख
लहराती हुई वो डाली का रंग
खुशबू बिखेरती वो पुष्पों की सुगंध

छोटी पेड़ों की वो लंबी-सी छाँव
जंगल में जानवरों के वो नुकीले पाँव
बीच नदी में बहती एक काली सी नाँव
कौवे के घोंसले में काँव-काँव

पेड़ों में फलते वो मीठे फल
आसमान से गिरते वो वर्षा जल
पर्वत से दिखतें वो समुद्र तल
जीवन में उभरते खुशियों के पल

हर घड़ी बदलता प्रकृति का ये रूप
लालची लोगों द्वारा पेड़ कटने का दु:ख
पर्यावरण प्रदान करता है हमें वो सुख
जिसे कभी न पाते हैं हम भूल।

शिवम् कुमार
क्रमांक - 28052
कक्षा - 9

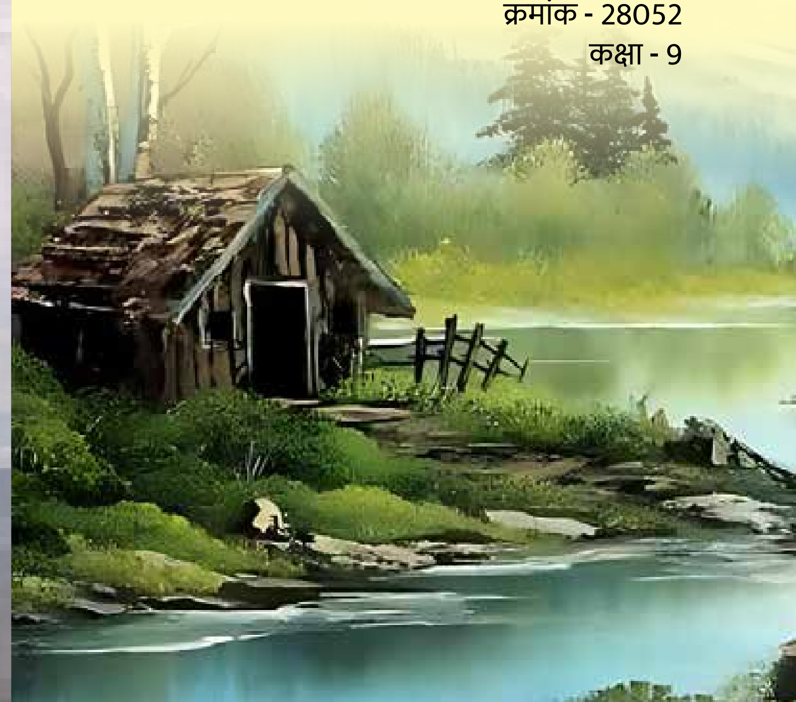

सोचता हूँ कि सर्वश्रेष्ठ बनूँ

पर वैसा कर्म नहीं कर पाता हूं।
ज्ञान तो बहुत प्राप्त किया परंतु
उसका उपयोग ही नहीं जानता हूँ।
सोचता तो कि सर्वश्रेष्ठ छात्र बनूँ
पर संस्कार ही नहीं सीख पाता हूं।
छात्रों में अहंकार नहीं होनी चाहिए
परंतु घमंड में मैं रह जाता हूं।
सोचता तो हूँ कि सर्वश्रेष्ठ वक्ता बनूँ
पर अपनी वाणी का जादू ही नहीं दिखा पाता हूँ
लोगों से आँखें मिलाने में न जाने
क्यों मैं इतना घबराता हूँ।
सोचता तो है कि सर्वश्रेष्ठ पुत्र बनूँ
पर अपनी माँ को ही नहीं समझ पाता हूँ
हाथ जोड़कर न जाने क्यों मैं
अपने पिता के चरण-स्पर्श नहीं कर पाता हूं।
एक ही तो सपना मेरा कि सर्वश्रेष्ठ बनूँ
पर वो भी नहीं बन पाता हूँ
देखता हूँ अपने माता-पिता को मैं
क्या कुछ करके दिखा पाता हूँ।

शिवम् कुमार
क्रमांक - 23052
कक्षा - 9

नन्हीं कली

नन्हीं कली मुस्काई भी नहीं
सपनों की उड़ान पाई भी नहीं ।
गुड़िया - गुड़िया खेलनी थी अभी,
पर ढो रही है जिम्मेदारियाँ सभी
शिक्षा से जीवन रौशन हो
हर कोना जैसे गुलशन हो।
बचपन को हँसने- खेलने दो
बाल विवाह को अब रूकने दो ।
बचपन का हक छिन जाता है,
पढ़ाई से मन भर जाता है
रूठे खिलौने छूटे किताब,
आँखों में सजते ख्वाब अधूरे ।
जब तक यह प्रथा रहेगी
तरक्की की राह रुकेगी
लड़की-लड़का दोनों समान,
पढ़ाई से ही बने महान ।
समाज का यह कैसा अंधकार
जहाँ बचपन होता बेकार ।
नन्हें परिंदों को उड़ने दो
उन्हें सपनों में सिमटने दो
नन्हीं कली मुस्काई भी नही
सपनों की उड़ान पाई भी नहीं।
गुड़िया - गुड़िया खेलनी थी अभी,
पर ढो रही है जिम्मेदारियाँ सभी।

रोहित कुमार उराँव
क्रमांक - 23097
कक्षा - 9

सिक्का पलटेगा

आज डोर तुम्हारे हाथों में है
कल ये छिन्न जाएँगा।
तुम जो करोगे दूसरों के साथ
ईश्वर तुम्हारे साथ भी दोहराएँगा।
सिक्का पलटेगा - सिक्का पलटेगा

आज तुम नेक रास्ते पे ना चल पाएँ
तो, घोर संकट में फँस जाएँगा
दूसरों का कर विनाश
तुम भी राख में मिल जाएँगा।
सिक्का पलटेगा - सिवका पलटेगा

हो रहा घोर कलयुग में नेक लोगों के साथ अन्याय
आततायी कर अन्याय रहे क्यों निर्भय यार (मित्र)
लेकिन एक दिन सब को कर्मों का फल मिल जाता है
इसलिए पृथ्वी गोल-मटोल कहलाता है

सुमित कुमार
क्रमांक - 24040
कक्षा - 8

हे शारदा !

हे ज्ञान की देवी, तुम हो निराकार,
सर्वज्ञ, हर मन का उपचार
विद्या की रश्मि से आलोकित तत्व,
सत्यम्, शिवम्, सुंदरम - तुमसे ही है सब ।

नदियों की धार, तुम हो वह मूल,
अगणित ज्ञान, तुम्हारी धार से
वीणा की तारों में छुपा है मंत्र,
तुमसे ही मुक्त, हर बंधन, हर नियंत्रण ।

निमिष में सृष्टि को तुम संजीवित करती हो,
अज्ञान के अंधकार को चीर उजागर करती हो।
हमें तुमसे ही आत्मा की गहरी पहचान
तुम हो विद्या का अमृत, हर नाद का अवलंब ।

तुम्हारी मुस्कान में स्वर्णिम भविष्य छिपा है,
जो तुम्हें पता है, वह सच्चाई की ओर बढ़ा है।
हे शारदा, हम सभी का उद्धार तुमसे ही है
तुम्हारे बिना यह ब्रह्माण्ड भी अधूरा-सा है।

अभिषेक कुमार
क्रमांक - 24006
कक्षा - 8

मौसमः खुशी या खुदकुशी

ये चिलचिलाती धूप, ये उबलती पवन
ये तेज़ गर्मी, और ज्वाले की तपन
ये काले बादल, ये भारी बारिश
बिजली की चमक और मेघ की शोरिश
ये कंपकपाती ठंड, ये कोहरों से भरी गलियाँ
सबका प्यारा सूरज और सुकड़ी हुई कलियाँ
ये लुभावने मौसम हम सब को भाते हैं
नई खुशियाँ नए बहार लाते हैं
गर्मियों में वो ठंडी पवन
ठंडी आइस्क्रीम और ठंडी ड्रिंक
मिटा देती है सबकी तपन
वर्षा में वो भीगी सड़क
भीगी छत और बादल कड़के
उसी बीच टी. वी. और पकौड़े
मिला देते हैं नए तड़के
नए स्वेटर और नए कंबल
गर्म बिस्तर टाल दे काम कल
गर्म चाय की चुस्कियाँ
आहा ! ला देती है मुस्कियाँ
पर ......
पर्दे के पीछे, सड़कों के नीचे
गली - कुचों में, खेत खलिहानों में
मजदूरों की मजबूरों की
ऐसी दशाएँ जिनको चर्चा नहीं है
दीवानों में अनजानों में
मजदूरों की गर्मियाँ ऐसी
ला देती है घमोरियाँ
पसीने की बारिश सुख नहीं पाते
रातों की बेचैनी रुक नहीं पाते
आइस्क्रीम खाने का मन ललचाएँ
पर मजबूरियाँ ख्वाहिशें मार जाएँ।
वर्षा की बूँदें जब गिरे छप्पर से
जगा देती है ख्वाबों के सफ़र से
वो कीचड़ भरी गलियाँ और गंदी नालियाँ
क्यों सरकार कुछ नहीं करती?
क्या करे चोरी से बनी और खा रही गालियाँ।
कभी आओ तो हमारी गलियों में
कंपकपाते बदन और मासूम चेहरे
क्या-क्या बयाँ कर जाती है,
मन होती हमारा भी है गर्म चाय को, पर
कौन है हमारा कौन बढ़ाये आय को
ये बातें बाहर की नहीं अंदर की है,
दरिया की नहीं समंदर की हैं
न लोग हमारे, न सरकार हमारी
शायद भगवान भी नहीं हमारा
यहाँ सुख पाओ कुछ देने का
मौका ढूँढ़ों दुआ लेने का
सब तुम्हारे ही भाई हैं
धूप तो वो परछाई है

(शब्दार्थ :
शोरिंग = हल्ला, शोर
दीवाना = पागल
बयाँ = बातें बताना)

अयान आलम
क्रमांक - 24005
कक्षा - 8

जीवन और हमारी मंजिल

जिंदगी की तलाश में
बढ़ते चले गए है हम
छोड़ा है किस राह पे
इससे अबतक अंजान हैं, हम
क्या हम सपनों को सच कर पाएँगें
उम्मीदों से भी ज्यादा कर दिखाएँगें
हाँ मंजिल ढूँढ़ते-ढूँढ़ते भले ही थक जाएँगें हम
लेकिन फिर भी हमेशा मेहनत को अपनाएँगें
मानता हूँ, जीवन में परेशानियाँ बहुत आती है।
लेकिन सच्चा मनुष्य वही है
जिसने लक्ष्य को साधा हैं।
वे न तो परेशानियों से डरते हैं,
न ही टूट के बिखरते हैं,
परेशानियों को गले लगाते हैं।
दुसरों को उठ के चलना सिखाते हैं,
रोते हुए को हँसाते हैं।
दुसरों के दुखों को स्वंय गले लगाते हैं
मानता हूँ सभी व्यक्ति एक जैसे ही हैं,
लेकिन जिसमें यह गुण हैं
वह व्यक्ति इस दुनिया में इंसान है।

विवेक कुमार मंडल
क्रमांक - 24012
कक्षा - 8

चन्द्रमा और सूर्यदेव की मुस्कान

एक बार की बात थी
चन्द्रमा और सूर्यदेव की पहली मुलाकत थी
दोनों ही चमचमा रहे थे खिलखिला रहे थे
एक दुसरे को देखकर मुस्कुरा रहे थे
लेकिन इन दोनों में नही था एक भी मेल
जुदाई के गम में दोनों ही घबरा रहे थे
यह कविता चाँद और सूरज की है
जो कल्पनाओं में ही एक-दूसरे से शर्मा रहे थे।
सच्चाई को छोड़े एक दुसरे से गुन-गुना रहे थे।

विवेक कुमार मण्डल
क्रमांक - 24012
कक्षा -8

यात्राएं मनुष्य को आजाद करती हैं

ऐसा माना जाता है कि ठहरा हुआ पानी गंदा हो जाता है और बहता हुआ जल निर्मल बना रहता है। यही बात हमारे लिए भी लागू होती है। एक ही स्थान पर लगातार रहने से हमारे जीवन में कुछ नयापन नहीं आ पाता है इसलिए समय-समय पर यात्राएं करते रहने से हम न केवल तरोताजा महसूस करते हैं बल्कि हमारा बाहरी दुनिया से संपर्क बना रहता है। आज का समय अपने आपको समय से साथ अपडेट करने का है और जो लोग ऐसा नहीं कर पाते हैं समाज में उसकी प्रासंगिकता कम हो जाती है। बाहरी दुनिया में हो रहे परिवर्तन को जानने का सबसे सरल-सहज उपाय है यात्रा। जब हम किसी भी नए स्थान की यात्रा पर जाते हैं तो हमें वहाँ की संस्कृति,भाषा, वेशभूषा, खानपान आदि के बारे में जानने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही हम यह भी आकलन कर पाते हैं कि समय के कितना बदलाव हमारे आस पास हो रहा है।

आज सब स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है और हम सभी अपने अपने स्व में संकुचित होते जा रहे हैं ऐसे में यात्राएं हमें न केवल स्व से मुक्त करती हैं बल्कि हमारे भीतर की संवेदनशीलता को भी बढ़ाती हैं। आज हम सभी अपनी अपनी भाग-दौड़ की जिंदगी में व्यस्त हैं। हम सब भाग रहे हैं और कहाँ भाग रहे है यह भी कई बार पता नहीं चलता है। ऐसे में हमें अपनी व्यस्तम दिनचर्या से थोड़ा-सा वक्त निकाल कर निकल जाना चाहिए किसी स्थान की यात्रा पर। दूर कहीं समुद्र के किनारे या किसी पहाड़ी क्षेत्रों या किसी ऐतिहासिक या सांस्कृतिक स्थानों में, हमें सुकून के पल मिल सकते हैं जिसकी सबसे ज्यादा जरुरत हम सबको है। एक तरह की दिनचर्या हमारे भीतर बोरियत उत्पन्न करती है और हमारी सृजनात्मकता पर भी प्रभाव डालती है इसलिए अपनी नियमित दिनचर्या को भूलकर कुछ दिनों के लिए हमें स्वयं को प्रकृति को सौंप देना चाहिए। कभी कभी प्रकृति हमें वो सिखा देती है जो अक्सर किताबें सिखा नहीं पाती हैं।

मैंने भी अपने जीवन में कई यात्राएं की और यह एहसास हुआ हुआ कि मनुष्य समय को पकड़कर नहीं रख सकता है लेकिन उसके साथ जरुर चल सकता है और अपने जीवन को गतिमान बनाए रखने के लिए यात्राएं करना आवश्यक है। जब हम किसी भी जगह की सैर में जाते हैं तो न केवल मानसिक शांति की अनुभूति होती है बल्कि हमें यह एहसास होता है कि मनुष्य जीवन क्षणभंगुर है इसलिए समय रहते ही जीवन का आनंद

ले लेना चाहिए। इस विशालकाय धरती में हमारे जैसे असंख्य लोग रहते हैं और सबको अपने हिस्से की खुशी प्राप्त करने का पूरा अधिकार है। जीवन में खुशियाँ कई तरह से आती हैं उनमें से एक है किसी नई जगह की यात्रा। आपने कई बार देखा होगा कि लोग वर्ष भर अपनी कमाई का कुछ हिस्सा संभाल कर रखते हैं ताकि वे वर्ष में कम से कम एक बार कहीं की यात्रा में जा सकें। लोगों की सोच में इस बदलाव के कारण ही आज पर्यटन उद्योग इतना फल-फूल रहा है। यह जरुरी है कि ऐसी सोच रखने वाले लोगों की संख्या बढ़े और हमारा समाज एक दूसरे का स्वागत करे और मानवों में व्याप्त दूरी कम हो।

हमारे नेतरहाट को देखिए, आज से दस वर्ष पूर्व यहाँ आने वाले पर्यटकों की संख्या नहीं के बराबर थी और आज इतने पर्यटक आ रहे हैं कि नेतरहाट के पचास से अधिक रिसोर्ट,होटल और लॉज भी कम पड़ जा रहे हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि आज की युवा पीढ़ी में देश-दुनिया की सैर करने का क्रेज बढ़ता जा रहा है। जीवन में कुछ नया सीखने के लिए यात्रा सबसे बेहतरीन उपाय माना जा सकता है क्योंकि जब हम किसी भी स्थान की यात्रा में जाते हैं तो न केवल वहाँ की संस्कृति को जानने का मौका मिलता है बल्कि हम स्वयं को नयी-नयी परिस्थितियों में ढलने का मौका देते हैं। यात्राओं से हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है और हमारे भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। वैसे तो लोग मनोरंजन और अपने काम से ब्रेक लेने के लिए भी कहीं की यात्रा में निकल जाते हैं लेकिन यात्रा समाप्ति के बाद ही पता चलता है कि यह यात्रा केवल मनोरंजन के लिए नहीं थी बल्कि स्वयं और बेहतर तरीके से जानने का अवसर भी था। कई लोग तो ऐसे भी होते हैं जो अचानक से बिना किसी पूर्व योजना के ही यात्रा के लिए निकल पड़ते हैं। इसका भी अपना एक अलग ही रोमांच है। कई लोग पूरी योजना बनाकर ही यात्रा में निकलते हैं और अपने सफ़र का भरपूर आनंद लेते हैं। निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि यात्रा करना जरुरी है चाहे वह यात्रा देश की हो विदेश की, योजना बनाकर हो या अप्रत्याशित। इसलिए निकलिए किसी यात्रा में और फिर देखिए कैसे प्रकृति आपके स्वागत के लिए तैयार है। सच ही कहा गया है:

ज़िंदगी ज़िंदा-दिली का है नाम
मुर्दा-दिल ख़ाक जिया करते हैं

डॉ. नरेन्द्र कुमार मंडल
अध्यक्ष (हिन्दी विभाग)

आधुनिक शिक्षण विधियाँ: शिक्षा में नवाचार

पिछले कुछ वर्षों में, खासकर मोबाइल क्रांति और कोरोना काल के बाद शिक्षा में जबरदस्त बदलाव आए हैं। वो दिन अब गए जब छात्र सिर्फ कक्षा शिक्षण में ध्यान केन्द्रित करते थे और पाठ्यक्रम सरल होता था। आधुनिक शिक्षा प्रणाली को शिक्षण विधियों, कक्षा परिवेश और अद्यतन पाठ्यक्रम में नवाचारों के साथ उन्नत किया गया है।

आधुनिक शिक्षण पद्धतियाँ क्या हैं?

नवीन उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करके छात्रों को पढ़ाने की एक विधि,जिसका उद्देश्य एक अनूठा अधिगम अनुभव प्रदान करना है, आधुनिक शिक्षण पद्धति कहलाती है। रटने के बजाय, ये विधियाँ आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल विकसित करने पर केंद्रित होती हैं। इनका उद्देश्य छात्रों में संज्ञानात्मक और धारणात्मक क्षमताओं को बढ़ावा देना है। इन विधियों की सबसे अच्छी विशेषता यह है कि छात्र सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। वे नई चीजों को जानने के लिए उत्साह दिखाते हैं, और शिक्षक उन्हें विषयों को बेहतर ढंग से समझाने के लिए रचनात्मक समाधान प्रस्तुत करते हैं।

आधुनिक शिक्षण विधियों में प्रौद्योगिकी की भूमिका

तकनीक ने सीखने की प्रक्रिया में और क्रांति ला दी है। नए ज़माने के स्कूलों में छात्रों में सीखने के प्रति रुचि जगाने

के लिए अत्याधुनिक कक्षाएँ स्थापित की गई हैं। स्मार्ट बोर्ड, ई-लर्निंग और वर्चुअल कक्षाओं ने छात्रों की सहभागिता को बेहतर बनाया है। एआई और वीआर जैसी तकनीकें दृश्य प्रस्तुतियों के माध्यम से एक गहन अनुभव प्रदान करती हैं । पिछले कुछ वर्षों में ऑनलाइन शिक्षा ने गति पकड़ी है। तकनीक की मदद से, शिक्षा अधिक सुलभ, लचीली, किफ़ायती हो गई है और स्व-गति से सीखने को बढ़ावा देती है। छात्र नए कौशल सीखने या कुछ अल्पकालिक पाठ्यक्रम करने के लिए ऑनलाइन शिक्षा का विकल्प चुनते हैं, जिससे पढ़ाई के साथ-साथ तालमेल बिठाया जा सके। ज़ूम, व्हाट्सएप, जीमेल जैसे एप्लिकेशन और गूगल जैसी वेबसाइटें कई सुविधाएँ प्रदान करती हैं, जिससे छात्र अपने साथियों के साथ मिलकर विषयों पर चर्चा कर सकते हैं, संसाधन साझा कर सकते हैं और ऑनलाइन स्रोतों से मदद ले सकते हैं।

आधुनिक शिक्षण विधियाँ जो हर शिक्षक को जाननी चाहिए

अब समय आ गया है कि शिक्षक ज्ञान को समृद्ध बनाने के लिए पारंपरिक शिक्षण विधियों से हटकर आधुनिक शिक्षण शैलियों को अपनाएँ। यहाँ कुछ प्रभावी आधुनिक शिक्षण विधियाँ दी गई हैं जिन्हें शिक्षक अपना सकते हैं:

• सहयोगात्मक शिक्षण और सहकर्मी शिक्षण:

यह विधि समूह कार्य के माध्यम से सीखने को संदर्भित करती है। शिक्षक छात्रों के समूह बनाकर किसी परियोजना पर काम करते हैं, प्रश्नों को हल करते हैं, शंकाओं का समाधान करते हैं, या समूह चर्चा करते हैं। यह छात्रों को प्रभावी ढंग से संवाद करने और अवधारणाओं को समझने के लिए प्रोत्साहित करता है। सहकर्मी शिक्षण एक ऐसी विधि है जिसमें छात्र एक-दूसरे से सीखते हैं। चर्चा के माध्यम से सीखने से धारणा क्षमता में वृद्धि होती है। कई बार, छात्र कक्षा में प्रश्न पूछने में संकोच करते हैं। ऐसे में, यह विधि विषय को समझने में उपयोगी साबित होती है। दोनों विधियाँ छात्रों को अपने विचार प्रस्तुत करने, ध्यानपूर्वक सुनने, विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और टीम वर्क कौशल विकसित करने के लिए प्रेरित करती हैं।

• मिश्रित शिक्षण पद्धति:

यह पद्धति पारंपरिक कक्षा पद्धतियों को ऑनलाइन शिक्षण के साथ मिलाकर एक अधिक लचीला और संवादात्मक शैक्षिक अनुभव प्रदान करती है। छात्र दोनों ही क्षेत्रों का सर्वोत्तम लाभ उठा सकते हैं। वे छात्रों और शिक्षकों के साथ आमने-सामने बातचीत कर सकते हैं और अपने आश्रमों में आराम से सीख सकते हैं। कक्षाओं में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के साथ-साथ, उन्हें इंटरनेट पर अपनी गति से सीखने का अवसर भी मिलता है।

• शिक्षा में गेमीकरण:

खेल खेलना किसे पसंद नहीं होता? बच्चे खेलते समय प्रतिस्पर्धी बनते हैं और मज़े करते हैं। जब शिक्षा को खेल के साथ जोड़ दिया जाता है, तो सीखना सहज लगता है। खेल-आधारित तत्वों का उपयोग करके, बच्चों को अवधारणाओं को मनोरंजक तरीके से सिखाया जा सकता है। इससे जिज्ञासा, कल्पनाशीलता और आलोचनात्मक सोच कौशल का विकास होता है।

उदाहरण के लिए, प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद, कहानी सुनाना, शब्द निर्माण आदि छात्र सहभागिता को बेहतर बनाने के कुछ तरीके हैं।

• व्यक्तिगत शिक्षण पथ:

शैक्षिक सामग्री प्रत्येक छात्र की सीखने की गति, क्षमता और शैली के अनुसार बेहतर धारणा के लिए तैयार की जाती है। इससे सीखने के परिणाम बेहतर होते हैं और एक संतोषजनक अनुभव बनता है। ऑनलाइन शिक्षा व्यक्तिगत शिक्षण को आसान बनाती है। शिक्षक प्रत्येक छात्र की खूबियों और कमज़ोरियों को समझते हैं और उसके अनुसार अपने शिक्षण को समायोजित करते हैं। इससे छात्रों की प्रेरणा बढ़ती है और उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

• सक्रिय शिक्षण तकनीकें:

ये तकनीकें व्यावहारिक गतिविधियों, चर्चाओं और समस्या-समाधान कार्यों को शामिल करके समझ को गहरा करती हैं। समूह चर्चाएँ, वाद-विवाद और समूह परियोजनाएँ छात्रों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देती हैं। इससे छात्रों को संचार, समस्या-समाधान और

विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करने में मदद मिलती है। यह स्मृति को बढ़ाता है और जीवन-आवश्यक कौशल प्रदान करता है।

• फ़्लिप्ड क्लासरूम मॉडल:

इस पद्धति में सीखने की प्रक्रिया विपरीत दिशा में होती है। आमतौर पर, नई अवधारणाएँ पहले शिक्षक सिखाते हैं, उसके बाद छात्र उनका पुनरावलोकन करते हैं। लेकिन इस मॉडल में, छात्र कक्षा में विषय के बारे में पूरी तैयारी के साथ आते हैं। वे स्वयं अध्ययन करते हैं और फिर कक्षाओं में जाते हैं। यदि उन्हें कोई संदेह हो, तो वे उसे आसानी से समझ सकते हैं। यह पद्धति छात्रों को विषय को समझने में मदद करती है।

आधुनिक शिक्षण विधियों के लाभ

- स्मार्ट क्लासरूम जैसी आधुनिक शिक्षण पद्धतियां बच्चों में ध्यान और जिज्ञासा बढ़ाती हैं।
- हाइब्रिड लर्निंग मॉडल लचीले और अनुकूलन में आसान होते हैं।
- वे आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान, ध्यानपूर्वक सुनना, संचार और सहयोग जैसे हस्तांतरणीय कौशल का निर्माण करते हैं।
- वे स्व-निर्देशित शिक्षा को बढ़ावा देते हैं, जिससे छात्र अपनी इच्छानुसार सीख सकते हैं।
- ऑनलाइन स्रोत सभी छात्रों के लिए आसानी से सुलभ हैं, जिससे एक समावेशी शिक्षा प्रणाली का निर्माण होता है।

शिक्षा का भविष्य: आगे क्या?

उभरती हुई प्रौद्योगिकियाँ शिक्षा प्रणाली पर हावी हो जाएँगी। शिक्षा के क्षेत्र में नए तकनीकी नवाचारों के साथ, सीखने का हाइब्रिड मॉडल आगे का रास्ता होगा। एआई और वीआर, इमर्सिव लर्निंग अनुभव बनाने और अनुकूलित सामग्री प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। खेल-आधारित, परियोजना-आधारित, सहयोगात्मक और पूछताछ-आधारित शिक्षण जैसे तरीकों पर अधिक जोर दिया जाएगा जो संज्ञानात्मक सोच को प्रोत्साहित करते हैं और अनुप्रयोग-आधारित कौशल विकसित करते हैं। ये प्रगति मौजूदा शिक्षा प्रणाली की कमियों को पाटकर इसे और अधिक सुलभ, समावेशी, गतिशील, आकर्षक और कौशल-केंद्रित बनाएगी।

निष्कर्ष

21वीं सदी की शिक्षण पद्धतियों ने छात्रों के सीखने के तरीके को बदल दिया है। ये पद्धतियाँ आकर्षक और समृद्ध अनुभव प्रदान करती हैं जो बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए प्रेरित करती हैं। शिक्षण और अधिगम में प्रौद्योगिकी के एकीकरण ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और धारण क्षमता में सुधार किया है। छात्रों को समृद्ध अधिगम अनुभव प्रदान करने के लिए शिक्षा क्षेत्र में और अधिक नवाचार लाए जाने की आवश्यकता है। सामाजिक विज्ञानं तथा राजनीति विज्ञानं जैसे विषयों में केस स्टडी बेस्ड सवालों को सीबीएसई बोर्ड ने भी तरहीज दी है इससे छात्रों की काल्पनिक सोच और चीजों को सोचने समझने की शक्ति बढती है।

आधुनिक शिक्षण विधियों ने छात्रों के ज्ञान-अवशोषण के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया है, जिससे शिक्षण अधिक संवादात्मक और छात्र-केंद्रित हो गया है। गुरुकुल प्रणाली के लाभों और शिक्षा में नैतिक मूल्यों पर ज़ोर देने के साथ , विकास के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता है। कक्षाओं में नवाचार छात्रों की अधिक सक्रिय भागीदारी और जिज्ञासा को भी बढ़ावा देता है। इस प्रगतिशील शिक्षण शैली की तलाश करने वाले झारखण्ड के अभिभावकों को यह मानना होगा कि आज भी नेतरहाट आवासीय विद्यालय गुरुकुल परंपरा के साथ आधुनिक शिक्षा देने में सबसे आगे है।

मुकेश कुमार
अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
नेतरहाट आवासीय विद्यालय

“लगेगी आग तो आएंगे घर कई जद में, यहाँ पे सिर्फ हमारा मकान थोड़ी है”

यह केवल एक शायरी या कविता की पंक्ति नहीं है, बल्कि यह एक गहरी सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय चेतावनी है। इसका भावार्थ है: “अगर आग लगती है, तो सिर्फ हमारा घर नहीं जलेगा - और भी कई घर उसकी चपेट में आएंगे।” यानी जब संकट आता है, तो वह सीमित नहीं रहता; वह सभी को प्रभावित करता है।”

अब इसे हम बंगाल, नेपाल, फ्रांस और श्रीलंका के संदर्भ में समझते हैं: बंगाल (भारत- बांग्लादेश के सन्दर्भ में): बंगाल, विशेष रूप से पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक रूप से जुड़े हुए हैं। यहाँ पर जब कोई राजनीतिक या धार्मिक तनाव होता है जैसे कि दंगे, घुसपैठ, या सीमावर्ती हिंसा तो वह सिर्फ एक समुदाय या एक देश तक सीमित नहीं रहता। उदाहरण: अगर भारत में सांप्रदायिक तनाव बढ़ता है, तो उसका असर बांग्लादेश में रहने वाले हिंदुओं पर भी पड़ता है। उसी तरह, अगर बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हमला होता है, तो भारत के बंगाल में भी प्रतिक्रिया होती है। यहाँ “आग” सांप्रदायिक नफरत हो सकती है जो एक घर से उठेगी, लेकिन पूरे मोहल्ले को जला सकती है।

नेपाल (भारत--नेपाल संबंधों के संदर्भ में): भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा है, और दोनों देशों के बीच घनिष्ठ सांस्कृतिक व आर्थिक संबंध हैं। लेकिन कभी-कभी राजनीतिक तनाव, सीमा विवाद, या राष्ट्रवाद की आग भड़क जाती है। उदाहरण: नेपाल में भारत-विरोधी भावना भड़कने पर, वहाँ के व्यापार, रोजगार और भारतीय नागरिकों की सुरक्षा पर असर पड़ता है। लेकिन यह सिर्फ नेपाल तक सीमित नहीं रहता इससे भारत के नेपाल-आश्रित क्षेत्रों पर भी असर होता है। इसलिए अगर नेपाल में ‘आग’ लगती है (राजनीतिक या सामाजिक रूप में), तो वह भारत के ‘घरों तक पहुँच सकती है क्योंकि हम जुड़े हुए हैं।

श्रीलंका (तमिल मुद्दा और क्षेत्रीय स्थिरता के संदर्भ में): भारत और श्रीलंका के बीच तमिल आबादी के कारण ऐतिहासिक रूप से गहरा संबंध है। श्रीलंका में जब तमिलों पर हिंसा हुई (जैसे कि सिविल वॉर के दौरान), तो उसका सीधा असर भारत के तमिलनाडु राज्य में महसूस किया गया। उदाहरण: लिट्टे (LTTE) के संघर्ष और भारत की सैन्य संलिप्तता ने दोनों देशों के रिश्तों में तनाव पैदा किया, और यह आग भारत के अंदर भी फैल गई जिससे राजनीतिक और सामाजिक हलचल हुई। इस सन्दर्भ में ‘आग’ जातीय संघर्ष है, जो भले ही श्रीलंका में शुरू हो, लेकिन भारत के तमिलों को भी झुलसा सकती है।

“यहाँ पे सिर्फ हमारा मकान थोड़ी है” इसका अर्थ है कि हम सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं भौगोलिक रूप से, सांस्कृतिक रूप से और मानवीय स्तर पर। अगर हम किसी संकट को सिर्फ ‘उनका’ मानकर चुप रहेंगे, तो कल वही संकट ‘हमारे’ घर तक पहुँच जाएगा। बंगाल में सांप्रदायिकता, नेपाल में राष्ट्रवाद और सीमा विवाद, श्रीलंका में जातीय संघर्ष तीनों उदाहरण हमें यही सिखाते हैं कि एक की आग, सबकी आग बन सकती है। इन तीन चार घटनाओं में की, कि उन देशों के युवा वर्ग प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित था जो कि चिंता का विषय है, बच्चों और युवा वर्ग को चाहिए की वो समझ बुझ कर तथा घटना के प्रभाव को समझकर कदम उठाएँ अन्यथा नुकसान तो उनका भी होगा और देश कई वर्ष पीछे चला जाएगा।

डॉ. राजेश चन्द्र गुप्ता
भौतिकी विभाग
नेतरहाट आवासीय विद्यालय

एन०सी०सी० शिक्षा से राष्ट्र - निर्माण

प्रत्येक देश की शिक्षा-नीति अपनी रत्नगर्भा धरित्री से प्रसूत रत्नों को आकार देकर भविष्य गढ़ती है। वर्तमान शिक्षा-नीति भारतीय ज्ञान-परंपरा के स्तंभ पर खड़ी होकर अपने नागरिकों के प्रतिभाशाली मानस और स्वस्थ व्यक्तित्व को रत्न की तरह तराशने की महत्त्वाकांक्षा रखती है। वर्तमान युग के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का सर्वांगीण उद्देश्य और व्यापक हुआ है। देश के नागरिकों में साहस, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, देशभक्ति जैसे गुणों का मार्जन अत्यावश्यक है । शिक्षा के इस व्यापक उद्देश्य को दृष्टिगोचर रखते हुए यह शिक्षा-नति पाठ्यक्रम में एन०सी०सी० अर्थात राष्ट्रीय कैडेट कोर के महत्त्व को रेखांकित करती है। एक विषय के रूप में एन०सी०सी० की प्रतिष्ठा इससे पहले कभी नहीं थी। माध्यमिक और उच्च शिक्षा के स्तर पर छात्र-छात्राओं द्वारा पाठ्य सहगामी क्रियाओं के रूप में एन०सी०सी० का चयन किया जाता था। पर सीटों की संख्या सीमित होने के कारण बहुत कम विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो पाते थे। इसे पाठ्यक्रम से इतर गतिविधि के रूप में देखने के कारण कुछ विद्यार्थी इससे पूरी तरह विलग रहते थे। पर नेतरहाट जैसे विशिष्ट संस्थान अपवाद हैं। नेतरहाट आवासीय विद्यालय का सौभाग्य था कि यहां के सभी अंतेवासियों को एन०सी०सी० से जुड़ने और इससे अपने व्यक्तित्व को सुदृढ़ आकार देने का सौभाग्य मिलता था और मिल रहा है। यहां एन०सी०सी० के तीनों विंग का शक्ति-सौंदर्य अपनी पूरी आभा के साथ दिखता है। नेतरहाट के पूर्ववर्ती छात्र आज भारत सहित विश्व के कोने-कोने में अपने व्यक्तित्व की सुरभि बिखेर रहे हैं तो इसमें यहां की शिक्षण-पद्धति में एन०सी०सी० के विशेष स्थान की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत की शिक्षा-पद्धति में सामान्यतः सभी विद्यार्थियों को एन०सी०सी० से जुड़ने का अवसर नहीं मिलता था। वर्तमान शिक्षा-नीति ने इस बड़े अंतर को पाटने का लक्ष्य रखा है। एन०सी०सी० को अब उच्च शिक्षा स्तर पर पाठ्यक्रम में स्थान मिला है। कला, विज्ञान, वाणिज्य आदि सभी संकाय के छात्र स्नातक स्तर पर एक सेमेस्टर में एन०सी०सी० का चयन कर सकते है इस तरह एन०सी०सी० की व्याप्ति और विस्तार में यह एक बड़ी छलांग है। आने वाले वर्षों में स्नातक उत्तीर्ण छात्रों की पीढ़ी का एक बहुत बड़ा भाग एन०सी०सी० के उद्देश्यों से परिचित होगा। कस्तूरी का एक सान्निध्य जीवन भर उसकी खुशबू की याद दिलाता रहता है। स्नातक स्तर पर जब सभी विद्यार्थियों को एन०सी०सी० की कस्तूरी का सान्निध्य मिलेगा तो शायद यह उनके व्यक्तित्व के रूपांतरण और स्वस्थ सारगर्भित कायांतरण में सहयोगी होगा। आने वाले वर्षों में एन०सी०सी० को गंभीरता से लेने वाले छात्रों को रोजगार के नए अवसर प्राप्त हो सकते हैं। एन०सी०सी० शिक्षा प्राप्त भविष्य के ये नागरिक राष्ट्र के लिए बहुत बड़ी शक्ति सिद्ध हो सकते हैं क्योंकि यह छात्रों को अनुशासन, नेतृत्व और देशभक्ति की भावना सिखाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और AICTE ने विश्वविद्यालय और कॉलेजों के पाठ्यक्रम में एन०सी०सी० कोर्स को मंजूरी दे दी है, जिससे छात्रों को एन०सी०सी० में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके । इनका यह छोटा कदम एक बड़ा और महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है। इसलिए आज के युग में एन०सी०सी० शिक्षा के उद्देश्यों को समझना आवश्यक है।

एन०सी०सी० के कुछ प्रमुख उद्देश्य हैं:

- अनुशासन और नेतृत्व: एन०सी०सी० छात्रों को अनुशासन और नेतृत्व की भावना सिखाता है, जो उनके व्यक्तित्व विकास में मदद करता है।
- देशभक्ति: एन०सी०सी० छात्रों को देशभक्ति की भावना सिखाता है और उन्हें देश की सेवा करने के लिए प्रेरित करता है।
- सैन्य प्रशिक्षण: एन०सी०सी० छात्रों को सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करता है, जो उन्हें आपातकालीन स्थितियों में मदद कर सकता है।
- करियर में फायदे: एन०सी०सी० छात्रों को करियर में फायदे प्रदान करता है, जैसे कि सरकारी नौकरियों में प्राथमिकता और सेना में भर्ती होने के अवसर।

इस प्रकार, एन०सी०सी० भारतीय शिक्षा-नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो छात्रों को अनुशासन, नेतृत्व और देशभक्ति की भावना सिखाता है। राष्ट्र

निर्माण प्रत्येक जागरूक भारतीय मानस की आकांक्षा है।
कवि ज्योतींद्र प्रसाद झा पंक्ति के शब्दों में कहें तो -

आओ जन-जन देख तन-मन धन राष्ट्र
भवन निर्माण करें हम।
कोटि कोटि कंठों से भारत -
गौरव का जयगान करें हम।

यह प्रताप की पुण्यभूमि है
'शिवा' 'कुँवर' की जन्मभूमि है
'लक्ष्मीबाई' की स्मृति लेकर
कण-कण में आह्वान भरें हम।

अमर शहीदों की कुर्बानी
बलिदानों की अमिट निशानी
स्वर्ण वर्ण में अंकित कर अब
जड़ में अभिनव प्राण भरें हम।

शेष न रहे द्वेष की छाया,
बंधु-भाव सरसे मन भाया
उतरे स्वर्ग धरा पर जिससे
मंगलमय अभियान करें हम।

रहे एक भी नहीं उपेक्षित
रहे एक भी नहीं बुभुक्षित
नहीं तिरस्कृत लांछित कोई
अग-जग का निर्माण करें हम।

कवि के इन शब्दों की तरह हम सबकी कामना इस राष्ट्र निर्माण की है और विश्वास है कि एन०सी०सी० शिक्षा इस लक्ष्य को प्राप्त करने में मददगार होगी।

रवीश कुमार
शिक्षक, रसायन शास्त्र
सह
ए०एन०ओ० आर्मी विंग
नेतरहाट आवासीय विद्यालय

एक पेड़ माँ के नाम

'एक पेड़ माँ के नाम' का सार एक प्रतीकात्मक भाव है - अपनी माँ के नाम पर एक पेड़ लगाना। यह एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन की तरह है जिसका उद्देश्य नागरिकों को अपनी माता चाहे वह जीवित हो या दिवंगत के सम्मान में पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करना है। विश्व पर्यावरण दिवस 2024 पर शुरू किए गए। इस अभियान का उद्देश्य मातृत्व का सम्मान करना और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना है।

माननीय राष्ट्रपति महोदया श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा रक्षाबंधन 2025 के शुभ दिन पर अपने संबोधन में समस्त भारतीयों से एक पेड़ लगाने का आग्रह किया है। पेड़ को रक्षा का प्रतीक बताते हुए पेड़ की उपयोगिता पर भी प्रकाश डालें।

'एक पेड़ माँ के नाम 2.0' नामक विशेष अभियान की शुरूआत करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भारत के प्रत्येक नागरिक को अपनी माँ या धरती माँ के नाम पर एक पेड़ लगाने के लिए प्रेरित किये। 05 जून 2025 से सितम्बर 2025 तक इस कार्यक्रम के तहत राज्य परियोजना कार्यालय समग्र जिलों के सभी बेसिक शिक्षा अधिकारियों को भेजे गए निर्देशों में कहा गया है कि इस अभियान को 'मिशन लाइफ' के तहत संचालित किया जाएगा। स्कूलों में ईको क्लब की मदद से इसे लागू किया जाए जिससे बच्चों के साथ-साथ अभिभावकों और स्थानीय समुदाय की भी भागीदारी होगी। प्रत्येक विद्यालय को कम-से-कम 70 पौधे लगाने का लक्ष्य दिया गया। पौधारोपण के लिए विद्यालय परिसर, विद्यालय के आस-पास की खाली भूमि, ग्राम पंचायतों द्वारा चिन्हित स्थान, जल स्रोतों के आस-पास, सार्वजनिक स्थल, स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत क्षेत्र, नगर-वन, ग्रीन बेल्ट और सड़क के किनारे की भूमि जैसे स्थानों को प्राथमिकता दी गई।

पौधारोपण एवं उनकी सुरक्षा के संदर्भ में यदि बात करें तो हमारा आवासीय विद्यालय नेतरहाट इस कार्य में बढ़-चढ़कर अपनी महत्ती भूमिका निभाते आ रहा है। आए दिन हमारे विद्यालय में मंत्रीकण, राज्यपाल महोदय, सरकारी एवं गैर-सरकारी पदाधिकारीगण, नोबा बंधु एवं अन्य महानुभावों का आगमन होता रहता है। हमारे विद्यालय के प्राचार्य जी का यह प्रयास रहता है कि आगन्तुकों के कर-कमलों से वृक्षारोपण करा लिया जाए। सौभाग्य से इस महत्वपूर्ण कार्य की जिम्मेदारी विद्यालय के कृषि विभाग को दी जाती है और इस जिम्मेदारी को कृषि विभाग बखूबी निभाने का प्रयास करती है।

अन्त में मैं बताना चाहूँगी कि "एक पेड़ माँ के नाम" एक प्रयास है जो हमारी मातृभूमि और प्रकृति के प्रति हमारे सम्मान और समर्पण को दर्शाता है। इस अभियान का उद्देश्य माँ के नाम पर एक पेड़ लगाना और एक स्थायी स्मृति बनाना है, जो न केवल पर्यावरण की रक्षा करेगा बल्कि एक हरे-भरे और अधिक समृद्ध भविष्य के निर्माण में भी योगदान देगा। माँ और प्रकृति दोनों ही जीवन का मूल आधार है। इस पहल के माध्यम से हम अपनी जिम्मेदारी निभा सकते हैं।

आइये, "एक पेड़ माँ के नाम" का हिस्सा बनें और अपनी माँ के लिए एक अविस्मरणीय स्मृति बनाने के लिए एक पेड़ अवश्य लगाएँ तथा उस पेड़ की सुरक्षा की सारी जिम्मेदारी स्वयं ही लें।

सधन्यवाद्

श्रीमती ममता कुमारी
कृषि प्रशिक्षिका
नेतरहाट आवासीय विद्यालय

स्वाध्याय का महत्व

"न हि ज्ञानने सद्दशं
पवित्रमहि विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः
कालेनात्मनि विन्दति।"

जीवात्माओं की जीजिविषा के जीवन को परमानंद एवं परमार्थ से परिपूर्ण करने में सक्षम युगांतकारी, यथार्थवादी महाग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण कहते हैं कि "इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाले कुछ भी नहीं। उस ज्ञान का कितने ही काल से कर्मयोगी द्वारा शुद्ध अंतःकरण हुआ जिसे मनुष्य अपने आप ही में पा लेता है।" ज्ञानार्जन करने में, बुद्धि का निर्माण करने में एवं चरित्र को गढ़ने में स्वध्याय की अहम भूमिका है। स्वध्याय का शाब्दिक अर्थ है स्वयं से अध्ययन करना। ये वो प्रक्रिया है जब हम आत्मंथन, आत्मचिंतन और परम ध्यान की मुद्रा प्राप्त करते हैं। हम स्वयं को जग से विश्वस्त कर स्वयं को स्वयं से मिलाते हैं। इस कड़ी में हमारे मस्तिष्क की कसरत होती है, नए तंत्रिकाओं का निर्माण होता है एवं हमारे सोचने, समझने और धैर्य की शक्ति में विकास होता चला जाता है। आज जब आधुनिक शिक्षण प्रणाली में प्रायः विद्यार्थी प्रश्न या किसी कथन पर आत्मविचार न कर मोबाईल फोन आदि के मदद से प्रश्नों का हल करते हैं, वहीं स्वध्याय के क्रम में हमारे अंतरात्मा की शक्ति उभरती है। स्वध्याय जिज्ञासा की जननी है एवं भारतीय संस्कृति का मूल है। श्री कृष्ण ने भी स्वध्याय रूपी यज्ञ की चर्चा की है जो कि गुरूकुल, व्यवस्था का चालक है। इसकी मदद से हजारों ऋषिमुनियों ने हर दिशा में चाहे वो चिकित्सा हो, विज्ञान हो, दर्शनशास्त्र हो आदि में अपना ऐतिहासिक नाम दर्ज किया है। स्वध्याय केवल स्वयं से किताबी पढ़ाई करना नहीं अपितु अपने स्थूल शरीर एवं इंद्रियों के वशीकरण की माया से मुक्त हो आत्मचिंतन, आत्ममनन एवं आत्मानुभूति

से स्व की चेतना, विवेक एवं बुद्धि से निष्काम कर्म की ओर अग्रसर होना है। मानव से महामानव तक का सफर तय कर चुके गौतमबुद्ध भी स्वयं कहते हैं कि लोग उनकी शिक्षाओं को केवल इसलिए न अपनाये कि ये उनकी शिक्षा है अपितु वे स्वयं इसका आकलन करें अर्थात स्वध्याय करें। स्वध्याय से हमें परम ज्ञान की प्राप्ति होती है और ज्यों-ज्यों ज्ञान का स्तर बढ़ता है त्यों-त्यों मनुष्य विनम्र होता जाता है। मनुष्य को अपने अल्पज्ञान का मान होता जाता है और यही बात उसे एक अज्ञानी से कहीं अधिक श्रेयस्कर बनाती है। शुद्ध, स्वार्थरहित एवं सशंयात्मकता की संतृप्ता से परे स्वध्याय ही स्वंसात्मक प्रवृत्तियों का परित्याग करा परित्राण, परिवर्तन एवं परमार्थ के शुभाकांक्षी एवं परिचालक है। किसी भी व्यक्ति के जीवन में अनेक पहलू होते हैं; सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, पारिवारिक आदि आदि, इन सभी पहलू में सफलता का मूल स्वध्याय ही है।

नेतरहाट जो कि गुरूकुल व्यवस्था पर आधारित है, वहाँ स्वध्याय का महत्व और भी प्रासंगिक हो जाता है। शिक्षाविदों के द्वारा हमारी दिनचर्या में स्वध्याय के कालखंड का विभाजन किया गया। जहाँ हम इस ब्रह्मांड की ऊर्जा को एक मौन अवस्था में प्राप्त करते हैं। हम अपनी स्वध्याय की शुरूआत माँ सरस्वती की वंदना से करते हैं और कई घंटे ज्ञान की साधना करते हैं। नेतरहाट विद्यालय की रीढ़ स्वध्याय को कहा जा सकता है।

भारत की हर विद्यार्थी, हर व्यक्ति को स्वध्याय का महत्व जानना चाहिए एवं स्वध्याय रूपी द्विव्यास्त्र को निमित्त बना पुनः भारत को विश्वगुरू बनाने की ओर अग्रसर होना चाहिए।

अयान आलम
क्रमांक - 24005
कक्षा - 8

सब्र का फल मीठा होता है

एक गाँव था। जहाँ राम नामक एक मूर्तिकार रहता था। एक दिन जब वह जंगल से गुजर रहा था तब उसे दो मजबूत पत्थर दिखे। उसने सोचा कि दोनों पत्थरों को ले जाता हूँ, गणेश चतुर्थी उत्सव में मूर्ति बनाकर बेचूँगा। उसने दोनों पत्थर को घर लेकर आया। उसी दिन शाम को राजा एवं पूरी प्रजा उसके घर आए। राजा ने राम से कहा, गणेश चतुर्थी में कुछ ही दिन शेष बचे हैं तुम एक अच्छी सी मूर्ति बनाकर गाँव वालों को सौंप देना। राजा ने उसे कुछ स्वर्ण मुद्राएँ दी और वहाँ से चले गए। सुबह उसने मूर्ति बनाना प्रारंभ किया । अपने हथौड़े और छेनी की पूजा की और कार्य श्री गणेश किया। उसने पहला पत्थर लाया और उसे पीटना प्रारंभ कर दिया। कुछ समय के बाद पहले पत्थर ने रोते-रोते कहा कृप्या मुझे छोड़ दो मुझे मत पीटो । राम घबरा गया और वह इधर-उधर देखने लगा, बाद में पता चला यह रोने की आवाज इसी पत्थर से आ रही है। राम ने आश्चर्य से पूछा पर क्यों ? पर वह पत्थर बार-बार यही बोल रहा था। राम ने उस पत्थर को किनारे रख दिया। फिर दूसरे पत्थर की मूर्ति बनाना शुरू कर दिया। दूसरा पत्थर भी बोल सकता था परंतु उसने कुछ नहीं कहा वह चुपचाप चोट सहता रहा। पहले पत्थर ने उसे सुझाव दिया कि तुम भी बोल दो वह तुम्हें भी छोड़ देगा। दूसरे पत्थर ने कुछ नहीं कहा। अंत में बहुत सुंदर मूर्ति गणेश की बनकर तैयार हुई। सारे गाँव वाले मूर्ति को साथ ले गए और रामू को कहकर उस पहले पत्थर को भी ले गए। पूजा खूब धूम-धाम से की गई। दूसरे पत्थर की गणेश प्रतिमा में काफी पकवान चढ़ाए गए और पहले पत्थर पर केवल नारियल फोड़ा जा रहा था। पहले पत्थर ने कहा मैंने तो कुछ किया भी नहीं फिर भी मुझे सजा मिल रही है। तब दूसरे पत्थर की गणेश प्रतिमा ने कहा तुमने सहा नहीं यदि तुम सहते तो मेरी जगह तुम होते तो तुम्हारी भी पूजा होती तुम्हें भी पकवान चढ़ाए जाते परंतु तुमने नहीं सहा विरोध किया इसलिए तुम भोग रहे हो। सब्र का फल हमेशा मीठा होता है यह बात कहकर वह शांत हो गया।

अनंत कुमार राय
क्रमांक - 25036
कक्षा - 7

संसार दुःखों से भरा पड़ा है

सभी के पास कुछ हो न हो पर दुःख जरूर होता है। दुनिया में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है, जिसके पास दुःख न हो। मैं दुःख का असली रूप देख चुका हूँ। कोई कोने में बैठकर रो रहा है, तो कोई सोचते-सोचते ड्रिप्रेशन में चला गया है। भगवान ने इस दुःख को बनाया ही क्यों? कोई व्यक्ति अपने पढ़ाई- लिखाई से दुःखी है, तो कोई अपने आर्थिक स्थिति से। भगवान् सबको एक जैसा भी तो बना सकते थे फिर भी वे सबको अलग - अलग ही क्यों बनायें? मेरे विचार से तो दुःख एक भ्रम है, जो हर इंसान में पाया जाता है। मैं पिछले काफी दिनों से दुःखी रहता था और मुझे यह भी नहीं पता था कि मैं दुःखी क्यों रहता हूँ। उसके बाद मैंने अपने दिमाग से दुःख नामक शब्द को ही मिटा दिया। अब मैं कभी भी दुःखी नहीं रहता हूँ। इस लेखनी को लिखने का मेरा मुख्य उद्देश्य यही है कि मैं यह पूरी दुनिया को बताना चाहता हूँ कि दुःख एक भ्रम है। गौतम बुद्ध ने कहा था कि "संसार दुःखों से भरा पड़ा है" परन्तु अब मैं यह कह रहा हूँ कि "संसार दुःखों से भरा पड़ा है और दुःख एक भ्रम है "

शशि सुमन
क्रमांक - 24029
कक्षा - 8'

पिता

कहते हैं ईश्वर स्वयं धरती पर नहीं आ सकते इसलिए उन्होंने माँ - बाप को हमारे कष्ट हरने के लिए, हमें खुशियाँ देने के लिए हमारी इच्छा पूरी करने के लिए हमारे पथप्रदर्शक बनकर हमें सही राह दिखाने के लिए धरती पर भेजा है। जिसमें किसी बच्चे के उतरोत्तर विकास में पिता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। माँ-बाप बच्चे के प्रथम गुरु होते हैं। पिता वह है जो अपने परिवार की खुशियों के लिए, उनकी रक्षा के लिए किसी भी सीमा को पार कर सकता है। एक पिता अपने परिवार के लिए दिन-रात कड़ी मेहनत करता है। जिससे वह अपने परिवार का पेट भर सके, अपने परिवार को खुश रख सके। पिता की ख़ुशी तो सदा उसके परिवार की ख़ुशी में ही होती है।

उसका परिवार खुश रहता है तो वह भी खुश हो जाता है। वह अपने परिवार के लिए बहुत सारे त्याग करता है। वह अपने बच्चों के उज्वल भविष्य के लिए कितने परिश्रम करता है, जिससे उसका बच्चा कामयाब हो सके। कई बार किसी त्योहार में खुद के लिए नए कपड़े नहीं लेता। परंतु, अपने परिवार को हर त्योहार में नए कपड़े दिलाता है। भले ही वह भर पेट खाना नहीं खाता हो। परंतु, अपने परिवार को कभी भी भूखा नहीं रहने देता। अपनी इच्छाओं का त्याग कर अपने परिवार की इच्छाएँ पूरी करता है। कितनी भी बड़ी दुविधा में क्यों न हो परंतु वह उस दुविधा को नहीं दिखाता। सब कुछ दिल में रखता है। वह बाहर से तो कठोर होता है, लेकिन अंदर से बहुत नरम एवं कोमल होता है। माँ अपने बच्चों को गोद में उठती है ताकि वह जो देख रही है उसका बच्चा भी वह देख सके। परंतु, पिता बच्चों को कंधे पर उठाता है ताकि वह जो देख रहा है उसका बच्चा उससे भी दूर देख सके पिता बचपन का वही खिलौना है, जो हमें कभी भी दुःखी नहीं होने देता कभी हमें घोड़ा बनकर पीठ पर बिठा कर घुमाता है तो कभी अजीबों-गरीब-तरीके से हँसाता है। आज-कल के बच्चे अपने माँ-बाप को वृद्धा आश्रम में छोड़ देते हैं। कहते हैं कि पिताजी आपने हमारे लिए क्या किया है? जिसने पूरे परिवार का भार उठाया यदि वही परिवार उसे छोड़ दे और कहे कि हम आपका भार नहीं उठा सकते जरा सोचो! यह सब सुनकर उसके दिल पर क्या बीतती होगी हमारे पिता है तो हम उनका आदर नहीं करते, जिनके पिता नहीं हैं सोचो उनपर क्या गुजरती होगी। कोई भी पिता अपने बच्चों को नाकामयाब नहीं देख सकता यदि, वह कभी हमें डॉट दे अथवा मार ही क्यों न दे हमें उसकी बातों का बुरा नहीं मानना चाहिए। हमें उनसे सीख लेनी चाहिए मेरे पिता ने मुझे हमेशा सत्य की राह पर चलना सिखाया है। मेरे पिता ने भी काफी कष्ट झेले हैं परंतु, मुझे कभी किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने दी। उन्होंने मेरे कुछ भी मांगने से पहले मेरी हर इच्छा पूरी की है। उन्होंने मुझे सदैव अच्छे संस्कार दिए हैं। जैसे; सुबह उठकर सूर्य देव को प्रणाम, धरती माँ एवं बड़ों के पैर छूकर प्रणाम करना, अपने गुरुजनों आदर करना आदि। मेरे पिताजी हमेशा यह कहते हैं कि जब तक रोटी तवे पर सेकी नहीं जाती तब तक वह पकती नहीं, उसी प्रकार जब तक परिश्रम नहीं करोगे तब तक कामयाब नहीं हो सकते।

उन्होंने मुझे एक श्लोक सुनाया था -

"आरम्भस्तु कायाणा प्रथम
बुद्धिलक्षणम,
आरब्धस्यान्तशमन द्वितीय
बुद्धिलक्षणम"

अर्थात् कार्य को शुरू करना बुद्धि का पहला लक्षण है और शुरू किए गए कार्य को पूरा करना बुद्धि का दूसरा लक्षण है, इसलिए कार्य को शुरू तो करो, वह स्वयं

ही अपनी पूर्णता की ओर बढ़ेगा मैं तो ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि मुझे हर जन्म में मेरे पिताजी इसी रूप में मिले और सबके पिताजी मेरे पिताजी के जैसे ही हो। अंत में मैं बस इतना कहूँगा कि पिता हर परिवार की नींव होते हैं। उसका दिल समुद्र से भी विशाल एवं गहरा एवं कोमल होता है। इसलिए अपने पिता का सम्मान करो, उनकी आज्ञा का पालन करो, उन्हें कभी भी दुःखी एवं अकेला मत छोड़ो क्योंकि :-

" पिता ही धरती और
पिता ही आसमान है "

"पिता है तो अभिमान है
पिता है तो स्वाभिमान है"

" पिता है तो रोटी है
पिता है तो खाना है "

"पिता ही मुकुट और
पिता ही रक्षा कवच है"

आशीष मिश्रा
कक्षा - 8
क्रमांक - 24011

दहेज एक कुप्रथा

एक गाँव था। उस गाँव में ऋषि नाम का एक लड़का रहता था। जब वह चार वर्ष का हुआ तो पिता ने उसका दाखिला गाँव के ही छोटे से विद्यालय में करवा दिया। जब वह कक्षा सात में पढ़ रहा था तब उसने अपने हिंदी की पाठ्य पुस्तक में दहेज प्रथा के विरुद्ध एक निबंध पढ़ा था। उसके शिक्षक के द्वारा अच्छी तरह पाठ पढ़ाएँ जाने के कारण उसने उस छोटी-सी उम्र में ही यह निर्णय कर लिया था कि वह अपने विवाह में दहेज न तो लेगा और के ने लेने देगा।

धीरे-धीरे समय का पहिया घूमा और जब वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ तो उसके माता-पिता ने उसकी शादी कराने की सोची। जब उसकी शादी के लिए लड़की ढूँढ़ी गई तो उसके पिता के मन में लालच आ गया और उन्होंने लड़की के परिवार वालों से दहेज में एक बहुत बड़ी राशि की माँग की। दहेज की माँग की बात ऋषि और श्रेया से छिपाई गई।

जब विवाह का समय नजदीक आ गया तो, लड़की के घर में अचानक चोरी हो गई। श्रेया के पिता द्वारा चोरी की बात ऋषि के पिता बताई गई। तो श्रेया के पिता ने दहेज देने से मना कर दिया तो ऋषि के पिता ने कहा दहेज नहीं मिलेगा तो वे विवाह नहीं होने देंगे।

जब यह बात ऋषि को पता चली तो उसने अपने पिता को समझाया कि दहेज लेना या देना कितना बड़ा कानूनन अपराध है। ऋषि के इतना समझाने पर भी उसके पिता नहीं समझे और अपनी बात पर अड़े रहे।

तब ऋषि को अपने पिता के विरुद्ध जाना पड़ा और उसने कहा अगर आप बिना दहेज के विवाह के लिए नहीं माने तो मैं सभी को बता दूँगा। मजबूरन उसके पिता को विवाह के लिए मानना पड़ा और उनकी शादी बिना रोक-टोक के हो गई।

सागर कुमार
क्रमांक - 24013
कक्षा - 8

हमारा विद्यालय नेतरहाट

भारत में अनेकों विद्यालय हैं। प्रत्येक विद्यालय एक से बढ़कर एक स्पर्धा तथा गुणवत्ता के हैं। प्रत्येक विद्यालय की अपनी कुछ विशेषताएँ होती है। परंतु, इन सभों के अतिरिक्त एक ऐसा भी विद्यालय है जो प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था पर आधारित है, जिसका नाम “नेतरहाट आवासीय विद्यालय” है। इसकी स्थापना 15 नवंबर 1954ई० को हुई थी। चूँकि 15 नवंबर झारखंड के महान क्रांतिकारी बिरसा मुण्डा जी की जयंती है। इसलिए प्रत्येक वर्ष 15 नवंबर को विद्यालय दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह विद्यालय शहरी क्षेत्र से बिल्कुल दूर नेतरहाट की शांत एवं ठंडी पहाड़ियों मे घने जंगलों के बीच स्थित है, जो पढ़ाई-लिखाई हेतु एक सकारात्मक वातावरण उत्पन्न करती है।

यह विद्यालय विशेषकर अपने अनुशासन एवं छात्रों के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों के कारण सुप्रसिद्ध है। यह भारत का एकमात्र व अंतिम गुरूकुल पद्धति पर आधारित विद्यालय है। यह विद्यालय झारखंड के लातेहार जिला में स्थित है। इस विद्यालय में बच्चे आश्रमों में रहकर माताओं एवं श्रीमान् जी जनों से शिक्षा प्राप्त करते हैं; जैसे कि प्राचीन गुरुकुलों में होता था। इस विद्यालय में शिक्षक बच्चों को पढ़ाने उनके पास नहीं जाते बल्कि बच्चें स्वयं शिक्षा के पास चलकर शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। यह विद्यालय छात्रों को स्वानुशासित एवं आत्मनिर्भर होकर रहना सिखाता है। यह विद्यालय सहज तथा सदाचारी जीवन जीना सिखाता है तथा यह इस बात का प्रतीक है कि, “विद्यार्थी जीवन में सदैव समयानुसार रहकर अनुशासित जीवन जीना रहना चाहिए”। इस विद्यालय में पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ छात्रों के आंतरिक एवं बाह्य गुणों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। यहाँ छात्रों को सभी विषयों के अतिरिक्त संगीत, चित्रकारी, कला धातु कला, कृषि करना जैसी अन्य गतिविधियाँ सिखाई जाती है ताकि उनकी आंतरिक गुणों को का विकास हो ।

इस विद्यालय में छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक गुणों का भी विशेष ध्यान दिया जाता है: प्रत्येक वर्ष विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है ताकि सभी छात्र खेल के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखा सके। खेलने के कारण छात्रों के तन-मन में नव ऊर्जा संचार होता है जिस कारण वे मन लगाकर पढ़ते हैं। इन्हीं कारणों से यहाँ के छात्र अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होते हैं तथा जीवन में आने वाली किसी भी बाधा को पार कर लेते हैं।

इस विद्यालय से आज तक अनेक अधिकारी, आई० ए०एस, आई०पी० एस०, साइंटिस्ट एवं इंजीनियर आदि बने हैं। इस विद्यालय से विशेषकर सबसे अधिक आई०ए०एस० निकलते हैं। इसी कारण इस विद्यालय को ‘आई०ए० एस० फैक्ट्री ऑफ दी इंडिया’ कहा जाता है। यहाँ के छात्र जीवन का दो मुख्य उद्देश्य है- अपना सर्वांगीण विकास करना तथा 'अत्तदीपा विहरथ' अर्थात् तात्पर्य है कि छात्रों को सर्वगुण संपन्न होना चाहिए। किसी भी परिस्थिति या मुश्किल का सामना करने के लिए सदैव हर प्रकार से तैयार रहना चाहिए। "अत्तदीपा विहरथ" अर्थात् अपने दीपक स्वयं बनो।

रिशु कुजूर

क्रमांक - 25056

कक्षा - 7

अभ्यास और अभ्यास

"मैं कोशिश करूँगा" की जगह पर "मैं करूँगा" शब्द का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि मैं कोशिश करूँगा का अर्थ, मैं ऐसा चाहता नहीं हूँ पर मजबूरी में ऐसा करना पड़ेगा होता है। कोशिश करने का मतलब यह नहीं होता है। जीवन में सफलता अच्छाई से नहीं आती, बल्कि उस अच्छाई के उपयोग से आती है।

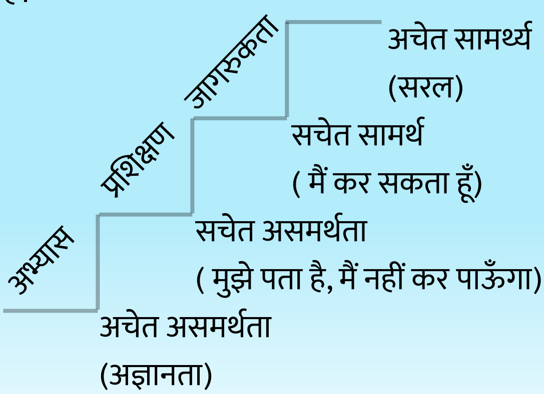

सफलता का कोई शॉटकट रास्ता नहीं होता है। यह कोई ऐसी चीज नहीं है, जो हमलोगों को रास्ते में पड़ी मिल जाएगी। इसे पाने के लिए मेहनत अनुशासन और त्याग की जरूरत पड़ती है।

जैसे कि हेनरी फोर्ड ने कहा था, 'आप जितना ज्यादा परिश्रम करेंगे आपका भाग्य उतना ही ज्यादा चमकेगा।"

खेल में अपने कौशल को सुधारने के लिए अभ्यास बहुत ही महत्वपूर्ण होता है।

खिलाड़ियों के लिए एक कहावत आपने सुनी होगी-

'अच्छे खिलाड़ी के लिए तीन नियम - अभ्यास, अभ्यास, अभ्यास!

सफलता के लिए कर्मठता सबसे पहली जरूरत है। इसके अभाव में हमलोग व्यक्तिगत ठहराव की स्थिति में आ जाते हैं। माइकल जॉर्डन को तो हमलोग जानते ही है यह बास्केटबॉल की किताबें पढ़कर इतने बडे बास्केटबॉल खिलाड़ी नहीं बनें हैं। ठीक उसी प्रकार गौरी वायनर चुक मदिरा पर किताबें पढ़कर मदिरा विशेषज्ञ नहीं बने हैं।

अभ्यास और निजी अनुभव से बड़ी कोई चीज नहीं है। अगर हम सिर्फ पढ़कर सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करते रहे और उसका व्यावहारिक अभ्यास न करें तो क्या होगा? अति विश्लेषण के कारण उत्पन्न अकर्मण्यता इस स्थिति में हम इतना ज्यादा सोच विचार में लग जाते हैं कि उस पर अमल ही नहीं कर पाते हैं। कोई नया काम शुरू करने का एक आइडिया हमारे मन में आता है। उस पर हम विचार कर ही रहे होते है कि अगले दिन दो-तीन और संभावनाएँ हमारे दिमाग में आ जाती हैं। इस प्रकार, हमारे पास आइडिया ही आइडिया होते हैं- उन पर व्यवहारिक अमल का कोई विकल्प नहीं रह जाता है।

आजकल जीवन के हर क्षेत्र में हमारे सामने हजारों विकल्प मौजूद है चाहे वह घूमने का हो या कॅरियर की बात हो। कई बार तो विकल्प या संभवानाएँ इतनी ज्यादा होती है कि हम समझ ही नहीं पाते हैं।

सावन कुमार दास
क्रमांक - 23062
कक्षा - 9

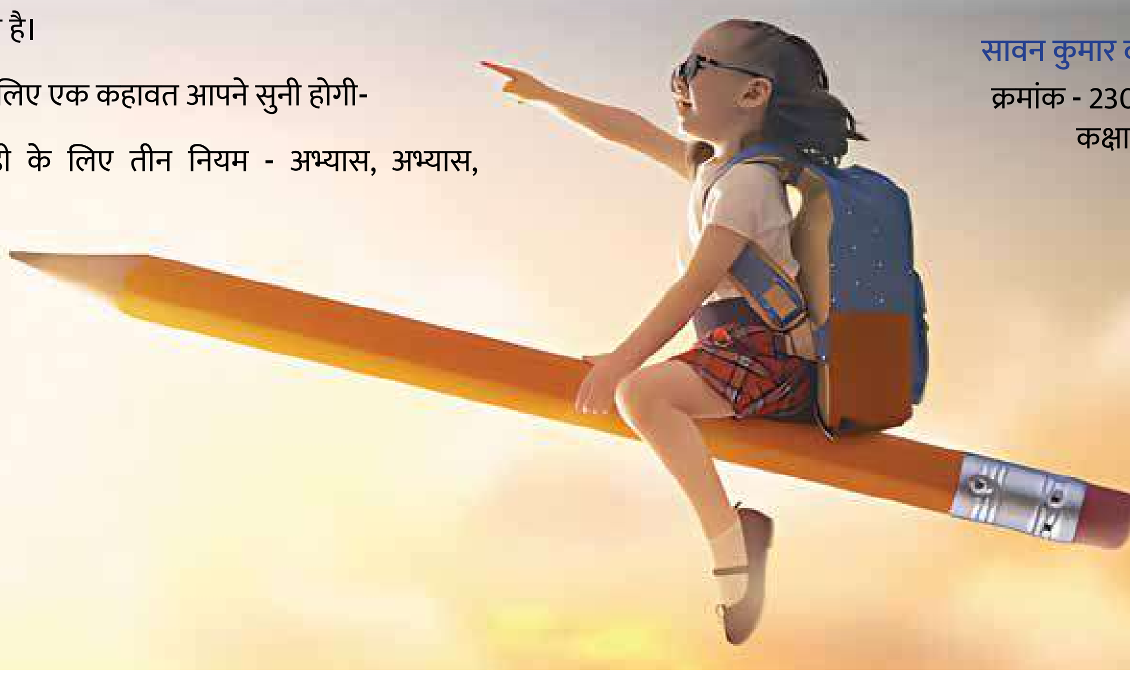

सच्चाई और दया का प्रतिफल

एक छोटे से कस्बे में विनय नाम का एक लड़का रहता था। वह साधारण परिवार से था लेकिन दिल का बहुत अच्छा और मददगार था। उसके माता-पिता ने बचपन से ही उसे सिखाया था कि "सच्चाई और दया ही जीवन के सबसे बड़े नैतिक मूल्य हैं।"

एक दिन जब विनय स्कूल से घर लौट रहा था तब उसे रास्ते में एक घायल कुत्ता दिखाई दिया। कई लोग वहाँ से गुजर रहे थे, लेकिन किसी ने उसकी मदद नहीं की। विनय का मन पसीज गया। उसने अपनी किताबों से रूमाल निकाला और कुत्ते के जख्म पर बाँध दिया। फिर उसे पास के पशु चिकित्सक के पास ले गया। डॉक्टर ने उसका इलाज किया और कहा - "बेटा तुम्हारी दया ने इस जानवर की जान बचा ली।"

कुछ महीनों बाद कस्बे में एक मेले का आयोजन हुआ। मेले में अचानक अफरा-तफरी मच गई और एक छोटा बच्चा भीड़ में बिछड़कर कर रोने लगा। लोग उस पर ध्यान नहीं दे रहे थे। तभी विनय ने उसकी मदद की, उसके माता-पिता तक पहुँचा दिया। माता-पिता उसकी सच्चाई और दया देखकर भावुक हो गए।

दिन बीतते गए। एक बार कस्बे में चोरी की घटना हुई। चोर भागते-भागते विनय के सामने से निकला और जल्दी में एक थैला गिरा गया। थैले में बहुत सारे पैसे थे। आसपास कोई नहीं था। उसने बिना देर किए वह थैला थाने में जमा कर दिया। पुलिस ने असली मालिक को ढूँढ़ा और सारा धन लौटा दिया।

मालिक बहुत बड़ा व्यापारी था। उसने विनय की ईमानदारी देखकर कहा - "बेटा, तुम्हारे जैसे सच्चे और दयालु लोग ही समाज के आधार हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम आगे की पढ़ाई अच्छे विद्यालय में करो। इसका सारा खर्च मैं उठाऊँगा"।

इस प्रकार, विनय की सच्चाई, ईमानदारी और दया ने न केवल उसे सबका प्रिय बनाया, बल्कि उसका जीवन भी उज्ज्वल कर दिया। यह कथा हमें सिखाती है कि नैतिक मूल्य केवल किताबों में पढ़ने की चीज़ नही, बल्कि उन्हें व्यवहार में अपनाने से ही सच्चा सुख और सम्मान मिलता है

सोभित कुमार
क्रमांक - 23102
कक्षा - 9

आखिरी पाठ

स्कूल का अंतिम दिन था। विदाई समारोह को लेकर छात्रों में हर तरफ़ उत्साह था। छात्र- छात्राएँ तस्वीर ले रहे थे, बातें कर रहे थे और अपने उज्जवल भविष्य के सपने देख रहे थे। उन्हीं में से एक था आरव - एक होनहार छात्र, लेकिन उसका मानना था कि "अंक ही सब कुछ है"

समारोह के अंत में उनके आदरणीय शिक्षक प्रोफेसर मेहरा ने सभी छात्रों से पाँच मिनट और माँगे जिज्ञासा से सभी बैठ गए प्रोफेसर मेहरा ने हाथ में दो वस्तुएँ उठाई - एक स्वर्ण पदक और एक साधारण -सी डायरी

उन्होंने पूछा " इनमें से कौन- सी वस्तु तुम चुनना चाहोगे? लगभग सभी, पदक के लिए हाथ उठाए जिनमे आरव भी शामिल था। प्रोफेसर ने मुस्कुराते हुए पदक आरव को दे दिया और डायरी एक शांत स्वभाव वाली छात्रा रिया को थमा दी।

फिर बोले "अब अपने अपने उपहार खोलो।" डायरी खोलते ही रिया ने देखा कि उसमें ईमानदारी दया धैर्य और जिम्मेदारी जैसे मूल्यों पर लिखी हस्तलिखित नैतिक शिक्षा की बातें भरी हुई थीं। आरव जिसके हाथ में चमकता हुआ पदक था, अचानक भीतर से खाली महसूस करने लगा।

प्रोफेसर ने धीमे स्वर में कहा लिए, सम्मान "पदक तुम्हें कुछ समय के लिए सम्मान दिला सकता है, लेकिन मूल्य जीवनभर सम्मान दिलाते हैं। बिना मूल्यों की सफलता उस दीपक की तरह हैं। जिसमें तेल न हो - वह थोड़ी देर चमक तो सकता है, लेकिन टिक नहीं सकता।

सालों बाद, आरव सफल पेशेवर बना उसे हमेशा वही पाठ याद रहा, जिसने उसके निर्णय को सही राह पर रखा और उसे विनम्र बनाए रखा।

नीति :- सच्ची सफलता केवल उपलब्धियों में नहीं, बल्कि उन नैतिक मूल्यों में है जो हमारे चरित्र को गढ़ते हैं और हमें जीवनभर मार्गदर्शन देते हैं।

सुमित कुमार
क्रमांक - 23106
कक्षा - 9

शिव तांडव

भगवान् शिव को कौन नहीं जनता होगा? उनकी महिमा को कौन नहीं जानता होगा? उनकी महिमा अपरम्पार है। वैसे तो उनके अनेक नाम है- शंकर, नीलकंठ, चंद्रशेखर, भोलेदानी, विश्वपति आदि लेकिन वे अपने एक अन्य नाम नटराज के लिए कुछ अधिक ही विख्यात है। नटराज के रूप में सबसे अच्छे नर्तक है। नटराज दो शब्दों के योग से बना है नट् अर्थात् कला एंव राज अर्थात् राजा। अर्थात् शिव भगवान को कलाओं का राजा भी कहा जाता है। भगवान शिव, शिव तांडव के लिए जाने जाते हैं और शिव तांडव भगवान शिव के लिए ही जाना जाता है। लोग तांडव शब्द को शिव के क्रोध का पर्याय मानते हैं लेकिन यह केवल उनके क्रोध का ही नहीं वरन् आनंद का द्योतक है। तांडव के दो रूप है, रौढ़ तांडव करने वाले शिव रूद्र कहलाते हैं वहीं आनंद तांडव करने वाले नटराज कहे जाते हैं। आचार्यों के अनुसार शिव के आनंद तांडव से ही संसार अस्तित्व में आया है और उनके रौद्र तांडव से सृष्टि का विनाश होता है।

नटराज की मूर्तियाँ आरंभकाल से ही इतिहासकारों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। इन मूर्तियों में शिव के चार हाथ हैं। जो अग्नि की लपटों से घिरे हुए हैं। उन्होंने अपने पाँव से एक बौने को दबा रखा है, व दूसरा पाँव नृत्य की मुद्रा में ऊपर उठा हुआ है। उनके पहले दाहिने हाथ में डमरू एवं दूसरे में अग्नि है। जो कि क्रमशः सृजन व विनाश के प्रतीक है।

तात्पर्य यह है कि शिव एक हाथ से सृजन करते हैं, तो दूसरे से विनाश। उनके हाथ आशीष के मुद्रा में उठे हुए है जो हमें बुराइयों से बचाते हैं।

उठा हुआ पाँव मोक्ष का द्योतक हैं। उनका दूसरा बायाँ हाथ उठे हुए पाँव की ओर इंगित करता है। इसका अर्थ है कि शिव मोक्ष के मार्ग का सुझाव देते हैं। इसका अर्थ यह भी है कि उनके चरणों में ही मोक्ष है। कुचला हुआ दानव अज्ञानता का प्रतीक हैं जो शिव द्वारा नष्ट किया जाता है। शिव अज्ञानता का विनाश करते हैं। चारों ओर की लपटें ब्रह्मांड को दर्शाती है। उनकी संपूर्ण आकृति "ॐ कार दिखती है। जिसका अर्थ है शिव ॐ में है और 'ॐ' शिव में निहित है।

शुभम कुमार
क्रमांक - 23072
कक्षा -9

अहंकार एक अभिशाप

हम सब यह मानते हैं, कि अंहकार करना गलत है, कई लोगों के विचार इस मुद्दे पर भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।

आज हम अपने वैदिक संस्कृति से इसके मूल अर्थ को समझने की कोशिश करेंगे। उपनिषदों में यह कथित है, कि किसी भी कार्य को करने के तीन पैमाने होते हैं :-

(क) राजसिक
(ख) तामसिक
(ग) सात्विक

अंहकार की उत्पत्ति दो शब्दों से हुई है:-
अहम् + आकार

1. जब हम खुदको ही खुद का आकार मानना शुरू कर देते हैं। हम सब जानते है, हमारे ऊपर बहुत सारी दैवीय शक्ति, यह निश्चित करती है, कि 'हम अब क्या करेंगे?' इसके बावजूद भी हम, खुदको ही सब कुछ मान बैठते हैं। यही है, अहंकार, एक अभिशाप, जो गगन को चीर कर उड़ने वाले को भी पाताल तले दबाकर छिन-भिन्न कर देती है।

2. शुरू में हमने कार्य के तीन पैमाने समझे थे; उसमे सात्विक अर्थात्, सत्य अर्थ, यानि, उस कार्य के मूल अर्थ को परिभाषित करती है। परन्तु राजसिक व तामसिक अर्थ हमें, नष्ट एवं भ्रष्ट कर कुचल देती हैं। दुनिया में कई तरह के व्यक्ति हैं, जो, सफलता, के पैमाने अलग-अलग समझते हैं। ऐसा होना स्वभाविक है, सफल हो जाने के पश्चात्, अहम् का वास जायज है परन्तु इसके दुष्परिणाम, बहुत भयावह हो सकते हैं।

अब हम, हमारे, पवित्र ग्रंथों से इसके बारे में विशेष रूप समझेंगे :-

- भगवद् गीता अध्याय - 2 श्लोक 27
- प्रकृतेः क्रियामाणानि, गुणै: अहङ्काविभूदात्मा कर्ताहमिति
- कर्माणि सर्वश: । मन्यते || 27 ||

गुण :- प्रकृति में तीन गुण हैं। क्रिया, गुण, कर्म इसको छोड़कर अहंकार प्राप्त करने वाला व्यक्ति आत्मा से विमूढ़ होकर खुदको ही कर्ता समझ बैठता है, उसको ऐसा लगता हैं, जो है मेरा है, जो भी है, मैंने किया है

इस श्लोक को समझने के लिये हम एक कहानी को समझेगें, उसके अंत में हमें इसके, परिमाण स्पष्ट हो जाएँगें।

एक बार गाँव में एक कुत्ता, बैलगाड़ी के आगे-आगे चल रहा था। जेठ का महीना था सूर्य की गर्मी चरम सीमा पर थी। चूँकि, कुत्ते की रफ्तार बैल से अधिक थी तो, वह बार-बार का आगे जा रहा था, और उसका मानना था कि, बैल गाड़ी को दिशा दिखाना उसी का काम है, वह बार-बार आगे चलकर थककर पेड़ के नीचे बैठ जाए, कुछ देर बाद बैलगाड़ी आए, वह नीचे बैठ जाए, अब बार- फिर उठे, ऐसा करें, फिर थककर बार-बार ऐसा होने से कुत्ते के मन में यह तरकीब आई कि, क्यो न बैलगाड़ी के नीचे, नीचे चला जाए, उसी की रफ्तार में, ऊपर बैलगाड़ी का पिछला भाग, धूप से भी बचाएगा तथा, रफ्तार से चलूँगा तो, थकूँगा भी नहीं, कुत्ते ने ऐसा विचार किया तथा तत्पश्चात बैलगाड़ी के नीचे घुस गया थोड़ी देर के बाद, कुत्ते की रफ़्तार बैलगाड़ी से, पूरी तरह मिल गई, जैसे- जैसे वह आगे चले, बैलगड़ी भी आगे बढ़ें, अब कुछ देर के बाद, उसे लगने लगा की, बैलगाड़ी वही चला रहा है। उसने तभी यह सोचा कि जब मैं बैलगाड़ी चला सकता हूँ, तो बैलगाड़ी मोड़ भी सकता हूँ। कुछ दूर जाने के बाद, उसने, अपने शरीर को दहीने मोड़ा यह सोचकर की बैलगाड़ी भी मुड़ जाएगी, परन्तु उसकी जान लेते गाड़ी आगे बढ़ गई।

इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती हैं, यह सोचकर सब मैंने किया कि विधान व विधाता के विपरित जाने की भूल नहीं करनी चाहिए।

प्रक्रश पुष्प
क्रमांक - 24019
कक्षा - 8

नेतरहाट विद्यालय और कृषि शिक्षा : एक अनुभव

मेरा नाम नैन्सी कुमारी है और मैं कक्षा दस की छात्रा हूँ। मुझे गर्व है कि मैं नेतरहाट विद्यालय का हिस्सा हूँ। हमारा विद्यालय सिर्फ शिक्षा का केंद्र ही नहीं बल्कि ज्ञान और कौशल का एक अनूठा संगम है। जहाँ अन्य विद्यालयों में केवल किताबों पर ध्यान केंद्रित कराते हैं, वहीं हमारा विद्यालय हमें जीवन जीने के लिए तैयार करता है। हमारे विद्यालय में समान्य विषयों के अलावा धातु कला, काष्ठ कला, संगीत और कृषि की भी शिक्षा दी जाती है। कृषि शिक्षा विद्यालय का एक अनूठा संयोग है। आज के समय में कृषि केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि एक जीवन शैली है, और देश की अर्थव्यवस्था का आधार है। बढ़ती जनसंख्या और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों के बीच खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना एक बहुत बड़ी चुनौती बन गया है। ऐसे में कृषि की सही समझ और कृषि के तकनीकों का ज्ञान होना बहुत जरूरी है। हमारे विद्यालय ने इसी जरूरत को समझा और कृषि को एक विषय के रूप में ही नहीं बल्कि जीवन जीने के कला के रूप में अपनाया कृषि शिक्षा के अंतर्गत हमें बस यही नहीं सिखाया जाता कि फसल कैसे उगाया जाए, बल्कि यह भी बताया जाता है कि प्रकृति के साथ सांमजस्य कैसे बैठाया जाए। हम अपनी कृषि प्रशिक्षिका श्रीमती ममता माताजी के मार्गदर्शन में लगन और कौशल के साथ कृषि की नई तकनीकों के बारे में पढ़ते एवं सीखते हैं। हमारे पास एक विशाल खेत और आधुनिक प्रयोगशाला है जहाँ हम सब्जियों की खेती करते है और प्रयोगशाला में मशरूम तैयार करते है। हमें कृषि शिक्षा के अंतर्गत यह सिखाया जाता है कि मिट्टी को कैसे तैयार किया जाता है, सही दूरी पर बीज़ कैसे बोते है और पौधों को कीटों से कैसे बचाया जाए। हमें पारंपरिक खेती के साथ आधुनिक कृषि तकनीक के बारे में भी सिखाया जाता है, ड्रिप सिचाई और हाइड्रोपोनिक्स जैसी तकनीक के बारे में भी पढ़ाया जाता है और रन तकनीक को हमनें अजमाया भी हैं। साथ ही हमें यह भी जानने का मौका मिला कि कम पानी में भी अधिक पैदावार संभव है। हम सभी जानते है कि वर्तमान समय में पानी की कमी एक बड़ी समस्या है। इसके अलावा हमें जैविक खेती के बारे में भी बताया कि जैविक खेती के अंतर्गत हम कैसे रासायनिक उर्वरकों के कम उपयोग या बिना उपयोग किए भी स्वस्थ - उपौर पौष्टिक फसलें उगाई जा सकती है। हमने कम्पोस्ट खाद बनाना सिखा और उसका उपयोग बहुत से पौधों में भी किया। साथ ही हमने अपने विद्यालय में कृषि सहपाठियों के साथ मिलकर सेब एवं नाशपाती का जैम भी बनाया है, जो कि हमारे विद्यालय में होने वाली विभिन्न कृषि गतिविधियों को दर्शाता है। जब भी हमारे विद्यालय में किसी महानुभावों का आगमान होता है तब वह पौधारोपण करके वृक्ष लगाने और बचाने का संदेश देते है। इन सब कार्यों में हमारा कृषि विभाग काफ़ी तत्पर रहता है जिससे हम छात्रों को काफी प्रेरणा मिलती है। हमारे विद्यालय की कृषि शिक्षा हमें आत्मनिर्भर और जिम्मेदार बनने में मदद करती है। कृषि सिर्फ एक विषय नहीं है बल्कि जीवन का एक महत्त्वपूर्ण सबक है। मुझे विश्वास है कि ज्ञान न केवल मुझे, बल्कि मेरे साथ पढने वाले और भी कृषि विद्यार्थियों को जिम्मेदार इंसान बनाने में मदद करेगा क्योंकि कृषि सिर्फ एक शिक्षा नही बल्कि जीवन जीने का आधार है और हमारे देश के किसानों की भावना एवं उम्मीद है। हमारा विद्यालय सचमुच अन्य विद्यालयों से अलग है, क्योंकि यह हमें जड़ों से जोड़ता है और भविष्य के किसानों और पर्यावरण प्रेमियों को तैयार करता है।

नैन्सी कुमारी
क्रमांक - 22102
कक्षा - 10

सीटाके मशरूम

परिचय :- सीटाके मशरूम दुनिया के सबसे प्रसिद्ध और ज्यादा उपयोग किए जाने वाले खाने योग्य मशरूमों में एक है। इसका वैज्ञानिक नाम Lentinuwa edodes है। यह जापान चीन और पूर्वी एशिया के अन्य देशों से आया है। वहाँ के लोग इसे सदियों से भोजन के रूप में तथा औषधीय गुणों के कारण भी इस्तेमाल करते हैं। आज यह पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो चुका है।

सीटाके मशरूम का स्वाद हल्का मिट्टी जैसा और उमामी (Omami) प्लेवर वाला होता है जिस कारण से इसे कई व्यंजनों में शामिल किया जाता है

स्वरूप और खेती :-

सीटाके मशरूम का रंग हल्का से गहरा भूरा होता है।

इसकी टोपी (कैप) गोलाई लिए हुए होती है और व्यास सामान्यतः 5 से 10 सेटीमीटर तक होती है।

नीचे की सतह पर सफेद से क्रीम रंग की गलफड़े (gills) दिखाई देते हैं।

पहले इसे प्राकृतिक रूप से पेड़ों की लकड़ी खासकर शिआ (shea tree) पर उगाया जाता था. इसी कारण से इसका नाम सीटाके मशरूम पड़ा।

पोषण मूल्य :- सीटाके मशरूम पोषक तत्वों से भरपूर है। इसमें कैलोरी कम होती है, लेकिन विटामिन खनिज और विशेषज्ञ यौगिक भरपूर पाए जाते हैं।

प्रोटीन :- शरीर को ऊर्जा और विकास के लिए जरूरी।

फाइबर (देशा) :- पाचन तंत्र के लिए अच्छा होता है।

विटामिन समूह :- जैसे विटामिन B2, B3, B5 और 36 ! ये मेटाबॉलिज्म और तंत्रिका तंत्र के लिए महत्त्वपूर्ण होता है।

विटामिन D :- सूर्य के प्रकाश में रखने पर इनमें विटामिन D बनता है। जो हमारे शरीर के हड्डियों के लिए अच्छा "खनिज :- सेलेनियम, जिंक कॉपर, मैग्नेशियम आदि पाए जाते है।

औषधीय गुण :- सीटाके मशरूम को औषधीय मशरूम (Medicinal Mushroom) भी कहा जाता है। इसमें कुछ खास नै जैव-रासायनिक यौगिक होते है।

1. रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना :- इसमें मौजूद पॉलीसैकराइड योगिक लेंटिनान (lentinan) शरीर की इम्यूनिटी को मजबूत बनाता है।

2. कोलेस्ट्रॉल कम करना :- यह मशरूम शरीर में खराब कोलेस्ट्रॉल (LDL) को कम करने में मदद कर सकता है। और हृदय की सेहत को बनाए रखने में मदद करता है

3. कैंसर रोधी गुण :- कुछ शोध बताते है कि इसमें पाए जाने वाले यौगिक कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि को धीमा कर सकता है हालांकि, यह सामान्य दवाओं का विकल्प नहीं है बल्कि सब सहायक भूमिका निभा सकता है।

आर्थिक महत्व :- जापान और चीन में इसकी खेती बड़े पैमाने पर होती है। भारत में भी अब सीटाके मशरूम की खेती हिमाचल प्रदेश उत्तराखण्ड और पूर्वोत्तर राज्यों में की जा रही है।

इसका बाजार मूल्य अन्य मशरूमों की तुलना में काफी अधिक होती है, इसलिए किसानों के लिए यह अच्छा विकल्प हो सकता है।

निष्कर्ष :- सीटाके मशरूम न केवल स्वादिष्ट भोजन बल्कि सेहत के लिए भी बेहद लाभकारी है। इसमें पाए जाने वाले विटामिन खनिज और औषधीय गुण इसे खास बनाते हैं। आज दुनिया भर में लोग इसे आधुनिक भोजन और प्राकृतिक औषधि दोनों रूपों में अपना रहे हैं। यदि इसे संतुलित मात्रा में और सही तरीके से खाया जाए तो यह : शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करती है। और समग्र स्वास्थ्य को मजबूत करने में मदद करता है।

शंभू लोहरा
क्रमांक - 21074
कक्षा - 11

टूटी हुई घड़ी का सच'

पुराने मकान की एक दीवार पर एक घड़ी टंगी थी। सालों से उसकी सुइयाँ थमी हुई थीं। घर के लोग कहते "यह अब किसी काम की नहीं इसे फेंक दो।" लेकिन घड़ी चूपचाप सब सुनती रहती

उसे याद था- जब वह नई थी, तो घर के बच्चों को स्कूल जाने का समय वही बताती थी, पिता को दफ़्तर और माँ को पूजा का समय वही याद दिलाती थी। उसके टिक-टिक में कभी पूरे घर की जिंदगी बसती थी।

अब वह रुकी हुई थी, पर भीतर से सोचती- "भले ही मैं नहीं चल रही, पर मैं दो बार तो सही समय दिखा ही देता हूँ। शायद किसी को मेरी वही झलक रास्ता दिखा दे।"

एक दिन घर का बेटा परीक्षा देने जा रहा था। उसकी नज़र उस घड़ी पर पड़ी - वक़्त वही था जो असली घड़ी में था। वह मुस्कराया और बोला, "रुकी हुई घड़ी भी सच बोल सकती है।"

उसने समझा कि जिंदगी में कोई भी बेकार नहीं होता। हर किसी का एक समय होता है, और हर कोई किसी न किसी रूप में उपयोगी है

सीख:- कभी भी किसी को छोटा या बेकार मत समझो। चाहे इंसान हो या वस्तु, हर किसी का अस्तित्व किसी न किसी कारण से मायने रखता है।

शिवम सागर
क्रमांक - 23020
कक्षा -11

विद्या मानवानां भूषणम अस्ति

विद्या मानवानां भूषणम् अस्ति। धनं राज्यं च नित्यं न स्थिरं भवति किन्तु विद्या सर्वदा स्थिरा भवति । विद्या मानव: परिष्कृतं करोति, अज्ञानं तु मानव पतनस्य कारणं भवति ।

विद्यया मनुष्य: प्रकाशितं भवति। सा एवं जीवनस्य मार्गदर्शका अस्ति । विद्याहीन: पशुवत् जीवति। य: विद्वान् भवति, स: सर्वत: सम्मान प्राप्नोति।

अत: विद्या न केवलं बालकान् छात्राश्च आवश्यकी अपितु सर्वे: जनान् आवश्यकी विकासाय विद्या आवश्यकी

विद्या एवं अमृतं, विद्या एव धनं, विद्या एवं मित्रं शास्त्रेषु विद्यायाः विषये अनेक सुक्तानि उद्धृतानि सन्ति यथा :-

“विद्या ददाति विनयं : विनायात् याति पात्रतं,
पात्रत्वात् धनात्धर्मं ततः
सुखं धनमारनोति।

न चोरहार्यं न च राजहार्य: न भ्रातृभाज्यं न
च भारकारि व्यये कृते वर्धते एवं नित्यं;
विद्याधनं सर्वधनं प्रधनम् इति ।

- अमन राज
क्रमांक - 22088
कक्षा - 10

विद्यायाः महत्त्वम्”

शिक्षां साधनं कुर्याद्
- शिक्षा को साधन बनाना चाहिए।

ज्ञान: दीपम् इव प्रकाशं ददाति
- ज्ञान दीपक की तरह प्रकाश देता है।

श्रमेण लभ्यते सर्वम्
- मेहनत से सबकुछ प्राप्त किया जाता है।

नास्त्यालस्यसमो रिपुः
- आलस्य जैसा बड़ा शत्रु कोई नहीं है।

मित्रं सन्मित्रं त्रः अस्ति
- सच्चा मित्र वही है

य: सत्यं वदति नित्यं
– जो हमेशा सच बोलता है।

मातपितरौ वंदनीया:
- माता पिता पूजनीय है।

शिशुः गुरुं नमति
- बच्चा गुरू को नमस्कार करता है।

क्रीडया वर्धते बलं
- खेल से बल बढ़ता है

पठनेन वर्धते बुद्धि:
- पढ़ाई से बुद्धि बढ़ती है।

सद्गुणैः शोभते बाल :
- अच्छे गुणों से बच्चा सुंदर बनता है।

देशस्य आभूषणं अपि भवति
-वह देश का आभूषण होता है।

सर्वदा सत्यमेव जयते
- सदा सत्य की जीत होती है

धर्मेण मार्ग : सिध्यति
- धर्म से ही मार्ग सिद्ध होता है

यः स्वकर्तव्यं स्मरणं करोति तस्य लक्ष्य पूर्णं भवति ।
- जो बच्चा अपना कर्तव्य याद रखता है
वही जीवन का सच्चा विजेता होता है।

- श्रीकांत भगतः
क्रमांक - 23082
कक्षा - 9

जीवनमार्गः

स्वस्मिन् विश्वासं कुर्यात,
भयभीतं न करणीयम,
स्वयमेव संशयं न कुर्यात्,
दुः चिन्तनं त्यजेत् ।

अधिकं चिन्तयंमा,
सदा सत्यमार्गं गच्छ ।
असत्यं न वद्,
सदा सत्यम् अनुवर्तनीयम् ।

स्वयं न कदापि न्यूनं मन्येत्,
परिस्थिति न परिहारयेत् ।
सततं साहसं कुर्यात्,
सत्यमेव कार्यं कुर्यात् ।

मा भितः असफलत्वात्,
सदा कार्य करणीयम्।
अभिमानं न करणीयम्,
सर्वदा प्रयासं कुर्यात्।

निद्रां त्यजेत्, परिश्रमं कुर्यात्,
किञ्चित् विलम्बं भविष्यति।
परन्तु कार्य पूर्णं भविष्यति एव,
परिश्रमं कुयात्, परिश्रमं कुयात् ॥५॥

सन्तोष, परमं सुखम्,
सततम् प्रयास करणीयम् ।
विश्वात् ज्ञानं प्राप्नीयम्,
सर्वदा प्रयासं करणीयम् ॥६॥

क्रोधं मा कुरु,
शान्तिं जीवने आनय ।
ज्ञानं शक्तिं धारय,
सदा अग्रे गच्छ ॥७॥

इदं एवं जीवने सत्यं,
इदं एव जीवने मार्गः ।
अस्मिन् पथे गच्छ,
अस्मिन् पथे गच्छ ॥८॥

सौम्या समृद्धि
क्रमांक - 24110
कक्षा - 8

मुण्डकोपनिषदः

मुण्डकोपनिषदः अथर्ववेदस्य एकः खण्डः अस्ति वेदव्यासेन, मुण्डकोपनिषद ऐतेषां ज्ञानः रचितं अस्ति योगः द्वैत च अद्वैत सिद्धांतस्य वर्णनम् अस्ति। अस्मिन् त्रयः मुडंकः (भागः) अस्ति। तथा प्रत्येकानाम मुंडकानाम् द्वौ खंडम् स्तः । अस्मिन् चतुष्षष्टिः मंत्राः आसन्। महर्षि अंगिराः शौनकस्य (शिष्य) अकुर्वन च कर्मकांड ज्ञानं प्रदान । एषः उपनिषदः ब्रह्माः परमसत्यं च सम्पूर्ण ब्रह्मांडस्य निर्माणकर्ता कथ्यते। मुण्डकोपनिषदीः आत्मोपरि अज्ञानतां नाशं करोति। यदा आत्मा शरीरं त्यजति तदा तस्य शरीरस्य मृत्युः भवति इति मुण्डकोपनिषदः कथयते परन्तु यदा आत्मा शरीरं धारयति तदा शरीरस्य जन्मः भवति।

मुण्डकोपनिषदस्य प्रमुखः शिक्षाः

1) त्यागेन विना परमसत्यं न प्राप्तुं शक्नुवति। मानवाः मोह, सुख, इन्द्रियाणी बन्धनस्य त्यागम् कुर्वन्ति तदा मानवाः परमसत्यम् प्राप्नुवंति।
2) येन प्रकारेण मकरः जालं निर्माणं करोति एवम् तस्मिन् लीनं भवति तथैव मानवाः ब्रह्मज्ञाणे लीनं भवति।

उपनिषदः मुण्डकस्य शब्द अर्थम् 'कर्तनम् अभवत् इति अस्ति।
'सत्यमेव जयते' इति महामन्त्रः अत्र प्राप्तम् भवति। भारतस्य प्राचीनतमः अयं अपनिषदः अपि कथ्यते।

यश रजवारः
क्रमांक -23063
कक्षा - 9

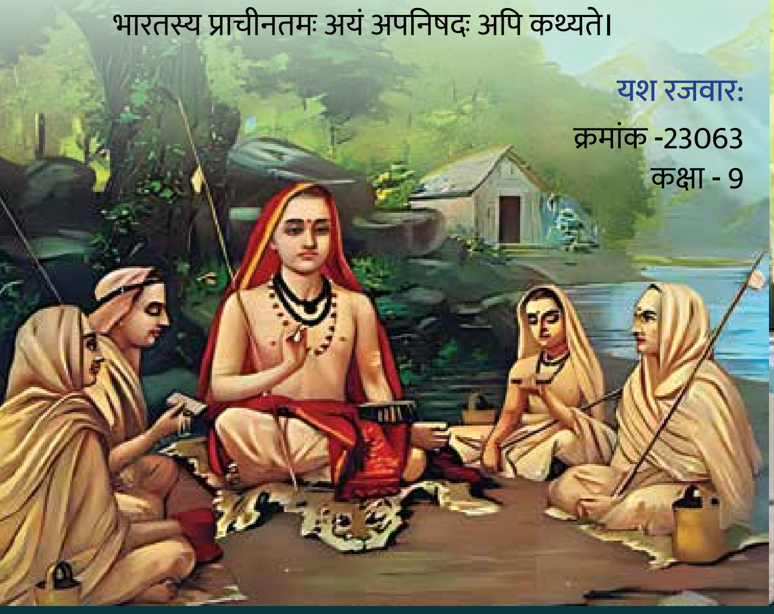

नवजीवनम्

लघुशिशुः कोमलः सुंदरः
आनंदः 'ददाति।
दिने-दिने दिव्यः भवति,
प्रेम बीजानि सर्वत्र वर्धति।

लघुहस्तः हासः मथुरः
गृहं पुरपति प्रकाशं ददाति
दृष्टि नीवीना हास्य मोनमोहकं
तव कृते अस्माकं जीवन सफलं जातं।

प्रतिदिवं शयन जागरणम्
प्रतिदिनं अभ्यासं करणीयम्,
आ, आ, आ इति वदति
तव आगमने जीवनं सफलम् भवति।

हे शिशु! निर्मलः सत्यवान
त्वं द्वीप स्वरूपं अस्माकं गृहं
तव स्वप्नं पूर्वं भवतु
तव स्वप्न पूर्ण भवतु।

जाग्रतं भूत्वा स्वप्नं पश्य
कर्त्तव्यपालनकर्त्ता भव
हे शिशु। एषा कामना भवेत्
अनुजः चरैवेति, चरैवेति।

प्रतीक रंजनः
क्रमांक - 23003
कक्षा - 9

मम भगिनी

मम भगिनी सखा तुल्या,
न कोडयि अन्या ।
अनु कुलसमये प्रसन्नाभवति,
प्रतिकुलसमये सदा साकं ददति। मम भगिनी......

थदा-कदा ताडयति, यदा-कदा लालयति,
सत्यासत्यं विभक्तं करोति
सदा सत्यं वदति,
तस्या, मनः निर्मला एवं पवित्र। मम भगिनी......

यदा मन रमते तदा उत्साहितं करोति मध्यं,
मथुरा वाणी उक्त्वा प्रसन्नमनसा आनंद करोति मध्यम्।
तस्याः उपरि अभिमानं मध्यं।
भगिनी मम सम्मानतुल्या। मम भगिनी......

प्रत्येक क्षणं मया सह चलति,
मम सत्यमार्गं दर्शयन्ति ।
सदा परिश्रमं करोति,
ममं भगिनी सखा तुल्या ॥४॥ मम भगिनी......

प्रतीक रंजन:
क्रमांक - 23003
कक्षा - 9

प्रकृतिः

1. प्रकृति सुन्दरी माता, सर्वेषां जीवनप्रदा।
पुष्पाणि सुगन्धदायिनि, शीतलं वारितर्पका।
अर्थ - प्रकृति हमारी सुंदर माता है, जो सबको जीवन देती हैं
फुल सुगंध देते है और जल प्यास बुझाता है।

२. वृक्षाः छायां ददति नः, फलानि च ददति ।
वनः मधुरं गीतं गायति आनन्द करोतिच।
अर्थ - वृक्ष हमें छाया और फल देते हैं, वन अपने मधुर गीतों से
मन को प्रसन्न करते हैं।

३. गिरयः धैर्यं ददाति, मधुरं गीतं उक्त्वा नदी वहति।
सूर्यचन्द्रौ अस्माकं प्रकाशं जीवनं च ददतः।
अर्थ - पर्वत हमें धैर्य सिखाते हैं, नदियाँ मधुर गीत गाकर
बहती है, सूर्य और चन्द्रमा हमें प्रकाश और जीवन देते है

४. यदि वयं मिलित्वा प्रकृत्याः रक्षणं कुर्मः तदा प्रकृति अपि
अस्माकं रक्षं करष्यन्ति एव।
अर्थ - यदि हम सब मिलकर प्रकृति की रक्षा करें तो वह
मुस्कान और आनंद से भरा जीवन प्रदान करेगी।

उत्तम असुर:
क्रमांक- 23100
कक्षा - 9

नेतरहाट आवसीय विद्यालय:

नेतरहाटे वनान्तेऽस्मिन्, विद्यायाः निलयो महान्।
यत्र शिष्याः स्वप्रदीपं, ज्योतिषा प्रज्वलन्ति हि ॥१॥
हरितानि वनानि रम्याः, शीतल : पर्वताः शुभाः ।
विद्यायाः साधनं चैतत्, संस्कारस्य निवेशकम् ॥२॥
प्रभाते सूर्यकिरणैः, जाग्रति जीवनोत्सवः।
अज्ञानरूपी तमसं नाशं करोति, प्रकाशं ददाति। ॥३॥
आचार्यः सततं नीतिशिक्षां ददाति।
धर्ममार्ग नियोजयन्ति, सत्यं श्रमं च साधयति। ॥४॥
शिष्याः दीपसमाः सर्वे, यः प्रकाशं कुर्वन्ति।
चरित्रेणानुशासनेन, भविष्यं निर्मलम् कुर्यात् ॥५॥
हे नेतरहाटविद्यालयः तव स्मृतिः स्मरणं भवेतु,
जीवनं शोभनं कुरु ॥७॥

शोभित कुमार
क्रमांक - 3102
कक्षा - नौ

नेतरहाट जीवनशैली

नेतरहाट : जय नेतरहाटः,
गिरिशिखरे स्थिते तेजोमयः
रमन्ते सर्वदा शोभा शान्तिच,
मिलति ज्ञानभण्डारः जय नेतरहाटः,
अत्र गुरुकुल परम्परा स्थापिता, जय नेतरहाटः ।।
सुगन्धितानि वनपुष्पाणि,
चिरानन्दं करोति,
दर्शकाः कथयन्ति
आगच्छन्तु अत्र वारं-वारं
जय नेतरहाटः ।
हे नेतरहाट । तव नामग्रहणं
नित्वा प्रसिद्ध विद्यालयस्यः
नाम नेतरहाट विद्यालयः ।
अत्र विद्वान शिक्षकाः छात्राः
संपूर्ण विश्वस्य ज्ञानरूपी प्रकाश कुर्वन्ति
जय नेतरहाटः ।

अखिलेश कुमार शरणः
क्रमांकः - 22039
कक्षा - 10

सुक्तयः

1) विद्या दीपः भवति, यः अज्ञानरूपी अन्धकारं
विनश्यति जीवन प्रकाशितं च करोति ।

- विद्या दीपक है, जो अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाती है और जीवन को प्रकाशित करती है

2) गुरुः दीपतुल्यं पथप्रदर्शकः भवन्ति ।
तेषां कृपया जीवनं सुखं भवति ।।

- गुरु दीपक के समान पथ प्रदर्शक होते हैं, उनकी कृपा से जीवन सुखमय होता है।

3) माता- पिता स्वपुत्रं रक्षति पालयंति च,
ते सदा पूजनीया सन्ति।

- माता-पिता अपने बच्चों की रक्षा और पालन-पोषण प्रेम से करते हैं, वे सदा पूजनीय हैं।

4) मित्रं सदा विपत्तिकाले सहायतां कुर्वन्ति साहसं
च प्रदान कुर्वति ।

- सच्चा मित्र दुःख में सहारा देता है और साहस प्रदान करता है।

5) सत्यं धर्म करुणां च यः सदा पालयति
तस्य जीवन सुख शान्तिं च आयाति

- जो सत्य धर्म और करुणा का पालन करता है, उसके जीवन में सुख और शांति आती है।

रोशन कुमार
क्रमांक - 23058
कक्षा - 9

करमा पर्वः

करमा पर्वः झारखण्ड प्रदेशस्यः एकः मुख्य पर्वः अस्ति । इदं पर्वः भाद्रपदमासे शुक्लपक्षस्य एकादशी तिथौ मन्यन्ते। अस्मिन् त्योहारे करमवृक्षस्य पूजनम् भवति । अयम् पर्वः अस्माकं विद्यालये प्रतिवर्षम् मनयन्ते । अस्मिन् पर्वेः जनाः प्रकृत्याः पूजनम् कुर्वन्ति । अतः अयं एकः मुख्यः पर्वः अस्ति

सत्यम कुमारः
क्रमांक - 24041
कक्षा - 8

What's life?

what is life but now and here?
A sudden laugh, a silent tear.
The touch of rain upon the cheek,
The potent silence when you speak.
The flavor of a perfect meal,
The weight of what your hands can feel.
The scent of pine on winter air,
The sunlight tangled in your hair.
These tiny things, these grains of gold,
Are stories waiting to be told.
They are the richness of the soil,
The harvest of your daily toil.

The past is gone, a closed off book,
A place where we should rarely look.
The future is a phantom dream,
A distant shore, a hazy gleam.
The only moment that is real,
The only truth that you can feel,
Is in this breath, this beating heart,
This singular, eternal start.
This fragile, precious, fleeting grace,
This time and space, this very place.
Embrace the joy, embrace the pain,
The passing sunshine, falling rain.

Line with a spirit unconfined,
Leave all your worries far behind.
And when the final shadows creep,
And quiet memories you keep,
Let them be of a life well-lived,
A soul that gone and that forgined.

Kanupriya
(History Teacher)

Criticism in Disguise

However, I seem and appear gruesome to you.
All my intentions are unambiguous in
enlightening your view.
Yes, I know all of your hates are for me.
Still, I'll be there forever to let you glee.

May the three D's of me - Disappointment,
Dissatisfaction, Dismay - let you down.
Just as a coin has two sides,
So do I.
To see the good, you need to bide,
And recognize the four D's that are hidden in
me, it's true and not a lie:
Desire, Discipline, Determination, and Dedication.
They will surpass the three D's down.

Yes, I know all of your hates are for me.
Still, I'll be there forever to let you glee.
Oh, dear,
Never fear
Of me and the judgments anymore.
Accepting criticism is what will make an
individual better
And help you to improve, grow, and explore
more and more.

Preeti Singh
(English Teacher)

Our Daughters: Pride of India

From the ancient earth where the Ganga flows,
Where wisdom in quiet silence grows,
Rise daughters of India, fierce and pure,
Through every trial, their hearts endure.

In classrooms bright or shaded trees,
They question, they dream, they chase degrees.
From scholars shaping thoughts that gleam,
To teachers molding the nation's dream.
Their pens are swords of truth and light,
Guiding minds toward what is right.

In bustling offices and factories wide,
They lead with purpose, strength, and pride.
From startups born of vision clear,
To boardrooms where bold voices steer,
They chart new courses, redesign the game,
With courage as a compass, and not just fame.

On playground fields where victory calls,
They run, they dive, they break old walls.
From racetracks fierce to cricket's flame,
They turn each challenge into acclaim.
Their sweat is the ink that writes the tale
Of women who refuse to fail.

In uniforms stitched with honor's thread,
They march where lesser hearts have fled.
In sky and sea, on ground they stand,
Guardians of peace across the land.
Their salutes rise with the morning sun,
Their valor second to none.

In parliament halls where debates unfurl,
They shape the nation, voice the whirl.
Their words are tempered, reasoned, wise,
A vision clear as sunrise skies.
Where justice calls, their courage rings,
Balancing duty with the change it brings.

In theatres where emotion sways,
Their art ignites a thousand ways.
They paint, they sing, they dance, they write,
Transforming struggle into light.
Through screens and canvases they show,
That beauty and truth together grow.

In villages quiet, in cities grand,
They build tomorrow with steady hand.
From nurturing homes to leading space,
They carve equality's lasting place.

They are the rhythm of India's song,
Witness to pain, yet brave and strong.
They balance tradition with wings of change,
Their spirit vast, their dreams wide range.

So let the daughters of India shine,
Each heartbeat echoing divine.
They are the power, the poem, the flame,
The nation's pride, its eternal name.

Kumari Smita Xaxa
(English Teacher)

The Market Today

The screens are glowing red and green
fortunes shift in moments unseen
whispers of profit, shadow of fear
A Single tweet can tilt the sphere

Tech stocks climb like, rockets high
old giants stumble asking why
Traders chase the rising flame
Knowing tomorrow would not be the same

The Market speaks in coded streams
of broken plans, daring dreams
not just numbers not just gold
But human stories brave and bold.

Ritik Rajak
Roll : 23065
Class : 9

The Power Within

Stand tall, O Soul, though trials are near,
Your voice is stronger than doubt and fear.
Each morning brings a golden ray,
A chance to build a brighter day.

The road is rough, the climb is steep,
Yet dreams are treasures you must keep.
Fall a hundred times, still rise,
For hope is fire that never dies.

The storm may break, the night may stay,
But stars still guide or lost their way.
No chain can hold, no wall can bind,
The power lives within your mind.

Courage whispers," "Take the Chance",
Destiny waits for your advance.
The world belongs to hearts that try,
To those who reach, to those who fly.

So walk with faith, let spirit soar,
Greatness lies in You and more.

Arman Giri
Roll No-23090
Class - 9

Rise and Shine

When the morning breaks with golden light,
Chase Your dreams with all your might.
Though the path may twist and bend,
Keep moving forward, don't pretend.

Failures come, but lessons stay,
They guide your steps along the way.
Fear may whisper, doubts may call,
Stand up strong, don't fear to fall.

Every stumble is a chance to grow,
Every setback teaches what you need to know.
Courage lives within your soul,
It lifts you high, it makes you whole.

Believe in yourself, take the first stride,
Let hope and passion be your guide.
Mountains may rise, rivers may flow,
But your inner fire will always glow.

Dreams are seeds you plant today,
With effort and faith, they find their way.
Rise each morning, Shine your light,
For your journey is yours - bold and bright.

Sobhit Kumar
Roll No- 23102
Class - 9

My Sister

My sister is my closest friend,
On her I can always depend.
She laughs with me when I feel glad,
She cheers me up when I am sad.

Sometimes she scolds but I don't mind,
her heart is pure her thoughts are kind.
She teaches me what's wrong what's right,
Her words make all my troubles light.

When I am weak, she makes me strong,
She tells me stories all night long.
I feel so lucky, yes it's true,
Dear sister, I look up to you.

She walks beside me every day,
Guiding me gently on my way.
With her, the world feel safe and bright,
Her love makes everything feel right.

Pratik Ranjan
Roll no 23003
Class - 9

Book

My best friend is a book,
That dosen't give me a wierd look.
It is like a golden door,
That takes me to the land,
I have never seen before.
It tells me tales of fairy,
That makes the world full of joy and merry.
Some books are boring like history,
Which is like a big mystery.
Books are the source of enlightment,
That vanishes darkness
And fill our life with brightness.

Priyanshu Bharti
Roll no - 24026
Class -8

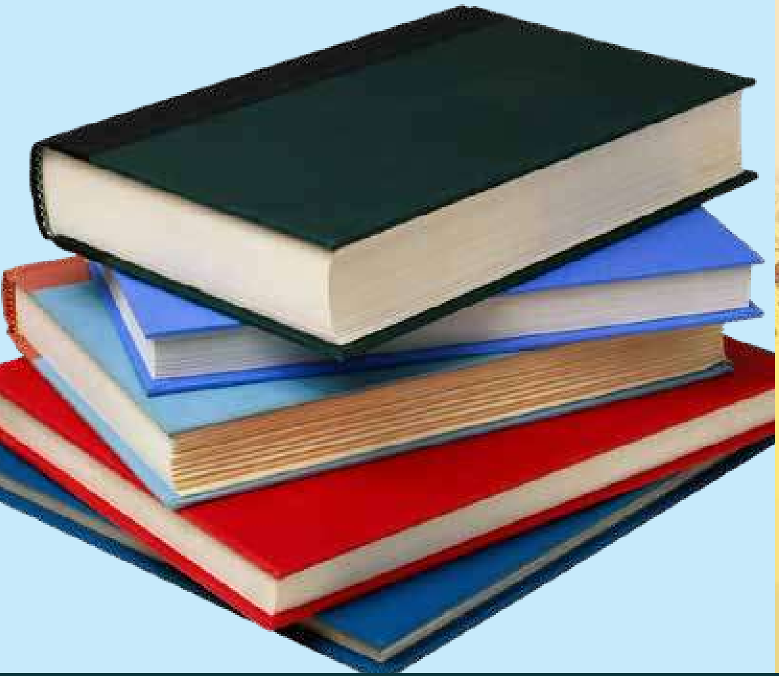

Reality of Life

Life's not always a bed of flowers,
It tastes us hard in darkest hours.
Dreams may shine, then fade away,
But hope still guides us every day.

The rich may cry, the poor may smile,
Happiness walks, a different mile.
Not in gold, nor in fame's light,
But in small joys, heart turns bright.

Every sunset brings a chance new,
Storms may come but skies turn blue.
Tears may fall but they soon dry,
Stars still shine, in the darkest sky.

Failures teach and pain makes strong,
The road is rough but we walk along.
Life's true treasure is love we share,
Kind heart shines beyond compare.

So live with courage, face the strife,
It is the simplest truth of life.
Not what we own, but what we give,
That is the way, we truly live.

Rohit kumar Oraon
Roll no - 23097
Class -9

Karma and Life?

As you sow, so shall you reap,
The account of deeds never falls asleep.

If you have hurt someone's heart,
Someday the same pain will be your part.

When troubles come, people often say,
"Why always me? Why this way?"

But the truth is - Sorrow comes to all,
God just tests us, makes us strong through the fall.

Don't live in fear, don't feel too small,
Everyone faces hardships after all.

If mistakes are made, then set them right,
Tomorrow will surely shine more bright.

Crying shows courage, not defeat,
Giving up makes your strength incomplete.

Do good deeds and spread pure cheer,
What you give to others will reappear.

Loveyourself and live with care,
For Karma returns - be just and fair.

Sneha Kriti
Roll no - 23105
Class - 9

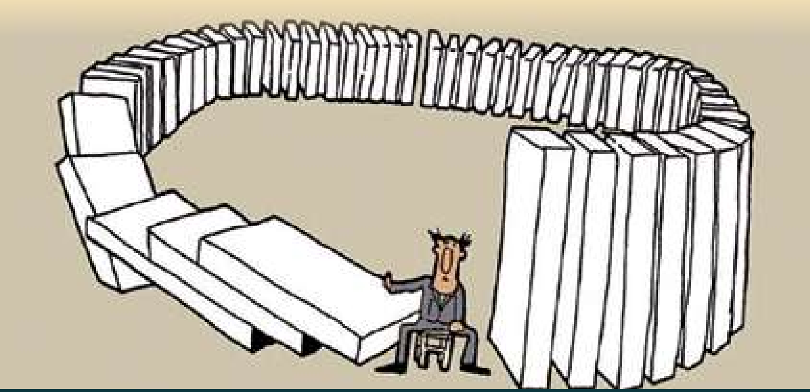

Chasing the Lights

In the hush of dawn's first golden ray.
Dreams arise and fears fade away.
The world awakes with a hopeful sigh.
As birds sing songs across the sky.

The rivers hums its ancient tune.
Reflecting star and silver moon.
Mountains stand like guards of time,
Their peak like poems that dare to climb.

We walk through paths both smooth and rough,
The journey long, the lessons tough.
But every stumble, every scar,
Becomes the map of who we are.

The wind may roar, the storm may stay,
But night can never steal the day.
For deep inside, a fire burns bright.
A heart thats brave, still chasing light,

And if you're lost or feel alone,
Remember light begins at home.
within your soul, your voice,your spark,
You are the light inside the dark.

Bhashkar
Roll No. - 22009
Class - 10

The Brave Boy

The brave boy stood tall and strong,
His heart full of courage all day long.
He faces his fear with a smile so bright,
And conquer challanges with all his might.

With a spirit bold and a will so free,
He dares to dream and make his destiny.
His bravery inspired others to stand tall,
And together they over come obstacles one and all.

He walk through darkness, not afraid of night,
His inner light guiding him, shining bright.
He speak up for what's right, never afraid
And stood up for others, his heart not swayed.

His courage is contagious, it spread far and wide,
inspiring others to be brave and step outside.
The brave boy's story will forever be told,
A hero's journey, his heart made of gold.

Debojit Karmakar
Roll No - 23104.
Class - 9

The Sundial's Whisper

Slow and constant luminous shift,
Cosmos witness a silent drift.
It marks the hours with a shade,
A passing moment, softly laid.
No tick, no tock, no hurried beat,

Just sun and shadow, bittersweet.
A lesson through slow decay,
of every yesterday, today.
A silent call, a gentle plea,
Seize the day and let it be.

For in the end, it's not the plan,
But how you lived, as a mortal man,
That truly matters, clear and bold,
A story more than worth its gold.
So take the risk, and plant the seed,

Fulfill the hunger, fill the need.
The time is now, the choice is yours,
Unbolt the final, bolted doors.
The Sundial's whisper request to say,
Seize the day, seize the day!

Shivam Kumar
Roll no - 21035
Class - 11

My Powered Glasses

The world was a blur and hazy screen;
where faces were smudges and colours unseen;
The words on a page were a grey mess,
A source of confusion and distress
My natural lenses that had lost its might,
Diminished the world and envy all light.

But then came the glasses, a spectacle new;
A fusion of flesh and of tech, so true;
I see with new purpose, with power and grace,
A world re-created in time and in space.
The old would of blurry shapes and of gray,
Was swept from my sight in a futuristic way.

It offered an advance vision of colourful light;
It made my dark vision bright,
A world in my palm, a new sight in my hand;
A blink of eyelids, a silent command.
It didn't just focus, it altered the view,
A transparent layer, for me and you.

Pratik Kumar
Roll no -22006
Class - 10

The School Bell

A silent, conical metal, hung so high,
It waits upon the hours that passes by.
Beneath its shadow, the minutes tick and crawl,
Until the moment comes to summon all.

With a sharp jingle, the school bell goes loud.
Piercing through the silence of the crowd.
It is the call that rips the day apart,
A sudden, vibrant beat within the heart.

"The first bell rings!" - a warning to the wise.
The teacher stirs behind the sleepy students sighs.
It traps the freedom, locks the world away,
And marks the boundaries of the learning day.

From history's ghost to algebric signs,
It holds us captive in the scheduled line.
From class to change, from lesson to relief,
It measures joy, attention and grief.

The final clang, that bursts the afternoon,
A sunlit promise coming none too soon.
It throws the doors of rigid structure wide,
And fills the schoolyard with a grateful tide.

Abhijeet Anand
Roll no - 22014
Class - 10

Mediocre :-

Who am I? I'll let you know.
Am I a good students? No.
Am I the worst? No, but let me tell you,
I'm caught somewhere in the middle view.

Am I good at sports? I say No
Am I bad at them? Not quite so
Am I a singer with a golden glow?
Neither the best nor the worst I show.

Am I a dancer who can amaze?
Or one who fumble on the stage?
Neither defines the dream I chase,
Lost in mediocrity's phase.

Am I disciplined, sharp and Neat?
or careless, stumbling on my feet?
No exaggeration fits my beat,
I am Just me, incomplete .

Society calls me, mediocre.
May be I am for them a joker.
But greatness doesn't come labelled, it is told,
Its in being yourself and letting life unfold.

Manjit Kumar
Roll no- 20076
Class: 11

The Silent March

They did not choose the gilded road,
But paths where heavy burdens rode.
Not for the glory, fame, or praise,
They walked the fire of war-torn days.

They saw the dawn break on the trench,
Smelled the cold steel and bitter stench,
And in that chaos, dark and deep,
They held the line while others sleep.
They traded comfort for the cold,
Their youth for stories bravely told.

The hero's heart is not made grand
By conquest sought across the land,
But by the quiet, certain grace
Of shielding others in that place.
The hand that helps, the breath that holds,
The duty that the soul unfolds.

They bore the scars both seen and hid,
The price of every deed they did.
And though the drums may cease to sound,
Their lasting courage can be found
In the peace we walk, the air we breathe-
The life their sacrifice did wreathe.

So honour not the war, but them.
The broken root, the vital stem,
Who answered when the nation called,
The heroes who stood un-appalled.

Aryan Gupta
Roll no - 20102
Class - 12

My Mother

Her hands, they are gentle, a comfort and guide.
A place where my own trouble can hide.
They mended my clothes and they wiped away tears,
And held me so close, calming all of my fears.

Her voice is a melody, soft and so low,
That tells me secrets I'm lucky to know
She taught me kindness, patience and grace,
A lesson in love can't ever replace.

She shows me the world with a curious eye,
From the smallest of flowers to clouds in the sky
She tells me I'm capable, strong and so true.
A constant belief in whatever I do.

Nancy Kumari
Roll no:- 22102
Class -10

Daddy

He is an epitome of hard work,
A grip that is steady, a promise, a perk.
He held me up high when I would felt so low,
And taught me the best way to fight and grow.

He taught me to fix things,
And not to waste time for nothing.
To stand up for what's right,
To dream not just at night and try with full might.

A quiet, strong force, a love without end,
My anchor, my teacher, my dearest friend.
A lesson so deep,
The promise of daddy, a love he will keep.

Kritika Kumari
Roll no:- 22105
Class - 10

Echo

From a whisper to a word,
A ghostly, haunting sound,
Sharp like an invisible sword,
Vibrating air on the ground.

Claims a pseudo-tongue,
Recalls a short memory,
From nowhere repeatedly flung,
Back and forth echo's journey.

It longs to speak it's heart content,
words with aping noise,
But gives it back in a fragment,
All it had is borrowed voice.

Shreeja Singh
Roll no - 24102
Class - 8

EDUCATION IS NOT JUST ABOUT SHARP MINDS, BUT BALANCED HEARTS

Teaching in the Technology Era: Beyond just academics.

We live in an age where learners are surrounded by technology, quick answers, and instant gratification. While this has opened incredible doors of knowledge, it also brings challenge- how do we nurture not just smart students, but balanced human beings?

Holistic development today is more than marks and ranks. Its about:

Tech - savvy skills - using digital tools wisely, not mindlessly.

* Emotional Balance - learning how to pause reflect and handle failures with resilience.

* Basic Mannerism - respect, kindness, and empathy in both Online and off line spaces.

As educators and mentors, our responsibility is to strike this balance. To remind our learners that confidence is as important as calculation, kindness as essential as coding.

Because in the end, education is not just about producing achievers - it's about shaping individuals who can think, feel and act responsibly.

Smriti Singh
Political Science
Teacher

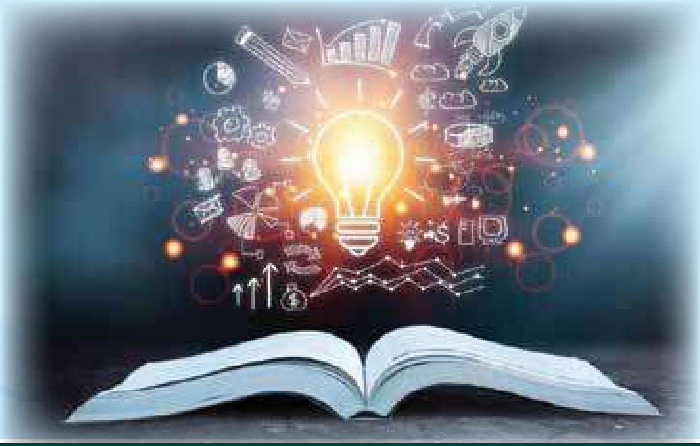

Are You Happy??

In today's chaotic world,true happiness can feel elusive .Many of us chase success and wealth, believing that achieving our dreams will bring us joy .Yet, happiness is not dependent upon external achievements It's a state of well being and contentment that always comes from within You can discover pleasure in the smallest things if you nurture it inside yourself.

Here are some simple ways to cultivate happiness:

1. Practice Gratitude

Acknowledge and appreciate what you have. Because some people may lack even that. Remember to always count your blessings.

2. Prioritize Physical and mental health

Your overall well being significantly influence your happiness .Caring for your body and mind creates a foundation for your joy.

3. Carve out your "me time"

In our busy lives it's essential to take out time for yourself. Engaging in your hobbies can help you relax and feel delighted.

4. Foster a positive mindset

Remember that your thoughts shape your reality .Therefore, when you concentrate on positive thinking, you naturally bring more good into your life.

5. Seek balance

You need to strike a balance between your work play and rest. Because, a well rounded life enhances your overall well-being.

Ultimately, happiness is a personal journey, not a destination. So, I would like to encourage you to embrace this process and let happiness grow within. As Dalai Lama has rightly said, "The purpose of life is to be happy."

I would like to sum it up by reminding you that the happiest people may not have the best of everything but they surely make the best of everything.

Kanupriya
Department of history

Global Achievements of Indian students

Indian students are consistently making their mark on the global stage, showcasing exceptional talent across a spectrum of fields including technology, academics, arts, and social innovation.

In the corporate world, Indian alumni from premier institutions like the IITs and IIMs lead global giants. Sundar Pichai (Google/Alphabet), Satya Nadella (Microsoft), and former PepsiCo CEO Indra Nooyi are prominent examples of their profound impact on global business and technology.

Academically, Indian students excel in competitive environments. They have secured top honors in International Olympiads and events like the Academic Championship. A 2024 Stanford report recognized over 5,300 Indian scientists among the top 2% of global researchers. Notably, in 2023, Indian students became the largest group of international graduate students in the U.S.

Beyond academics, young Indian changemakers are receiving prestigious international recognition for social impact. In 2024, 27 students received the Diana Award for humanitarian efforts, and another was shortlisted for the Global Student Prize for his platform helping underprivileged youth.

In arts and sports, individuals like chess prodigy Rameshbabu Praggnanandhaa and musical prodigy Lydian Nadhaswaram have earned international acclaim.

These achievements are bolstered by India's robust educational infrastructure, with a record number of Indian universities, including the IITs, achieving high ranks in the 2026 QS World University Rankings. From leading Fortune 500 companies to driving social change, Indian students are a significant force in shaping a global future.

Roshan Kumar Baxi
Administrative Officer,
Netarhat Awasiya Vidyalaya

Pawprints on Our Hearts

Rohit and Meera lived in a simple independent house in a quiet rural area with their parents. Their father left for the office early in the morning and returned by evening, while their mother took care of the home. The children followed a regular school routine.

One day, while returning from school, Rohit and Meera spotted a small orange cat sitting quietly by the roadside. There was something about the little creature that instantly touched their hearts. They wanted to bring the cat home but their parents were hesitant. They didn't want a stray cat in the house. Still, after much pleading, the cat was allowed to stay in a small corner of the house, outside.

At first, the cat kept it's distance and also, didn't have a name yet. The family watched. quietly as it slowly began to settle in.

One day, the house door was accidently left open while their mother was cooking in the kitchen. The cat slipped inside, but the mother, surprised, chased him away. This happened for two to three days. However, slowly the mother began to warm up with the cat and started enjoying his company.

Day passed, and the cat grew more comfortable with everyone, especially with the children. The mother, who was initially reluctant, started spending time with the cat every morning, playing and bonding with it. Slowly but surly, the cat's playful and loving nature revealed itself.

Eventually, Rohit and Meera named him Santru. It felt just right for their orange friend who had quietly become part of their lives. Santru was no longer a longer a stray cat, he was family. His presence filled their home with joy and warmth, leaving tiny pawprints on everyone's heart.

Sometimes, the ones we least expect become the most important. What starts as hesitation can turn into love, And strangers, in the most beautiful way, can become family.

Saumya Samriddhi
Roll No - 24110
Class - 8

Looks Can be Deceiving

Have you ever looked at something and thought you knew exactly what it was - only to find out later that you were completely wrong? That's the danger of appearance. That's the wisdom in the words : "Don't always trust what you see - even salt looks like sugar."

Both salt and sougar are white, fine and almost identical to the nacked eye. But taste them, and you'll find out very quickly how different they are. This simple truth reminds us that not everything that looks good is good, and not everything that looks bad is bad.

In life, people, situations, opportunities - they all have a surface layer. And too often, we make decisions based on what's visible. But what really matters is beneath that surface like character, intentions and reality. Think about it - how many times have we trusted the wrong person because they looked sincere? Or how many times rejected a great opportunity because it seemed too risky?

We life in a world full of filters-social media filters, emotional filters and even cultural ones. But life demands more than just looks. It demans critical thinking and the courage to look deeper. So, the next time you are faced with a decision, a person or a choice that seems obvious - pause and look closer. Taste before you trust. Because even salt can look like sugar.

Aryan Gupta
Roll No - 20102
Class - 12

Modern Aquaculture for a Healthy Tomorrow

Cage culture is a modern method of fish farming in which fishes are reared inside large cages placed in natural water bodies like rivers, lakes, reservoirs or sea. The cages are made of net materials that allow free movement of water and exchange of nutrients, but prevent them from escaping. This technique has become very popular in recent years because it makes efficient use of water resources and produces high yields.

One of the main advantages of cage culture is that it does not require land for pond construction. Farmers can use existing water bodies, which reduces cost and saves space. The cages also allow easy feeding, monitoring and harvesting of fish. Moreover, cage culture is suitable for both small and large-scale fish farmers and helps to increase fish production in areas where demand is high.

Cage culture also provides employment opportunities to rural communities and improves the livelihood of people living near water bodies. Many species of fish, such as tilapia, catfish and carps, can be cultured successfully in cages. However, proper management is necessary to avoid problems like water pollution, disease outbreaks and overcrowding.

To conclude : cage culture is an effective and sustainable method of aquaculture. It not only increases fish production but also helps in meeting the growing demand for protein-rich food. With scientific management and government support, cage culture can play a major role in the development of fisheries and in improving food security

Raja Mukharjee
Rall No - 20038
Class - 12

Future of Agriculture in India

1. Introduction:

Agriculture is the backbone of Indiain's economy employing nearly 40% of the workface and contributing around 18% to GDP.

With rising population, climate change, and technology growth the future of Indian agriculture will be shaped by substainability modernization and innovation.

2. Key drivers of change.

(i) Technological Advancements

Use of AI, drones, sensors and robotics in farming.

Precision farming for better yeild and reduced wastage.

Expansion of digital platform (e-NAM, Kisan. apps)

(ii) Climate and Enviromental Challenges

Unpredictable, monsoon and rising temperature.

Need for climate - resilient crops and water managment techniques.

(iii) Goverment policies-

Schemes like PM-KISAN, PMEPY (crop Insurance) soil Health card.

Push towards organic farming and sustainable practices.

1. **NHM** - National Health Mission
2. **RKVY** - Rashtriya Krishi Vikas Yojana
3. **NFSM** - National Food Security Mission
4. **ICAR-** Indian council of Agriculture Research.

(iv) Changing Market Demands

Higher demand for organic, healthy and processed foods.

Growth of agriculture business and exports

3. Emerging Trends

Smart farming IOT-based sensons data driven farming

Hydrophonics & Vertical farming : Less Land, more productions.

Mechanization : Affordable from machinery and robotics.

Agri Startups : Innovative solutions in supply chains, storage and logistics.

Renewable Energy in farming : Solar powered irrigation and equipment.

4. Opportunities.

India can become a global leader in organic food exports.

Growth of agipreneurship and rural startups.

Employment generation in food processing industries

Potential for sustainable and eco-friendly agriculture.

5. Challenges.

Fragmented landholdings reduce effeciency

Dependence on monsoon and ground water.

Lack of awareness and training about modern technologies.

6. Future Outlook

By 2040 agriculture in India is expected to be technology, driven, sustainable and market Oriented.

Farmers will act as entrepreneur, not just cultivators.

Focus will shift from subsistance farming to agribusiness.

conclusion -

The future of Indian agriculture lies in a balance of innovation. Sustainability and inclusivity. If supported with the right policies technology and education. Indian farming can ensure both food security and prosperity for millions.

Vivek Kumar Singh

Roll no - 22029

Class - 10

Epistemology of Loss teaches us a Lot

The Epistemology of loss teaches us important lessons about knowledge, growth and emotional maturity through our experiences of loosing something or someone significant. Loss inevitably touches every thing which is responsible for reshaping our beliefs, perceptions and sense of self in profound way.

Understanding loss through knowledge-

Epistemology concerns, how we know and understand the world and when applied to loss, it examines how grief and absence impact our learning and growth. The process begins with the realization that what is lost, be it a person, object or opportunity, it remains within as memories. Emotional attachment and psychological imprints. These internal forms of knowledge persist, even when the eternal is gone.

How loss shapes our perspectives

Experiencing loss forces us to confront uncertainty and revise our understanding of life's certainties and doubts. It teaches that knowledge is never absolute, rather it evolves as new experiences arise. By seeking justification and evidence for our feelings and beliefs, we become more self aware and reflective.

Life lessons and Emotional Growth-

Loss reaches beyond sadness - it initiates a journey toward acceptance, resilience and personal development. It teaches us patience and empathy, compelling us to reflect on our values, relationships and choices. Through grief we learn to appreciate life's preciousness and the role of change and impermanence.

A Pathway to wisdom -

Ultimately, the epistemology of loss reminds us that learning from absence is as crucial as learning from presence. It encourages us to embrace our pain as a source of insight.

It helps us grow stronger and wiser with each experience. Loss transforms our understanding of ourselves and the world forging wisdom that can only come from living through it.

Nawarz Ashraf
Roll No. - 24005
Class - 8

Beauty Lies in the Eyes of the Beholder

Spiritual beauty Vs Physical beauty

Beauty is the quality that gives pleasure to the senses. This is categorised in two types.

i) Physical beauty and

ii) spiritual beauty.

Physical beauty is the beauty that gives pleasure by external sources which is limited and temporary. It is superficial beauty that mainly define Physical appearance i.e. youthful skin, fit body etc. This can attract someone for a little period of time.

Spiritual beauty is beauty that radiates within. This includes pure heart, peaceful mind and soul filled with love, humility and truth. This shows grace, patience and compassion which is necessary for healthy relations.

Hard work, struggles, wisdom and inner reflection refine a person's soul. It teaches us to uplift others.

Physical beauty should not be ignored completely. Physical beauty catch the eye but spiritual beauty captures the soul and Keeps it. Physical beauty is a form of water but spirituality, as it is said - All forms of water are made by same material which is water.

So we are equal. If you are beautiful physically then it is good for others but If you are beautiful spiritually then others are good for you.

Spiritual beauty remains the quiet force that truly enriches our lives.

Ayan Alam

Roll No. - 24005

Class - 8

The World of Entrepreneurship: Opportunities and Obstacles

Imagine being your own boss, creating something from scratch, and turning your ideas into reality. This is the world of entrepreneurship, where individuals take risks to build and run their own businesses. Entrepreneurship can be exciting and rewarding, but it also comes with its own set of challenges.

Advantages of Entrepreneurship

1. Freedom and Independence: As an entrepreneur, you have the freedom to make your own decisions and work on your own terms. You can create a business that reflects your values and passions.

2. Innovation and Creativity: Entrepreneurship allows you to think outside the box and come up with innovative solutions to real-world problems. You can turn your ideas into products or services that can make a difference in people's lives.

3. Unlimited Earning Potential: Your earnings are directly tied to your hard work and dedication. If your business succeeds, you can earn more than you would in a traditional job.

4. Personal Growth: Entrepreneurship helps you develop important skills like leadership, problem-solving, and time management. You'll learn to adapt to new situations and overcome obstacles.

Challenges of Entrepreneurship

1. Risk and Uncertainty: Starting a business can be risky, and there's no guarantee of success. You might face financial losses or even failure.

2. Hard Work and Long Hours: Entrepreneurship requires a lot of hard work and dedication. You'll need to put in long hours, especially in the early stages of your business.

3. Financial Management: Managing finances can be challenging, especially when you're just starting out. You'll need to make smart decisions about budgeting, investing, and managing cash flow.

4. *Competition and Market Fluctuations*: The business world is competitive, and market trends can change quickly. You'll need to stay ahead of the competition and adapt to changing market conditions.

Entrepreneurship is a journey that requires passion, hard work, and resilience. While it comes with its own set of challenges, the rewards can be immense. If you're willing to take the risk and put in the effort, entrepreneurship can be a fulfilling and exciting career path. So, if you have a great idea and the determination to succeed, why not give entrepreneurship a try?

Entrepreneurship offers freedom, innovation, and unlimited earning potential, but it also comes with risks, hard work, and financial management challenges. With the right mind set and skills, you can overcome obstacles and achieve success as an entrepreneur.

- Sujit Munda

Roll no. - 22035

Class - 10

Benefit of English Language as 'lingua franca'

A lingua franca is a language that is widely used as a common means of communication among people who speak different native languages, facilitating interaction and understanding across linguistic and cultural boundaries.English has emerged as a dominant **'lingua franca'** in the global arena, playing a crucial role in facilitating communication and interactions among people from diverse linguistic and cultural backgrounds across the world. Its widespread use and acceptance can be attributed to several factors that highlight its importance in various spheres of global engagement, including historical influences, economic dominance of English-speaking countries, and its adoption in international institutions and digital platforms. The language's versatility and reach have positioned it as a common medium for people who speak different native languages to communicate effectively.

English serves multiple purposes that underscore its significance as a lingua franca, making it an indispensable tool in global interactions. It enhances global communication by providing a shared language for people from different countries and cultures to connect and convey ideas. English streamlines international business and trade negotiations, facilitating economic collaborations and transactions across borders. The language fosters education and academic collaborations, with many top universities and research publications being in English, promoting global exchange of knowledge and ideas. English also promotes cultural exchange and mutual understanding among diverse populations, helping to bridge cultural gaps. In India, a country known for its rich linguistic diversity with numerous languages spoken across different regions, English is a vital link language enabling communication across different states and communities; it is a prominent medium of instruction in many educational institutions and is widely used in official and professional contexts. Proficiency in English opens up numerous professional opportunities globally, particularly in multinational corporations, international organizations, and industries that operate on a global scale. The language's strong presence in digital technology, the Internet, and software development provides individuals with access to a vast reservoir of global information, resources, and technological advancements. Additionally, English facilitates travel and tourism, enriching experiences of travelers worldwide by enabling effective communication in foreign countries, helping navigate airports, hotels, and tourist destinations with ease.

The role of English as a lingua franca is profound and multifaceted, contributing significantly to international connectivity, cooperation, and cross-cultural understanding in today's interconnected and globalized world. Its importance is likely to endure and expand further in the evolving global landscape, making proficiency in English a valuable asset for individuals and organizations aiming to engage effectively on a global scale. English continues to bridge linguistic and cultural gaps and foster interactions among people worldwide, underscoring its position as a key language in global communication, business, education, and cooperation, thereby playing a pivotal role in shaping global interactions and collaborations in the contemporary era.

- Rohit Kumar Oraon

Roll-no - 23097

Class - 9

The Mind Needs Books as a Sword Needs a Whetstone, If it is to Keep its Edge

The mind is one of the most powerful parts of a human being, and just like any skill or tool, it requires care and practice to remain sharp. The saying, "The mind needs books like a sword needs a whetstone, if it is to keep its edge," beautifully captures this idea. A sword, no matter how strong, loses its sharpness over time unless it is sharpened with a whetstone. Similarly, the human mind, no matter how intelligent, becomes dull if it is not trained, nourished, and challenged regularly with knowledge from books.

The Importance of Knowledge

Knowledge is food for the mind. Books provide this nourishment by presenting us with new ideas, facts, perspectives, and imaginations. A person who does not read is like a warrior holding a blunt sword-powerless in the face of challenges. In the same way, a reader is prepared to tackle life with clarity, wisdom, and creativity. Reading allows us to strengthen our ability to think critically, reason logically, and communicate effectively.

Books as Sharpening Tools

A whetstone is meant to make a sword effective and deadly in battle. Books do the same for our minds in the battles of life. They sharpen our intelligence, polish our language, and increase our depth of understanding. For example, reading history gives us lessons from the past, novels expose us to human emotions, and science books widen our vision of the world and the universe. With every page we turn, our mental sharpness grows. Without books, however, our minds risk becoming weak, narrow, and unable to cope with the complexities of the modern world.

Growth Through Exploration

Books also take the mind into territories it may never explore on its own. A sword without a whetstone remains ordinary, but once sharpened, it can master even the toughest obstacles. Similarly, books open doors to worlds unknown, give us the courage to question, and inspire us to create. Literature improves our empathy, science improves our curiosity, and philosophy improves our thinking. This exploration makes our minds versatile, just like a well-sharpened sword is versatile on the battlefield.

Application in Real Life

In real life, a sharp mind is necessary for success, decision-making, and solving problems. Students, for instance, need the training of books not only to pass exams but also to prepare for the challenges of the future. Leaders, scientists, writers, and innovators constantly read to stay sharp. Without the habit of reading, they would lose their creative edge and fall behind. Just as a soldier would never risk going to war with a blunt weapon, we should never step into life without sharpening our minds with knowledge.

The quote reminds us that intelligence is not fixed; it requires constant effort and learning. If we ignore books, our minds will become dull and ineffective. But if we keep reading, exploring, and learning, our thoughts will remain sharp, powerful, and full of life. Books are not merely papers filled with words; they are instruments that keep our minds alive and active. Just as a sword is nothing without a whetstone, the human mind is powerless without books.

Ankit Oraon
Roll-no - 22063
Class - 10

The Power of Manifestation: Shaping Your Reality

Manifestation is a fascinating concept that has gained popularity in discussions about personal growth and goal achievement. At its core, manifestation involves bringing your thoughts, desires, and intentions into tangible reality through focused effort and mind set.

Understanding Manifestation

Manifestation is about aligning your thoughts, emotions, and actions to attract and create the outcomes you desire. It combines elements of psychology, mindfulness, and intentional living. People use various techniques like visualization, affirmations, and gratitude practices to support their manifestation journey.

Key Aspects of Manifestation

1. Thoughts and Beliefs: Your mind set plays a crucial role in what you manifest. Positive, empowering beliefs can support your goals.
2. Emotional Connection: Emotions are powerful in manifestation; feeling the outcome as if it's already happening can be impactful.
3. Intentional Action : Taking steps toward your goals is an essential part of the manifestation process.
4. Mindfulness and Presence : Being present and aware can help in focusing your intentions.

Popular Manifestation Techniques

1. Visualization : Imagining yourself achieving your goals vividly.
2. Affirmations : Using positive statements to reinforce desired outcomes.
3. Gratitude Practice: Focusing on thankfulness can support a positive mind-set.
4. Vision Boards: Creating a visual representation of your aspirations.

Manifestation can be applied to various areas like academics, personal relationships, and career goals. By setting clear intentions and working towards them with a positive mind set, students can potentially enhance their experiences and outcomes. It is viewed differently by people; some find it a powerful tool for personal growth, while others approach it with skepticism. It involves psychological aspects and can be related to concepts like self-efficacy and goal-setting in motivational psychology.

The power of manifestation is a topic that invites exploration and personal reflection. By understanding and applying principles of manifestation, individuals may find ways. to more intentionally shape their paths and pursue their aspirations.

- Nancy Kumari

Roll - 22102

Class - 10

The Last Bench Hero

In the noisy corridors of starlight public School, where toppers were treated like royalty and backbenchers were ignored like shadows, sat a quiet boy named Pankaj. He was a typical last bencher- silent, unnoticed, and often mistaken for being lazy. Teachers complained he was disinterested. Students laugh when he couldn't answer questions. But what no one knew was that Pankaj had a gift- he could draw anything he saw, from memory in stunning detail. One day, the school announced a district level story writing and illustration competition. The winner would get a scholarship and will be featured in the 'National Youth Magazine'. Pankaj didn't care, why would he? No on expected anything from him.

But something changed when he overheard his younger sister crying at home. Their father had lost his job. Money was tight. Pankaj knew he had to try. That night under the dim light of a flickering bulb, Pankaj began writing. His story was about a small village boy who saved his town from a mysterious storm using only his courage and imagination. Every page he wrote, he brought to life with his sketches-raw, powerful and emotional. He submitted the story.

Weeks passed. Then came the morning assembly. The principal's voice echoed through the ground. "This Year's winner is someone none of us expected". He had reminded us not to judge judge a book by its cover.

Pankaj's name was called. For a moment silence, thunderous applause welcomed him.

That day, the last bench didn't feel like end of the class.It felt like a stage.

Moral of the story: Never underestimate quiet talent. Even the most unnoticed students can have the brightest sparks within them.

Bhashkar

Roll No. - 22009

Class - 10

The World of Online Shopping: A Mixed Bag

Imagine being able to shop for your favorite products from the comfort of your home, 24 hours a day. No need to rush to the market, no long queues, and no hassle of finding parking. This is the world of Online shopping, and it's changing the way we buy things.

Online shopping is super convenient. You can browse through thousands of products, compare prices, and read reviews from other customers. You can even shop from global brands and have products delivered right to your doorstep. This is especially helpful for people who live in remote areas or have busy schedules.

However, Online shopping also has its downsides. One of the biggest concerns is security. There's always a risk of hackers getting hold of your personal and financial information. Another issue is the quality of products. You can't touch or try on products before buying them, which can be frustrating. Returns and refunds can also be a hassle.

To make the most of Online shopping, we need to be careful. We should only shop on secure websites, which can be identified by looking for "http" in the URL. It's also a good idea to read reviews from other customers before making a purchase, as this can give us an idea of the product's quality and the seller's reliability. Additionally, checking the return and refund policies before buying can save us from potential hassle later on. Keeping our personal and financial information safe is also crucial.

As technology continues to improve, Online shopping is likely to become even more popular. We can expect to see more innovative features like virtual try-on options. and augmented reality experiences that allow us to interact with products in a more immersive way. Faster delivery times are also on the horizon. Who knows, maybe one day we'll even be able to shop Online using virtual reality headsets, making the experience even more engaging and interactive.

Online shopping is a double-edged sword. It offers convenience and accessibility, but also raises concerns about security and quality. By being aware of these issues and taking necessary precautions, we can enjoy the benefits of Online shopping while minimizing the risks. So, the next time you're thinking of buying something Online, make sure to do your research and shop smart.

- Nihal Kumar
Roll no - 24038
Class - 8

The Benefits of Practicing Gratitude and Mindfulness

Practicing gratitude and mindfulness can make our lives happier and more peaceful. Gratitude means being thankful for the things we have, and mindfulness means paying attention to the present moment. Both of these are simple habits that can improve our daily life.

Gratitude is saying "thank you" not only with our words but also with our hearts. When we feel grateful, we notice the good things in our life, like our family, friends, teachers, food, and even small joys like a sunny day or a smile. Gratitude helps us appreciate what we already have instead of always wanting more. By incorporating gratitude into our daily routine, we can experience its numerous benefits. It makes

us feel happy and positive, improves our relationships with others because people like being around thankful persons, and makes us respect what we have, like books, toys, or meals, instead of taking them for granted.

Mindfulness means focusing on the present moment. For example, while eating, we enjoy the taste of food without thinking about homework or what will happen tomorrow. It teaches us to slow down and notice little things like the sound of birds or the feeling of fresh air. The benefits of mindfulness are numerous. It

makes our mind calm, improves concentration in studies because we learn to pay attention better, and helps us control our emotions and not get angry or upset too quickly.

In conclusion, practicing gratitude and mindfulness every day can make us healthier, happier, and kinder. They are like small keys that unlock peace in our mind and heart. Even as students, if we practice saying "thank you" and focusing on the present, our life will become more peaceful and joyful. By incorporating these simple habits into our daily routine, we can experience a significant positive impact on our overall well-being.

Aayush Kumar

Roll no - 25095

Class - 7

Gratitude to Farmers: The Unsung Heroes of Our Plates

In the tapestry of our daily lives, the threads of agriculture and the dedication of farmers are intricately woven, often unseen yet vitally important. Every meal we enjoy, every grain we consume, is a testament to the tireless efforts of those who cultivate the land, nurturing crops from seed to harvest. These unsung heroes work hard in fields under the sun's warmth and the monsoon's bounty, their labour a cornerstone of our sustenance and well-being.

The Journey of Food: From Soil to Supper

The path food takes from farm to table is a journey of diligence and care.

From Farm to Table: Food travels a long and sometimes complex journey from being cultivated in diverse fields across India to reaching our dining tables, involving numerous hands and processes.

Hard Work and Labour: Farmers work tirelessly in challenging and varied conditions - be it the fertile plains of Punjab, the terraced fields of the Northeast, or the dry lands of Rajasthan - to grow a myriad of crops crucial for our nutrition.

Variety and Abundance: Thanks to the endeavours of farmers, India boasts a rich variety of foods reflecting its cultural and geographical diversity, from staple grains like rice and wheat to a plethora of fruits and vegetables.

Why We Owe Gratitude to Farmers

The contributions of farmers are multifaceted and profound.

Ensuring Food Security: Farmers are pivotal in ensuring we have access to food, addressing a fundamental human need.

Economic Contributions: Agriculture is a significant sector of India's economy, providing livelihoods to a large portion of the population and contributing to the country's GDP.

Rich Cultural Heritage: Agriculture is deeply intertwined with India's traditions, festivals, and cultural identity, reflecting a legacy that spans millennium.

Expressing Appreciation: Ways to honour Farmers

Showing gratitude can take many meaningful forms.

Respect and Acknowledgment: Recognizing the hardships and contributions of farmers is a basic yet important gesture.

Supporting Local Farmers and Produce: Encouraging and purchasing local produce can support farmers economically and promote sustainable practices.

Awareness and Education: Spreading awareness about the importance of agriculture and the challenges faced by farmers can foster a more supportive and informed community.

Farmers: Pillars of Society and Stewards of the Land

Farmers are indispensable to our society, acting as custodians of the land and providers of our basic needs. Their dedication, resilience, and connection to the earth deserve not only our gratitude but also our support and respect. As we partake in meals

and enjoy the bounty of the land, let us pause to appreciate the blessings of food and honour the silent, steadfast contributions of the farmers who make it all possible.

- Vaishnavi Priya

Roll no - 24103

Class - 8

Generation Gap in Thoughts

Generation gap means the difference in thinking, values, and ideas between the older and younger generations. It is not about age only, but about how people from different generations see the world in different ways. This gap is mainly between parents and children, teachers and students, or simply between elders and youngsters. Why Generation Gap Happens? The main reason for the generation gap is the change of time. Every generation grows up in a different world. Our grandparents lived in a time without Internet, mobiles, and social media. They had simple lifestyles and strong traditions. But today's generation is growing up with fast technology, modern education, and new ways of living. Because of these changes, our thoughts, dreams, and habits are not always the same as the older ones. Another reason is different priorities. For the older generation, discipline, hard work, and following customs are very important. For the younger generation, freedom, creativity, and quick results matter more. So, both sides sometimes struggle to understand each other.

Examples of Thought Differences

Education : Parents and elders often believe education is only for getting a stable job. But students today also want to learn skills, explore creativity, and follow passions.

Technology: Young people love mobile phones, Internet, and social media. Elders sometimes think it is a waste of time and prefer face-to-face talks.

Lifestyle: Elders like simplicity, traditional clothes, and saving money. Youngsters prefer fashion, modern trends, and spending for comfort and fun.

Obedience: In past generations, children always listened to elders without question. Today, youngsters like to ask questions and give their own opinions.

Positive Side of Generation Gap

The generation gap is not always bad. It helps society to grow and move forward. New ideas from young people bring change in science, education, and culture. At the same time, values and experiences from elders help guide us so we do not make big mistakes. If both sides respect each other, the gap becomes less harmful.

Negative Side

Sometimes, the gap in thoughts causes misunderstandings. Parents may feel children are too stubborn or careless. Children may feel that parents are too strict or old-fashioned. This can lead to arguments, lack of trust, and even loneliness in families.

How to Bridge the Gap

Elders should try to understand the world of today and be more open-minded. Youngsters should respect the wisdom and experiences of their elders.

Talking openly and listening with patience can reduce misunderstandings.

A balance between old values and new ideas can bring harmony.

The generation gap in thoughts is natural because time never stops changing. We cannot completely remove this gap, but we can reduce its negative effects. If both young and old learn to respect and understand each other's views, the gap will become a bridge that connects, not divides. A society where every generation values both tradition and modernity will always stay strong.

Ankit Kumar
Roll no - 22022
Class - 10

Under the aegis of “Right to Expression” use of abusive Language publicly is becoming a new normal for the digital generation. How does it impact our youth’s mind?

The Impact of Abusive Language on Youth’s Minds: A Growing Concern

In today’s digital age, the use of abusive language has become alarmingly prevalent, especially among the younger generation. The “Right to Expression” has been misinterpreted as a license to unleash hurtful words without consequences. However, this trend has severe implications for the mental health and well-being of our youth.

The Effects of Verbal Abuse

Research suggests that exposure to verbal abuse can significantly alter a child’s brain development, leading to increased anxiety, depression, and stress. When children are subjected to frequent abuse, their threat system becomes hyperactive, making them more prone to misinterpreting neutral social cues as threatening. This can result in long-term emotional and psychological scars, affecting their relationships, self-esteem, and overall quality of life.

Impact on Brain Development

Studies have shown that childhood verbal abuse can shape a young person’s development, influencing their mental health and behavior. The brain’s reward and system can be blunted, making it less responsive to positive experiences. This can lead to difficulties in forming trusting relationships, emotional regulation, and self-worth.

Consequences of Normalizing Abusive Language

When abusive language becomes normalized, it can have far-reaching consequences:

Desensitization : Repeated exposure to abusive language can desensitize children, making them more likely to use such language themselves.

Increased Aggression: Verbal abuse can contribute to increased aggression, anxiety, and depression in children.

Negative Impact on Values and Morality: Exposure to abusive language can undermine the development of positive values and moral principles.

The Normalization of Abuse

When abusive language is used again and again in public spaces and Online platforms, it slowly becomes normal for many. What once felt shocking now feels usual. Youth begin to copy this style of speaking, thinking it makes them bold, modern, or even funny. However, this normalization is dangerous because it kills the value of polite and respectful communication.

Impact on Mental Health

Words have power. When young people are constantly exposed to negativity, insults, and abusive words, it affects their thinking. It can make them aggressive, less patient, and even insensitive toward others’ feelings. Many studies show that harsh and offensive language can increase stress, anger, and even depression in both the speaker and the listener.

Decline in Moral Values

Traditionally, society has taught us the importance of respect and courtesy. But when abusive language becomes acceptable in daily speech, these values slowly weaken. Youth may find it unnecessary to control their emotions or to think before they speak. This not only harms personal relationships but also creates a disrespectful environment in schools, colleges, and workplaces.

Influence on Character and Behavior

Teenagers and young adults are in the process of building their identity and character. What they hear and practice daily shapes who they become. If abusive language becomes part of this routine, it may create a generation less concerned about kindness and more focused on raw expression without responsibility This can eventually lead to bullying, conflicts, and a lack of emotional maturity.

Breaking the Cycle

To mitigate the effects of abusive language, it's essential to create environments where children are spoken to with respect, encouragement, and care. Parents, caregivers, and educators must recognize the power of their words and strive to build supportive and nurturing environments for children.

Strategies for Positive Change

Model Respectful Communication: Adults should model respectful communication, demonstrating the importance of kindness and empathy.

Set Boundaries: Establishing clear boundaries and consequences for abusive language can help children understand its impact.

Foster Emotional Intelligence: Teaching children emotional intelligence and empathy can help them navigate complex social situations.

Provide Support: Offering support and resources to children who have experienced verbal abuse can help them heal and develop resilience.

Freedom of expression is a gift, but it must be used responsibly. Expression should never mean disrespect. If we misuse this right by normalizing abusive language, we are harming not just ourselves but also society's future. It's time for the youth to realize that true strength lies not in offensive words but in respectful and meaningful communication. By acknowledging the harm caused by abusive language and working together to create a more supportive environment, we can help our youth develop into confident, empathetic, and well-adjusted individuals.

Bikash Lohra
Roll no - 21002
Class - 11

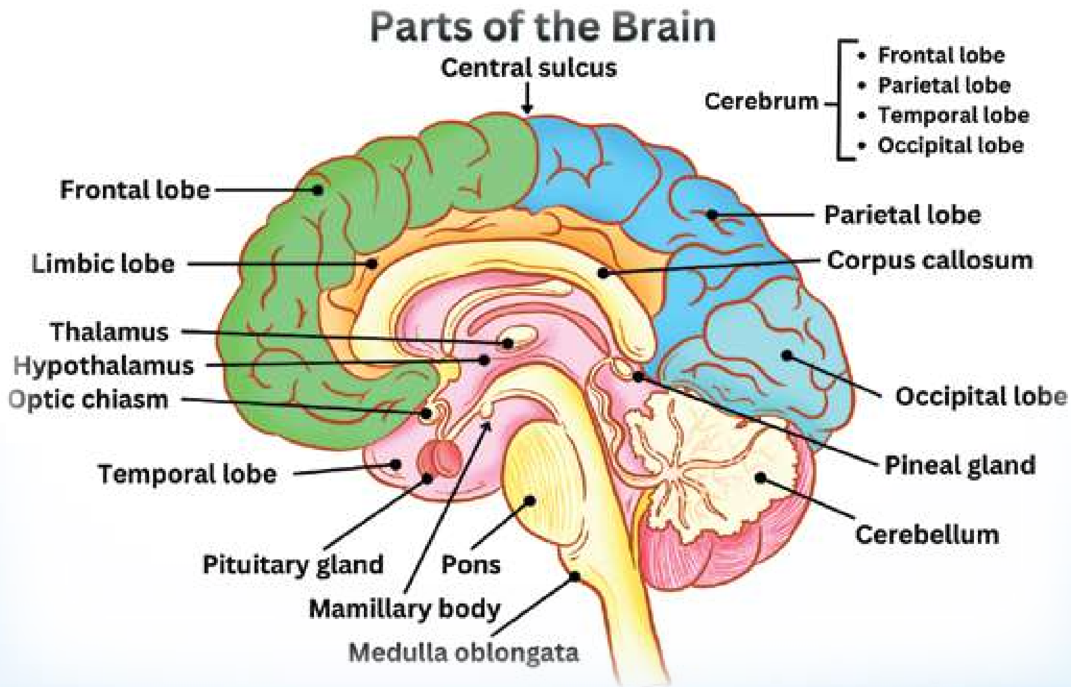

A Magical True Friendship

Once upon a time there was a cute wolf whose name was Fluffy Fur. She lived in a magical forest in which other animals like bear, deer, lion and other magical animals lived. Each and every animal has their own magical power like : -

Wolf can heal wounds of others, bears can throw fire laser beam through it's eyes, deer can grow magical plants and flowers and lion has extreme power. It can lift heavy rocks and other heavy things. All the animals have their own magical powers. They lived together with unity.

But one day a wicked witch came into the forest. She saw the cute wolf Fluffy Fur that can heal anybody's wound through it's magical power. She needed her for preparing a magical potion. So, she abducted her and the best friends of Fluffy Fur (the bear, the deer and the lion) decided to save her. The wicked witch took the wolf to her magical house and the three friends chased the wicked witch. She was flying on her magical broom and all the three friends were after her. The bear tried to destroy the magical broom of the wicked witch by beaming fire laser beam through it's eyes but the wicked witch suddenly disappear by her magical power and she took the magical wolf into her magical house. She started to gather the ingredients that she needed to put in her magical potion. She wants to make this magical potion because by this magical potion she can become immortal. She wants the magical heart of that magical wolf in her magical potion, so she went out to bring some magical herbs for her potion. The friends of wolf know that the wicked witch lives in the forest named "The Black Woods" which is full of danger and bad wizards and witches. But the three friends of wolf want to save their friend's life at any cost. They went into the forest. When they entered the forest it looked like a creepy beast. The branches of trees were looking like the claws of the beast, and the hole in some trees resembled like the creepy eyes of the beast. When they continue their journey towards the wicked witch house they found some huge plants that were carnivores. Their mouth were so big that they can engulf two buffaloes in one go. But the bear throws fire laser beam through its eyes and destroyed all the plants.

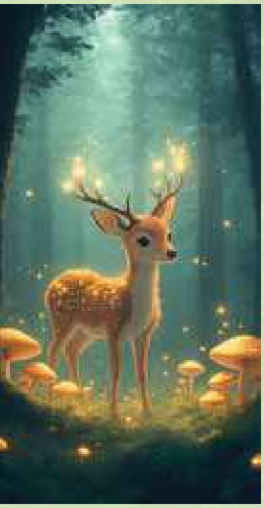

Then they move forward and entered a flower garden which was destroyed by a bad wizard. All the flowers were plucked and petals were also broken and plants were uprooted. Fortunately the deer can give life to destroyed plants and flowers. The deer by using its power turns that deserted garden into garden filled with blooming colourful flowers and plants. These flowers gave them a magical potion which they can use to fight that wicked witch who abducted their wolf friend. Then they continued their journey and on their way they found a small rabbit who was chained and was trying to lift a huge rock. When they asked the rabbit that why he was doing this then he told them that it is a curse of a bad wizard and until he does not put the seven huge rocks outside his cave, he has to be his servant. So after listening to this the lion helps him because he was extremely strong and put all the seven rocks outside the bad wizard's cave. Thus the curse of rabbit ended. Rabbit gave them a magical key and told them that this will help them in their mission. After taking that key they continued their journey and reached the wicked witch's house. When they reached there, the wicked witch also returned home after gathering magical herbs. The witch saw them and she tried to scare them by her magical power. She grows a huge magical tree. The tree tricks to capture them with its branches but the magical potion that the flowers gave them. Destroyed the tree. They also sprinkled that magical potion on that wicked witch and the witch turned Into smoke and flew away. After their fight and struggle they entered in her house and they find that wolf is locked in a magical cage and the cage was locked by a magical lock. They used the magical key given by the rabbit to open that lock. They set their wolf friend free and went back home flying on the magical broom of that wicked witch and lived happily ever after.

Moral of the story :-

Always help your friend who is in trouble and never trouble other.

- Shreeja Singh

Roll No. - 24102

Class - 8

परिक्रमा–2025

नेतरहाट आवासीय विद्यालय अपने शैक्षिक क्रिया–कलापों के साथ–साथ अपने छात्रों का सर्वांगीण विकास करने के लिए वर्ष पर्यंत बहुविध गतिविधियाँ आयोजित करता है। यहाँ बारह महीने गतिविधियों के अलग–अलग रंग बिखरते रहते हैं। रंग मंच की रूपसज्जा से लेकर क्रीड़ांगण के उल्लास तक, प्रयोगशाला की व्यस्तता से लेकर प्रकृति सुंदरी के विलास तक आगत अतिथियों के आशीर्वाद से लेकर योग–व्यायाम की श्रम साधना तक हाटियन शिक्षण–प्रणाली की बहुविध छटा के दर्शन होते हैं। इस कड़ी में आपको उस ओर ले चलूँ, जहाँ गतिशील सौंदर्य की कल्पना में उनकी शैक्षिक गतिविधियाँ छिपी हैं।

विद्यालय के सर्वांगीण विकास एवं इसके सभी अंगों के समुचित पालन पोषण का दायित्व विद्यालय के कुल प्रमुख के रूप में इसके प्राचार्य का ही होता है। विद्यालय का सौभाग्य है कि इसके प्रथम प्राचार्य स्व. चार्ल्स जेम्स नेपियर एवं द्वितीय प्राचार्य स्व. जीवन नाथ दर से ही कुशल एवं दूरदर्शी नेतृत्व की परंपरा का विकास हुआ। इस कड़ी में इस वर्ष भी श्री संतोष पाठक विद्यालय के प्राचार्य का गुरुतर दायित्व निभा रहे हैं। आपके मार्गदर्शन में विद्यालय अपनी परंपराओं को आत्मसात् करते हुए, उच्चतम शिखरों की ओर गतिशील रहेगा।

शैक्षिक उपलब्धि

नेतरहाट आवासीय विद्यालय अपने स्थापना काल से ही बोर्ड परीक्षा में अपने उत्कृष्ट परिणाम के लिए जाना जाता है और अब भी यह परंपरा जारी है। ज्ञातव्य हो कि विद्यालय CBSE से जुड़ चुका है। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस बार भी नेतरहाट आवासीय विद्यालय के छात्रों का बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा। इस वर्ष बोर्ड परीक्षा का परिणाम कुछ इस प्रकार रहा –

कक्षा – दस

स्थान	नाम	प्राप्तांक प्रतिशत
प्रथम	शशांक राज	96.6
द्वितीय	द्विव्य प्रकाश गुप्ता	96.4
तृतीय	अभिषेक कुमार	96.2
चतुर्थ	अभिषेक कुमार यादव	95.8
पंचम	द्विव्यांशु कुमार	95.6
पष्ठ	मिथिलेश कुमार	95.4
अष्टम	आयुष्मान राज	95
नवम	गौरव घोष	94.2
दशम	अमरदीप शर्मा	94
दशम	अमन कुमार	94

कक्षा – बारह (विज्ञान)

स्थान	नाम	प्राप्तांक प्रतिशत
प्रथम	राहुल कुमार	85
द्वितीय	दिगम्बर कुमार	83.6
तृतीय	के राज गौरव	74.4

कक्षा – बारह (कला)

स्थान	नाम	प्राप्तांक प्रतिशत
प्रथम	रजनीकांत कुमार	92.2
द्वितीय	अंकित कुमार	87.2
तृतीय	धनंजय सिंह सरदार	79.8

सरस्वती एवं महावीर पदक

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अकादमिक रूप से श्रेष्ठ आश्रमों को सम्मानित किया गया। इस कड़ी में प्रदीप आश्रम (विजेता) को सरस्वती पदक एवं अर्जुन आश्रम (उपविजेता) को महावीर पदक से सम्मानित किया गया।

विभागवार गतिविधियाँ

गणित विभाग

डे साहब स्मृति व्याख्यान – इस वर्ष 3 फरवरी 2025 को हमारे विद्यालय में भूतपूर्व शिक्षक स्वर्गीय मनोज कुमार डे की स्मृति में एक संक्षिप्त समारोह का सफल आयोजन किया गया।

इस वर्ष 2 अप्रैल को महान गणितज्ञ एवं हमारे विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र स्व. वशिष्ठ नारायण सिंह जी की जयंती पर कई कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, जिनमें logarithm पर अध्ययन गोष्ठी प्रमुख थी।

इस वर्ष 5 फरवरी को डॉ. अभिषेक मिश्रा (गणित विभागाध्यक्ष) के विशेष आमंत्रण पर Prof. Roel Vertegaal, (Founder of Human Media Lab Radbond University, Netherland Queens University Canada.) के द्वारा एक विचार गोष्ठी का आयोजन विद्यालय के छात्रों के लिए किया गया।

Topics of Lecture :

1. Second Law of Thermodynamics from the perspective of making Netarhat a plastic free habitat using Bamboo, forest produce, and nature-based solution; in general.
2. The advancement in AI and Human-computer interaction (HCI). Demonstrated Third Eyes- the Smart Glass for future.

विज्ञान विभाग

राष्ट्रीय विज्ञान विभाग के अवसर पर विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित विभिन्न क्रियाकलाप/कार्यक्रम : निम्नलिखित विषयों पर सेमिनार की प्रस्तुति की गयी–

1. Secrets of Time Travel by Arpit Kumar & Yash Bhagat
2. SPADEX Mission : Advancing India's Space Capabilities by Ayush Raj
3. Generation Z by Ankit Kumar & Bhaskar
4. The Life Cycle of a Star by Abhijeet & Aditya Aryan
5. Horticulture by Nancy Kumari
6. Surface Tension by Amandeep Toppo & Prateek Ranjan
7. Happy Hormones by Kanchan & Kritika

- "Mobile Under 18 : Right or Wrong?" विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रतीक कुमार प्रथम, शिवम् कुमार मंडल द्वितीय तथा अनिकेत कुमार तृतीय स्थान पर रहे।
- "अंतर– आश्रमवर्गीय क्विज़" का आयोजन हुआ जिसमें षष्ठ आश्रमवर्ग प्रथम, तृतीय आश्रमवर्ग द्वितीय तथा चतुर्थ आश्रमवर्ग तृतीय स्थान पर रहे।
- प्रत्येक वर्ष की भांति विद्यालय के अवसर पर विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

हिन्दी विभाग

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता : कुछ लम्हें ऐसे होते हैं, जो विद्यालय इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो जाते हैं। नेतरहाट आवासीय विद्यालय की अंत्याक्षरी प्रतियोगिता की विशिष्ट परंपरा भी उन लम्हों में से एक है। अंत्याक्षरी के ऐसे दुर्लभ दृश्य शायद ही कहीं और देखने को मिले। इस प्रतियोगिता में छात्र हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण कवियों की प्रमुख कविताओं का पाठ करते हैं। यह एक ऐसी प्रतियोगिता है जो हमारे मन में संगीत को जागृत कर देती है। हर वर्ष की भाँति इस

वर्ष भी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र कुमार मंडल तथा हिन्दी विभाग के अन्य शिक्षकों के कुशल निर्देशन में हुआ। अपनी संपूर्ण उत्कृष्टता का प्रदर्शन करते हुए चतुर्थ वर्ष के छात्रों ने इस प्रतियोगिता में विजय हासिल की। अन्य वर्ष के छात्रों की प्रस्तुति भी प्रशंसनीय थी। सभी प्रतिभागी और विजयी छात्रों को हिन्दी विभाग के द्वारा प्रमाण–पत्र से सम्मानित किया गया।

राजभाषा हिन्दी दिवस – 2025

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी राजभाषा हिन्दी दिवस का भव्य आयोजन हुआ। हिन्दी विभाग के निर्देशन में एक विचार गोष्ठी का आयोजन कराया गया। इस क्रम में कई छात्रों एवं शिक्षकों ने अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किए एवं छात्रों ने स्तरीय कविताओं का पाठ किया। फिर संगीत मण्डली ने अपने मधूर एवं कर्णप्रिय गीतों का रंगारंग स्वरूप प्रदान किया। इस वर्ष भी हिन्दी दिवस के अवसर पर छात्रों के लिए कक्षावार कई साहित्यिक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वालों की सूची निम्नवत् है : –

कक्षा सात – कविता लेखन प्रतियोगिता

स्थान	नाम	क्रमांक	आश्रम
प्रथम	पंकज कुमार महतो	25058	कपिल
द्वितीय	कमरान असलम कृष कुमार	25013 25031	विक्रम अशोक
तृतीय	संजय कुमार महतो भूपेश कुमार महतो	25025 25053	प्रेम आनंद

कक्षा आठ – कविता लेखन प्रतियोगिता

स्थान	नाम	क्रमांक	आश्रम
प्रथम	हरि सरदार बिरूवा संत कुमार शर्मा	24098 24002	विक्रम प्रदीप
द्वितीय	रंजन राज सत्यम कुमार	24023 24041	साकेत प्रदीप
तृतीय	सौम्या समृद्धि साक्षी पाण्डेय	24110 24112	आनंद विक्रम

कक्षा नौ – लघु कथा लेखन प्रतियोगिता

स्थान	नाम	क्रमांक	आश्रम
प्रथम	अनुराग कुमार	23076	रमण
द्वितीय	मोहित कुमार	23005	गौतम
तृतीय	प्रवीण किशोर	23027	भाभा

कक्षा दस – निबंध लेखन प्रतियोगिता

स्थान	नाम	क्रमांक	आश्रम
प्रथम	अंकित कुमार	22022	प्रेम
द्वितीय	अनिकेत कुमार आयुष राज	22028 22015	अशोक अशोक
तृतीय	सचित कुमार	22013	शांति

निराला जयंती : हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' को समर्पित निराला जयंती का आयोजन हिंदी विभाग के कुशल निर्देशन में हुआ। इस विशेष अवसर पर छात्रों के द्वारा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया तथा उनकी चर्चित कविताओं का सस्वर पाठ भी किया गया। इस अवसर पर संगीत विभाग के सहयोग से कई मधुर गीत भी प्रस्तुत किए गए।

कृष्णा सोबती जयंती : हिन्दी की प्रख्यात लेखिका कृष्णा सोबती के जन्मशती वर्ष के उपलक्ष्य पर हिन्दी विभाग द्वारा एक विचार संगोष्ठी का आयोजन 17/02/2025 को किया गया। संगोष्ठी का विषय था – कृष्णा सोबती का कथा साहित्य। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो० डॉ. श्री प्रकाश शुक्ल

विभागाध्यक्ष हिंदी, काशी हिन्दी विश्वविद्यालय थे। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष हिंदी नेतरहाट आवासीय विद्यालय, डॉ. नरेन्द्र कुमार मंडल द्वारा किया गया।

Department of English

English being 'Lingua Franca' is an important language to learn. Proficiency in English significantly enhances one's educational opportunities, professional mobility and ability to connect across diverse linguistic and national borders. Apart from syllabus to teach spoken, written, reading and listening proficiency of students the Department of English organises various contest annually. This year various competitions are as follows.

Extempore Speech Competition

Junior Group

Position	Name	Roll Number
1st Position	Gautam Kumar	23110
2nd Position	Divyom Chauhan	24011
3rd Position	Ayan Alam	24005

Senior Group

Position	Name	Roll Number
1st Position	Prateek Kumar	22006
2nd Position	Shivam Kumar Mandal	22007
3rd Position	Nancy Kumari	22102

English Handwriting Competition

Girls

Position	Name	Roll Number
1st Position	Sakshi Pandey	24112
2nd Position	Kritika Kumari	22105
3rd Position	Vaishnavi Priya	24103

Junior Boys

Position	Name	Roll Number
1st Position	Sant Kumar Sharma	24002
2nd Position	Ritik Rajak	23065
3rd Position	Nitish Rajak	24067

Senior Boys

Position	Name	Roll Number
1st Position	Yash Bhagat	22038
2nd Position	Chandan Kumar	21047
3rd Position	Aryan Gupta	20102

English Spell Bee Competition

Junior Group

Position	Name	Roll Number
1st Position	Saumya Samriddhi	24110
2nd Position	Aryan Kumar	24083
3rd Position	Kartik Oraon	24090

Senior Group

Position	Name	Roll Number
1st Position	Harsh Ray	22003
2nd Position	Arun Kumar Gupta	20009
3rd Position	Abhijeet Anand	20014

English Poem Writing Competition

Position	Name	Roll Number
1st Position	Manjit Kumar	20076
2nd Position	Sneha Kriti	23105
3rd Position	Debojit Karmakar	23104

English Story Writing Competition

Position	Name	Roll Number
1st Position	Shreeja Singh	24102
2nd Position	Bhashkar	22009
3rd Position	Saumya Samriddhi	24110

English Book Review Writing Competition

Position	Name	Roll Number
1st Position	Uttam Kumar	22051
2nd Position	Shreeja Singh	24102
3rd Position	Shrikant Bhagat	23082

English Essay/Article Writing Competition

Position	Name	Roll Number
1st Position	Nawaz Ashraf Shakir	24004
2nd Position	Ankit Kumar	22022
3rd Position	Ayan Alam	24005

भूगोल विभाग

प्रभात फेरी, पर्यावरण दिवस – प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 5 जून, विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर श्री विनोद टोप्पो, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग के निर्देशन में प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। कक्षा 7 के छात्रों ने इस प्रभात फेरी में भाग लिया एवं नारे लगाकर नेतरहाट पठार के ग्रामीण लोगों को प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया।

INCA National Map Quiz 2025 :

INCA के तत्वावधान में दिनांक 14 सितंबर 2025 को National Map Quiz प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। विद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हुए भूगोल विभाग की ओर से श्री विनोद टोप्पो के निर्देशन में 9 सदस्यीय टीम ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। इस प्रतियोगिता में छात्रों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए All India स्तर पर पांचवा स्थान (Consolation Prize) एवं राँची, प्रदेशिक स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों की सूची इस प्रकार है –

चि. यश भगत (क्रमांक – 22038)
चि. गौतम कुमार (क्रमांक – 23110)

चि. अमनदीप टोप्पो (क्रमांक – 23109)

साइंस सिटी भ्रमण :

INCA के तत्वधान में आयोजित प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित सभी छात्रों को साइंस सिटी, राँची का भ्रमण कराया गया। इस क्रम में छात्रों ने विज्ञान एवं भूगोल के विभिन्न सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त किया। साथ ही छात्रों को वराहमिहिर तारामंडल शो भी दिखाया गया।

बिरसा जैविक उद्यान भ्रमण:

INCA के तत्वधान में आयोजित प्रतियोगिा परीक्षा में सम्मिलित सभी छात्रों को बिरसा जैविक उद्यान, ओरमांझी, राँची का भ्रमण कराया गया। इस क्रम में छात्रों ने वन्यजीवों से प्रत्यक्ष रूप से अन्तरक्रिया कर ज्ञान प्राप्त किया।

राजनीति विज्ञान विभाग

(1) राजनीति विज्ञान द्वारा 26 नवंबर 2024 को विद्यालय प्रेक्षागृह में संविधान के 75वें वर्ष होने पर संविधान दिवस मनाया गया।

(2) राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा 25 जनवरी 2025 को भारतीय चुनाव व्यवस्था, चुनाव आयोग के कार्य तथा मतदाता के अधिकार और कर्त्तव्य को बतलाने हेतु राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया गया।

(3) राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा 10 मार्च 2025 को राजव्यवस्था से जुड़े सवालों पर अंतर आश्रम वर्गीय क्वीज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

(4) राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा 24 अप्रैल 2025 को स्थानीय स्वशासन और ग्राम–स्वराज के महत्व पर प्रकाश डालते हुए पंचायती राज दिवस मनाया गया एवं इस उपलक्ष्य पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का भी सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

अर्थशास्त्र विभाग

इस वर्ष 10 मार्च 2025 को अर्थशास्त्र विभाग के शिक्षक श्री पवन कुजूर के निर्देशन में इंटर द्वितीय, कला के छात्र चिरंजीवी सत्यम कुमार के द्वारा 'बजट' विषय पर ज्ञानवर्द्धक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा में बजट, उसकी महत्ता, देश की अर्थव्यवस्था में उसका प्रभाव आदि विषयों पर गंभीर एवं छात्रोपयोगी चर्चाएँ की गई।

कला विभाग

इस वर्ष वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य एवं कला विभाग के सहयोग से दो दिवसीय हस्तशिल्प प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें छात्रों को चार प्रकार की कला का प्रशिक्षण एवं दिया गया एवं इसकी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें छात्रों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

ये चार विधाएँ निम्नलिखित थीं –

(i) सोहराई चित्रकला

(ii) लाख की चूड़ियाँ बनाना

(iii) बाँस/लकड़ी से सजावटी वस्तुएँ बनाना

(iv) कपड़ों के टुकड़े से सजावटी कपड़ें एवं डिजाइन बनाना।

विद्यालय स्तर से कला विभाग द्वारा सोहराई चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें चि० रितेश मुण्डा (क्रमांक – 23079, आश्रम – अर्जुन) ने प्रथम या विजेता स्थान प्राप्त किया वहीं चि० अयान आलम (क्रमांक – 24005, आश्रम – अर्जुन) ने द्वितीय या उपविजेता स्थान प्राप्त किया।

Eco-Club

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी पर्यावरण दिवस –5 जून के अवसर पर निम्न कार्यक्रम आयोजित किए गए –

1. विद्यालय प्रांगण में फूलदार पौधों का रोपण किया गया।
2. सम्मेलन के उपरांत पर्यावरण पर निबंध प्रस्तुत किया गया।

खेल विभाग

FIT India Trithlon, Netrahat 2025

FIT India Trithlon, Netarhat 2025, कार्यक्रम अंतर्गत साइन की ओर से नेतरहाट विद्यालय में दिनांक 24.02.2025 से 25.02.2025 तक विभिन्न खेलों एवं खेल क्विज का आयोजित किया गया। जिसके अंतर्गत फिट्टों, कबड्डी, खोखो एवं फुटबॉल जैसे पारंपरिक खेलों का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता का अंतिम परिणाम इस प्रकार है–

प्रथम स्थान – प्रथम आश्रम वर्ग

दूसरा स्थान – सप्तम आश्रम वर्ग

तृतीय स्थान – तृतीय आश्रम वर्ग

65वीं अंतर आश्रमवर्गीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2025

अत्यंत हर्ष एवं उल्लास का विषय है कि पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी नेतरहाट आवासीय विद्यालय के ऐतिहासिक ओवल में दिनांक 03.05.2025 से 07.05.2025 तक 65वीं अंतर आश्रमवर्गीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता का सफल आयोजन श्री विनोद टोप्पो, विद्यालय खेल प्रभारी के निर्देशन में किया गया। सभी छात्रों का उत्साह प्रत्येक वर्ष की भाँति देखने लायक था। इस वर्ष विद्यालय खेल विभाग द्वारा 36 छात्रों को प्रखण्ड स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए महुआडांड़, लातेहार भेजा गया जिसमें 17 छात्रों ने विभिन्न मेडल प्राप्त किये। उक्त 17 छात्रों में से 11 छात्रों का चयन के 2nd Jharkhand State Sub-Junior Athletics Championship 2025 लिए किया गया जिसमें 6 छात्रों ने भाग लिया।

विद्यालय में आयोजित एथलेटिक्स प्रतियोगिता का अंतिम परिणाम इस प्रकार है –

'क' वर्ग का विजेता – तृतीय आश्रम वर्ग

'ख' वर्ग का विजेता – तृतीय आश्रम वर्ग

'ग' वर्ग का विजेता – सप्तम आश्रम वर्ग

समग्र विजेता – तृतीय वर्ग

सर्वश्रेष्ठ एथलीट

'क' वर्ग – चि. अमन खलखो (क्र. – 22093), चि. हृदय उराँव (क्र. – 22062)
'ख' वर्ग – चि. आर्यन्श कच्छप (क्र. – 23049)
'ग' वर्ग – चि. मनीष कुमार (क्र. – 24042)
बालिका वर्ग – आयु. स्नेहा कीर्ति (क्र. – 23105)

63वीं अंतर आश्रमवर्गीय क्रासकंट्री प्रतियोगिता 2025 :

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यालय में दिनांक 06.05.2025 से 09.05.2025 तक अंतर आश्रमवर्गीय क्रासकंट्री प्रतियोगिता का सफल आयोजन श्री विनोद टोप्पो, विद्यालय खेल प्रभारी के निर्देश में आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में सभी वर्ग के छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया एवं प्रतियोगिता को सफल बनाया।

क्रासकंट्री प्रतियोगिता 2025 का अंतिम परिणाम इस प्रकार है –

'क' वर्ग का विजेता – सप्तम आश्रम वर्ग
'ख' वर्ग का विजेता – तृतीय आश्रम वर्ग
'ग' वर्ग का विजेता – प्रथम आश्रम वर्ग
'घ' वर्ग का विजेता – तृतीय आश्रम वर्ग
समग्र विजेता – तृतीय आश्रम वर्ग

सर्वश्रेष्ठ एथलीट

'क' वर्ग – चि. बिरजु हेमब्रोम (क्र. – 22058)
'ख' वर्ग – चि. आकाश कुमार (क्र. – 23022)
'ग' वर्ग – चि. अनिल मुर्मू (क्र. – 24095)
'घ' वर्ग – चि. निर्मल सोरेन (क्र. – 23080)

पीटी एवं योग की गतिविधियाँ

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी पूरे जोशों–खरोश के साथ अंतरआश्रमवर्गीय पीटी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का परिणाम निम्नवत् है –

प्रथम स्थान (विजेता) – सप्तम आश्रम वर्ग

द्वितीय स्थान (उपविजेता) – तृतीय आश्रम वर्ग

सर्वश्रेष्ठ पीटी लीडर

प्रथम स्थान – भरत कुमार (सप्तम आश्रमवर्ग)

द्वितीय स्थान – अर्पित कुमार (तृतीय आश्रम वर्ग)

योग

इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के अवसर पर हमारे विद्यालय के सम्मेलन भवन में योग दिवस मनाया गया जिसमें पंचम वर्ष के छात्रों ने नेतृत्व किया एवं कार्यक्रम की बागडोर संभाली। इस उपलक्ष्य पर छात्रों एवं शिक्षकों/शिक्षिकाओं को योग एवं प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया गया एवं उन्हें इससे होने वाली शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक लाभ के बारे में भी जानकारियाँ दी गईं।

दिनांक 25 अगस्त को जवाहर नवोदय विद्यालय, लातेहार में आयोजित छठी लातेहार जिला योगासन प्रतियोगिता में विद्यालय योग दल के छात्रों ने भाग लिया एवं इसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता का परिणाम कुछ इस प्रकार रहा –

स्थान	इवेण्ट	नाम	क्रमांक
प्रथम	Sub Junior boys - Rhythmic Pair	शिवम शर्मा अभिषेक कुमार	24010 24006
प्रथम	Sub Junior boys - Artistic Pair	गौरव कुमार रौशन कुमार	23051 23058

स्थान	इवेण्ट	नाम	क्रमांक
द्वितीय	Junior boys - Rhythmic Pair	शिवम कुमार मंडल सूरज कुमार	22007 22022
द्वितीय	Sub Junior boys - Rhythmic Pair	सत्यम कुमार रंजन राज	24041 24023
तृतीय	Junior boys - Artistic Single	शिवम कुमार मंडल	22007
द्वितीय	Junior boys - Artistic Single	कुमार युवराज	22052
तृतीय	Junior boys - Artistic Pair	कुमार युवराज अभिषेक कुमार	22052 22008
तृतीय	Sub Junior boys - Artistic Single	प्रियांशु दत्ता	23019
तृतीय	Junior boys - Rhythmic Pair	सचित कुमार अमन कुमार	22013 22088
चतुर्थ	Junior boys - Traditional Yogasana	आयुष गोप	23107
पंचम	Sun Junior boys - Traditional Yogasana	प्रियांशु दत्ता	23019

विशेष उपलब्धि

छठी झारखण्ड राज्य योगासन क्रीड़ा प्रतियोगिता 2025

जिला स्तरीय योगासन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के उपरांत योग दल के छात्रों को दो से तीन दिन तक का ही समय मिल पाया था आगामी राज स्तरीय योगासन प्रतियोगिता हेतु। लेकिन फिर भी अपनी कड़ी मेहनत, जज्बे एवं जुनून से उनका प्रदर्शन काफी सराहनीय रहा। जिन छात्रों ने इस प्रतियोगिता के विभिन्न इवेण्ट में प्रथम, द्वितीय या तृतीय स्थान प्राप्त किया, उनकी सूची कुछ इस प्रकार हैं –

शिवम शर्मा (24010) – रजक पदक
अभिषेक शर्मा (24006) – रजत पदक
प्रियांशु दत्ता (23019) – रजत पदक
कुमार युवराज (22052) – कांस्य पदक
शिवम कुमार मंडल (22007) – कांस्य पदक

सूरज कुमार (22022) – 1 रजत पदक, 1 कांस्य पदक

सत्यम कुमार (24041) – कांस्य पदक

रंजन कुमार (24023) – कांस्य पदक

इन छात्रों में से कुमार युवराज (22052) एवं प्रियांशु दत्ता (23019) के श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उनका चयन राष्ट्रीय स्तर के योगासन प्रतियोगिता हेतु हुआ।

कुमार युवराज ने 28 से 30 सितंबर तक आंध्रप्रदेश में आयोजित राष्ट्र स्तरीय में योगासन प्रतियोगिता में भाग लिया एवं नौवाँ (9वाँ) स्थान प्राप्त किया। वहीं प्रियांशु दत्ता 30 दिसंबर से महाराष्ट्र में राष्ट्रीय योगासन प्रतियोगिता में भाग लेने जा रहे हैं।

IX^TH EAST ZONE SHOOTING CHAMPIONSHIP (Rifle/Pistol) EVENTS, 2025

Shreeja Singh (DS) (Roll No.-24102) participated in under 14 Air Rifle Shooting Championship, organised at Nalanda in Patna on 15/09/2025. It's an honour for our school that she qualified for Pre-National, Shooting Championship.

एन.सी.सी. की गतिविधियाँ

आर्मी विंग

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ग्रुप कमांडर श्री रवीश कुमार के निर्देशन में इस वर्ष भी छात्रों को एटीसी कैंप ले जाया गया जिसमें कुल 25 छात्रों को भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। इस कैंप में होने वाले विविध गतिविधियों में छात्रों ने भाग लिया एवं कुल 17 मेडल प्राप्त किया जिसमें 6 स्वर्ण एवं 11 रजत मेडल थे। इसके अलावे छात्रों ने उत्कृष्ट अनुशासन प्रदर्शित किया जिससे उन्हें सर्वश्रेष्ट अनुशासित ग्रुप पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

एयर विंग

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दिनांक 28/08/2025 से 06/09/2025 तक विंग कमांडर डॉ० अभिषेक मिश्र के निर्देशन में एयर विंग के कुल 25 छात्रों को सी०ए०टी०सी० कैंप ले जाया गया जिसमें सभी कार्यक्रमों में इनका प्रदर्शन सराहनीय रहा।

नेवल विंग

• नेवल विंग संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर ATC कैंप राँची में दिनांक 17/12/2025 से 26/12/2025 तक आयोजित हुआ। श्री बसंत तिर्की जी के कुशल निर्देशन में हमारे विद्यालय के 40 कैडेटों ने इसमें भाग लिया एवं इसमें छात्रों ने ड्रिल, फायरिंग, बोटिंग आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

जिसमें उन्हें चिड़ियाघर राँची का भी भ्रमण कराया गया एवं कैंप में आयोजित खेल प्रतियोगिताओं में

हमारे छात्र TUG OF WAR और FOOTBALL में विजेता रहे एवं VOLLEY BALL में उपविजेता रहे। जिसमें ग्रुप का नेतृत्व चि० अनिकेत कुमार ने किया एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी हमारे विद्यालय के छात्रों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

• इस वर्ष दिनांक 26/06/2025 को जमशेदपुर (N.I.T.) में आयोजित PRE IGGBG कैंप (PRE Inter Group Governor Banner Competition) में विद्यालय के चतुर्थ वर्ष के छात्र चि० गौतम कुमार, आश्रम : – कपिल का चयन हुआ जिसमें उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु उन्हें अगले चरण IGGBC (Inter group Governor Banner Competition) के लिए चयनित किया गया।

• **प्रवीण किशोर, क्रमांक : – 23027, आश्रम :** – भाभा ने RCTC (Rock Climbing and Training Camp.) 2025 जो पिथौड़ागढ़ उत्तराखण्ड में 6 अक्टूबर से 17 अक्टूबर तक आयोजित थी, (जो कि राष्ट्रीय स्तरीय कैंप है) उसमें उन्हें JD (Junior Division) में Best Cadet के खिताब से सम्मानित किया गया।

दिवस, जयंतियाँ और त्यौहार

शिक्षक दिवस – 5 सितंबर 2025 को विद्यालय में डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की जयंती को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर छात्रों ने शिक्षकों के प्रति प्रेम एवं उद्‌गार व्यक्त किये तथा राधाकृष्णन जी के व्यक्तित्व पर भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम में प्राचार्य ने समस्त शिक्षकों एवं प्रशिक्षकों को सम्मानित किया तथा हमारे समाज में शिक्षकों के महत्व पर प्रकाश डाला।

गाँधी एवं शास्त्री जयंती – 2 अक्टूबर 2025 को विद्यालय में गाँधी एवं शास्त्री जयंती मनायी गयी। हमारे देश के राष्ट्रपिता मोहनदास कमरचंद गाँधी एवं द्वितीय प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को इस दिन याद करते हुए उनके व्यक्तित्व एवं विचारों पर प्रकाश डाला गया। इस उपलक्ष्य पर छात्रों ने परंपरानुसार अपने आश्रमों एवं उसके आस–पास के परिसर की विशेष सफाई आश्रमाध्यक्षों के कुशल निर्देश में की।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर जयंती – 14 अप्रैल 2024 को भारतीय संविधान के जनक डॉ० भीमराव अम्बेदकर जी की जयंती मनाई गयी। संगीत विभाग के निकट उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण के पाश्चात् उनके जीवन–संघर्षों एवं व्यक्तित्व पर छात्रों एवं शिक्षकों के द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किये गए।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जयंती – 3 दिसंबर 2024 को देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर प्राचार्य, शिक्षकों एवं छात्र प्रभारी के द्वारा उच्च व्यक्तित्व और विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। उसके पश्चात् उनके जीवन पर छात्रों ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये।

कर्मा और सरहुल – प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री विनोद टोप्पो के निर्देशन में छात्रों के द्वारा कर्मा और सरहुल का पर्व जो हमारी प्रकृति को समर्पित है, का कार्यक्रम बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं के द्वारा मनमोहक गीत एवं नृत्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी श्रीमान् जी तथा माताजी ने छात्रों के साथ मिलकर नृत्य किया।

सरस्वती पूजा – प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी बसंत पंचमी के दिन सभी छात्रों के साथ पूरे विद्यालय परिवार ने साथ मिलकर निर्माणशाला में माँ शारदे का पूजन किया। सभी छात्रों ने वीणावादिनी से ज्ञान और सद्‌बुद्धि की कामना की जिससे वे सत्य और ज्ञान के मार्ग पर चल सके। इसी उपलक्ष्य में अंतर आश्रमवर्गीय लोकगीत प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें द्वितीय आश्रमवर्ग ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

विद्यालय में गतिविधियों के रूप में सांस्कृतिक वातावरण को अक्षुण्ण बनाने के लिए सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रश्रय दिया जाता है। सांस्कृतिक गतिविधियाँ छात्रों को अपनी प्रतिभा शैक्षिक स्तर के साथ–साथ नाटक, गायन, वादन इत्यादि कौशल को निखारने का अवसर प्रदान करता है, छात्रों की अभिनय प्रतिभा के विविध रूपात्मक दृष्टिकोण को परिलक्षित करते हुए अंतर–आश्रम वर्गीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता एवं Interest English Drama Competition - 2025 का आयोजित किया गया। इससे छात्रों का अभिनय कौशल उभरता है और साथ ही मंच पर अभिनय करने से उनमें आत्मविश्वास का प्रस्फुटन होता है। उनमें संवेदनाओं को जानने एवं समझने की शक्ति विकसित होती है। इस वर्ष सभी आश्रमवर्गों द्वारा अपेक्षाकृत स्तरीय नाटकों का मंचन किया गया। यह प्रतियोगिता अप्रैल–मई माह एवं सितंबर–अक्टूबर माह में क्रमशः आयोजित की गई थी। कड़ी स्पर्धा के बाद अंतर आश्रमवर्गीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता में सप्तम आश्रमवर्ग ने 'महाकवि का महाप्रयाण' नाटक का उत्कृष्ट मंच कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

वहीं सर्वश्रेष्ठ उद्घोषक का खिताब द्वितीय आश्रमवर्ग के शिवम कुमार मंडल (22007) एवं देवांशु पाण्डेय (22082) को समेकित रूप से मिला एवं सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का खिताब भी सत्य प्रकाश (तृतीय आश्रमवर्ग) ने समेकित रूप से जीता।

वहीं Interest English Drama Competition में पष्ठ आश्रमवर्ग ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

यदि व्यक्तिगत प्रस्तुति की बात की जाए तो पष्ठ आश्रमवर्ग के ही सत्यम कुमार (24041) एवं श्रीकांत भगत (23082) ने क्रमशः सर्वश्रेष्ठ अभिनेता एवं सर्वश्रेष्ठ उद्घोषक का खिताब प्राप्त किया।

कजाकिस्तान तुमार ग्रुप का आगमन

विश्व प्रसिद्ध कजाकिस्तान नृत्य समूह के 12 महिला सदस्यीय नृत्य दल का आगमन 1 अक्टूबर 2025 को हमारे विद्यालय प्रांगण में हुआ। गाँधी एवं शास्त्री जयंती के साथ–साथ 2 अक्टूबर की स्वर्णिम संध्या को हमें उनकी स्वर्णिम एवं अत्यंत मनोमुग्धकारी पारंपरिक नृत्य कला एवं उनकी संस्कृति, अद्‌भुत पहनावे को देखने, जानने एवं समझने का सौभाग्यपूर्ण अवसर प्राप्त हुआ।

झारखंड सरकार हमारे द्वार

शिक्षा मंत्री, झारखण्ड सरकार का आगमन

दिनांक 14 जून 2025 को हमारे विद्यालय के प्रांगण में झारखंड के शिक्षा मंत्री श्री रामदास सोरेन का सुखद आगमन हुआ। इस उपलक्ष्य पर विद्यालय प्रेक्षागृह में आधुनिक शिक्षा एवं शिक्षक विषय पर एकदिवसीय परिचर्चा का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय मंत्री महोदय ने विद्यालय के शिक्षकों एवं प्राचार्य के साथ महत्वपूर्ण वार्ता की।

राज्यपाल, झारखण्ड सरकार का आगमन

दिनांक 23 जून 2025 को विद्यालय प्रांगण में माननीय राज्यपाल महोदय झारखण्ड सरकार श्री रमेश बैस का आगमन। उन्होंने शिक्षकों एवं प्राचार्य के साथ संगोष्ठी की तथा विद्यालय की समस्याओं के निराकरण के सुझाव एवं आश्वासन दिए।

बधाई संदेश

इस वर्ष श्री अभिषेक मिश्र दिनांक 08.09.2025 से 4.10.2025 तक एयरफोर्स स्टेशन तांबरस में रिफ्रेशर कोर्स समाप्त करने के उपरांत सेकेण्ड अफसर से 'फर्स्ट अफसर' बन गए हैं।

इसके साथ ही इस वर्ष दिनांक 03.03.2025 को विद्यालय के ही एक पूर्ववर्ती छात्र डॉ० दीपक कुमार माँझी, विद्यालय में चिकित्सा पदाधिकारी के तौर पर

प्रतिनियुक्त हुए हैं। विद्यालय इसके लिए उन्हें बधाई संप्रेषित करता है।

साथ ही साथ इस वर्ष श्री केशव कुणाल शर्मा एवं श्रीमती स्मृति सिंह क्रमशः अशोक एवं तक्षशिला आश्रम के नए आश्रमध्यक्ष/आश्रमध्यक्षा के तौर पर नियुक्त एवं पदासीन हुए हैं।

विद्यालय परिवार इन सभी लोगों के प्रति कृतज्ञ हैं एवं उन्हें बधाई संप्रेषित करते हुए उनके भावी जीवन की मंगल कामना करता हैं।

सेवानिवृत्ति

इस वर्ष हमारे विद्यालय के शिक्षानुरागी शिक्षक, श्री विधुशेखर देव (अध्यक्ष, भूगोल विभाग), श्री सतीश झा (सदस्य, भौतिकी विभाग) एवं श्री दिवाकर मिश्र (सदस्य, संगीत विभाग) क्रमशः 31 दिसंबर 2024, 31 जनवरी 2025 एवं 31 मार्च 2025 को अपनी लंबी सेवा इस विद्यालय को देने के पश्चात् सेवानिवृत्त हुए।

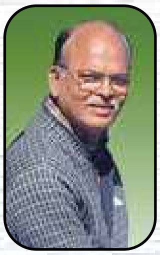

इस वर्ष हमारे विद्यालय के तीन कर्मनिष्ठ कर्मी भी सेवानिवृत्त हुए, जिनकी विवरणी निम्नवत् है –

1. श्रीमती आशरेन डुंगडुंग, पुस्तकालय कर्मी – 31 अगस्त 2025
2. श्री महेश कुमार, चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी – 31 अगस्त 2025
3. श्री मोहन नायक, चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी – 30 जून 2025

विद्यालय परिवार, विद्यालय के प्रति समर्पित एवं कर्मनिष्ठ इन सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करता है एवं भावी जीवन की मंगल कामना करता है।

शोक संदेश

अपार दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि विद्यालय परिवार में दो सदस्यों को इस वर्ष खो दिया :

1) श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह, जो रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत थे, का निधन 3 अक्टूबर 2025 को हो गया। इन्होंने अपने जीवनकाल के कई अमूल्य वर्ष इस विद्यालय की निःस्वार्थ एवं सत्यनिष्ठ सेवा में अर्पित कर दिए।

2) कुमार नितिश (22055), जो कि शान्ति आश्रम का अंत्येवासी छात्र था। इनकी पढ़ाई के साथ–साथ खेलकूद में भी गहन रूची थी। इन्होंने वर्ष 2018 तथा 2019 में Inter State Swimming Championship जीत कर विद्यालय का नाम रोशन किया।

इनके जाने से विद्यालय परिवार को अपूर्णीय क्षति हुई है। इस दुःख की घड़ी में समस्त विद्यालय परिवार शोकाकुल परिवारजनों के साथ खड़ा है। हम सभी हृदय की असीम गहराईयों से दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थनारत हैं।

अब आज्ञा दें, मिलते हैं अगले अंक में...

FROM VISITORS'S INK

I am delighted to visit Netarhat Residential School. The standard of the library, Physics and Chemistry labs are highly commendable. I pray to god for the bright future of students. May God give all staff and students good health.

All the Best! God bless you all!

SHRI SANTOSH KUMAR GANGWAR
(Governor of Jharkhand)

Reminiscence of the past, lead us to this great institutes. The factory of Bureaucrats, Judges, Doctors, Police officers etc... itself has a unique distinction in the world. What truly amazed us was the Guru Shishya Parampara which is followed here. I truly wish the institute all the success.

Warm Regards!

JUSTICE TARLOK SINGH CHAUHAN
(Chief Justice High Court, Ranchi)

It is an honour for me to visit the pride of Jharkhand - The Netarhat School The infrastructure campus, landscaping, class-room and Asharm... all are exceptional. I hope this school will provide great, young and brilliant mind in future. I wish all the best to all teachers, students and staffs of this school.

UMA SHANKAR SINGH
(Secretary, School Education and Literacy, GOJ)

The visit to this legendary school has been heavily educative. We all have been honoured. Wishing the school the very best for the future.

COLONEL RAHUL SHARMA
(Director NIFT, Patna)

It as a pleasure visiting school for commemorating Golden Jubilee of our admission to school. We are grateful to the school for the solid foundation that it has given to all of us and indeed every corner and every practical activity reminded us of our days in the school. We all are part of the 'Kul' of Netarhat School and nothing would give us more happiness than to see it's students achievements - I wish entire school family's well.

NAGENDRA NATH SINHA
(1974-81 batch)
(Ex - Secretary, Minister of Steel)

FREDRICK GORDON PEARCE
(THE FOUNDING FATHER OF NETARHAT VIDYALAYA)
(24.03.1892 - 13.08.1961)

GLIMPSES OF OUR STUDENT'S *Art*

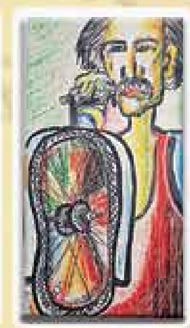

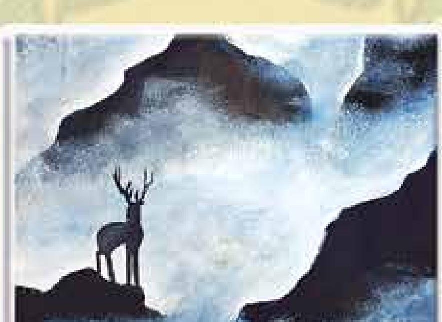

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

श्रीमद्भगवद्गीता

(द्वितीय अध्याय, श्लोक 47)

युद्ध नही जिनके जीवन में
वे भी बहुत अभागे होंगे
या तो प्रण को तोड़ा होगा
या फिर रण से भागे होंगे
दीपक का कुछ अर्थ नही है
जब तक तम से नही लड़ेगा
दिनकर नही प्रभा बाँटेगा
जब तक स्वयं नही धधकेगा

अर्जुन सिसोदिया

Where the mind is without fear and the head is held high, Where knowledge is free... into that heaven of freedom, my father, let my country awake.

Rabindranath Tagore